Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.org

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 30 • 27 अप्रैल - 03 मई 2026 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 25-04-2026 • पेज 36 • ₹ 10 रुपये

भिक्षुवाणी

विण अंकुस जिम हाथी चाले, घोड़ो विगर लगाम।
एहवी चाल कुगुरु री जांणों, कहिवा नें साधु नांम।।

अंकुश के बिना हाथी चल रहा है और लगाम के बिना घोड़ा चल रहा है। कुगुरु की चाल भी ऐसी ही है, वह साधु का नाम धराता है किन्तु संयम के बिना चल रहा है।

– आचार्यश्री भिक्षु

एकादशम् अधिशास्ता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जन्मोत्सव, पट्टोत्सव एवं दीक्षा दिवस के पावन अवसर पर

सादर अभिवंदना

'मोहन' के मन में जब वैराग्य का,
दिव्य और पावन अनुराग जगा,
गुरु 'कालू' का ध्यान किया,
तब संयम का अनुपम राग जगा।
वही दीक्षा का शुभ संकल्प आज,
तेरापंथ के युवा दिवस की शान बना,
महासूर्य महाश्रमण का पावन जीवन,
जन-जन का गौरव गान बना।।'

श्रद्धाप्रणत : अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 अप्रैल - 03 मई 2026

ऋषभदेव थे धर्म और राजनीति के युगपुरुष,तप से होती है कर्मों की परम विशुद्धि : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं में अक्षय तृतीया महोत्सव का महाकुंभ; आचार्यश्री के पात्र में इक्षुरस दान कर 450 तपस्वियों ने किया पारणा

लाडनूं।
20 अप्रैल, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में जैन विश्व भारती के परिसर में 'अक्षय तृतीया महोत्सव' अत्यंत गरिमापूर्ण एवं भव्य तरीके से संपन्न हुआ। इस ऐतिहासिक अवसर पर लाडनूं का पूरा परिसर तप और त्याग की ऊर्जा से सराबोर नजर आया।

> भगवान ऋषभ का तप निर्लक्ष्य और सहज था, जिससे हमें प्रेरणा लेनी चाहिए
> -आचार्यश्री महाश्रमण

मोक्ष मार्ग में तप का महत्व :

विशाल जनसमूह को अमृत देशना प्रदान करते हुए महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया, 'ज्ञान से जीव भावों को जानता है, दर्शन से श्रद्धा करता है और चारित्र से निग्रह करता है, लेकिन तप वह अग्नि है जिससे आत्मा की परम विशुद्धि होती है।' आचार्यश्री ने प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का स्मरण करते हुए फरमाया कि वे केवल धर्म के ही नहीं, बल्कि राजनीति के भी महापुरुष थे। उन्होंने दीक्षा से पूर्व समाज को जीवन जीने की कला और शिक्षण-प्रशिक्षण प्रदान कर लौकिक कर्तव्यों का आदर्श निर्वहन किया।

ऐतिहासिक पारणा और संकल्प :

प्रवचन के उपरांत आचार्यश्री ने वर्षीतप करने वाले श्रावक-श्राविकाओं को संकल्प दिलाया और भगवान ऋषभदेव के नाम के मंत्रों का जाप करवाया। इसके पश्चात पारणे का भावपूर्ण दृश्य उपस्थित हुआ, जहाँ लगभग 450 से अधिक साधु-साध्वियों, समणियों और श्रावक-श्राविकाओं ने आचार्यश्री के पात्र में इक्षुरस (गन्ने का रस) दान कर अपने कठिन वर्षीतप का समापन किया। (शेष पेज 34 पर)

तृष्णा का कोई अंत नहीं, संतोष ही शांति का एकमात्र मार्ग : आचार्यश्री महाश्रमण

संयम और संतोष से ही होता है जीवन का उत्थान, उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से दी पावन प्रेरणा

लाडनूं।
21 अप्रैल, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अष्ट गणी संपदा से सुशोभित आचार्य श्री महाश्रमणजी ने चतुर्विध धर्मसंघ को संबोधित करते हुए 'तृष्णा की दुष्पूरता' विषय पर गंभीर आध्यात्मिक बोध प्रदान किया।

उत्तरज्झयणाणि आगम का संदर्भ देते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि मानवीय वृत्तियाँ ही उसके कार्यों की दिशा तय करती हैं। यदि मन में सद्वृत्ति है तो व्यक्ति सत्कर्म करता है, किंतु दुर्वृत्तियों के वशीभूत होकर वह हिंसा और चोरी जैसे अपराधों के दलदल में फंस जाता है।

लोभः अंत तक पीछा न छोड़ने वाली बुराई :

प्रवचन के दौरान आचार्यश्री ने सूक्ष्म दार्शनिक तथ्यों को स्पष्ट करते हुए फरमाया कि राग और द्वेष ही समस्त दुर्वृत्तियों के मूल हैं। क्रोध, मान और माया जैसे विकार नौवें गुणस्थान तक शांत हो जाते हैं, लेकिन 'लोभ' एक ऐसी दुर्वृत्ति है जो दसवें गुणस्थान तक आत्मा का पीछा नहीं छोड़ती। उन्होंने सचेत किया कि तृष्णा की अग्नि को संसार की संपूर्ण

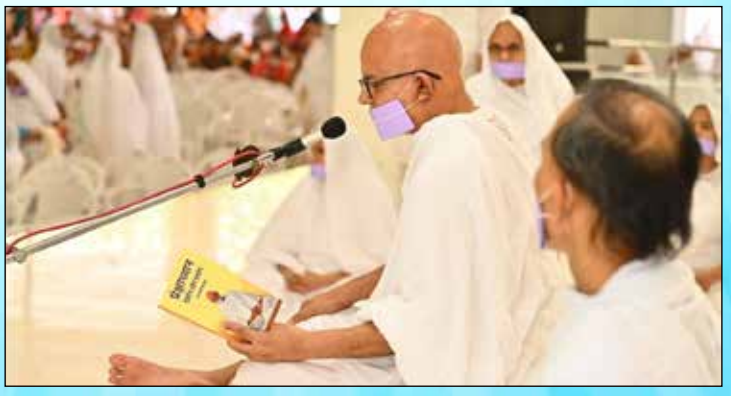

धन-संपदा से भी नहीं बुझाया जा सकता। शास्त्रानुसार आत्मा 'दुष्पूर' है, जिसे केवल संयम से ही भरा जा सकता है।

संतोष का महत्व और गृहस्थ धर्मः

आचार्य प्रवर ने फरमाया, 'ज्यों-ज्यों लाभ होता है, त्यों-त्यों लोभ बढ़ता है।' इस चक्र को केवल संतोष का अवरोध ही तोड़ सकता है। पूज्य प्रवर ने स्पष्ट किया कि- **साधु जीवनः** पूर्ण अपरिग्रह का प्रतीक है, जिसकी महत्ता के आगे समस्त संसार नतमस्तक होता है।

> 'जितना बढ़ता है लाभ, उतना ही गहराता है लोभ'
> -आचार्यश्री महाश्रमण

(शेष पेज 34 पर)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 अप्रैल - 03 मई 2026
हे प्रभो ! यह तेरापंथ

विकारों के बीच भी चित्त को शांत रखना ही असली धैर्य : आचार्यश्री महाश्रमण

'पुनर्जन्म और धीरता' पर विशेष उद्बोधन; ज्ञान के कंठस्थीकरण और अभ्यास पर दिया बल

लाडनूं।
18 अप्रैल, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अधिशास्ता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने जैन धर्म के पुनर्जन्म सिद्धांत पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि वर्तमान जीवन एक पड़ाव है। जब तक मोक्ष की प्राप्ति नहीं होती, आत्मा को आगे का जन्म लेना ही पड़ता है। उन्होंने सचेत किया कि जो लोग धर्म को त्यागकर अधर्म के मार्ग पर चलते हैं, वे दुर्गति को प्राप्त होते हैं, जबकि धीर, वीर और गंभीर पुरुष अपनी आत्मा को ऊंचाइयों तक ले जाते हैं।

धीरता : बुद्धि और अविचलित मन का संगम :

सुधर्मा सभा में चतुर्विध धर्मसंघ को पावन पाथेय प्रदान करते हुए आचार्यश्री ने 'धीर' शब्द की तात्विक व्याख्या की। पूज्य प्रवर ने फरमाया : 'धीर वह है जो न केवल बुद्धिमान हो, बल्कि प्रतिकूल परिस्थितियों और परीषहों (कष्टों) में भी अविचलित रहे। असली धीर पुरुष वे हैं जिनके समक्ष विकार के निमित्त उपस्थित होने पर भी चित्त विकृत नहीं होता और वे शांति बनाए रखते हैं।'

> अधर्म का मार्ग नरक की ओर, धीरता का पथ मोक्ष की ओर
> -आचार्यश्री महाश्रमण

स्मृति और ज्ञान का दोहरान आवश्यक :

साधु-साध्वियों को संबोधित करते हुए आचार्यप्रवर ने ज्ञानार्जन के सूत्रों पर चर्चा की। आचार्य श्री ने फरमाया कि बुद्धि एक उपलब्धि है, लेकिन उसका सही उपयोग समस्याओं के समाधान में होना चाहिए। उन्होंने युवा पीढ़ी को प्रेरित किया कि लगन और पुरुषार्थ से ज्ञान को कंठस्थ करें। साथ ही यह निर्देश दिया कि कंठस्थ किया गया ज्ञान स्मृति में बना रहे, इसके लिए समय-समय पर उसका दोहरान (रिवीजन) करना अत्यंत आवश्यक है।

शिक्षण-प्रशिक्षण के बाद होगी परीक्षा :

'योगक्षेम वर्ष' के अंतर्गत चल रहे शिक्षण कार्यक्रमों पर चर्चा करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि केवल शिक्षण पर्याप्त नहीं है, उसकी समीक्षा और परीक्षा भी अनिवार्य है। युगप्रधान ने आगामी परीक्षाओं के संदर्भ में योजना और व्यवस्था की जानकारी चारित्रात्माओं को प्रदान की। प्

रवचन के अंतिम चरण में पूज्य प्रवर ने उपस्थित साधु-साध्वियों की आध्यात्मिक जिज्ञासाओं का समाधान भी किया।

साधु के पग-पग पर बसती है अहिंसा

अहिंसा पर आधारित है साधु की चर्या, पग-पग पर हो यत्नाचार : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
19 अप्रैल, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए साधु जीवन में 'समिति' और 'अहिंसा' के सूक्ष्म अंतर्संबंधों पर प्रकाश डाला। आचार्यश्री ने फरमाया कि साधु चर्या के विधि-विधानों का मूल आधार अहिंसा ही है।

कौन है 'समित' ?:

आगमों का हवाला देते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि 'समित' वह है जो पांच समितियों से युक्त हो। उन्होंने विस्तार से समझाते हुए कहा, 'आगम के अनुसार जो प्राणों का अतिपात नहीं करता, जीव हिंसा से बचता है और अपनी प्रवृत्तियों को सम्यक् (सही) रखता है, वही समित कहलाता है। ऐसे समित साधु की आत्मा से पापों का क्षरण होता है।

पांच समितियां और यत्नाचार:

आचार्यश्री ने साधु जीवन की पांच समितियों की व्याख्या करते हुए अहिंसा के दर्शन कराए:

ईर्या समिति : देख-देखकर चलना और भाव क्रिया (चित्त की एकाग्रता) के साथ गमन करना।

भाषा समिति : कटु और दोषपूर्ण भाषा का त्याग। तेरापंथ मर्यादा के अनुसार, साधु-साध्वियों को खुले मुंह न बोलने और आहार के समय पूर्ण मौन रखने का निर्देश दिया गया है।

एषणा समिति : साधु अपने निमित्त बना भोजन ग्रहण नहीं करते, यह भी अहिंसा का ही रूप है।

प्रमार्जन व उत्सर्ग : बैठने से पूर्व स्थान की शुद्धि और अपशिष्ट के विसर्जन में भी जीवों की रक्षा का पूरा ध्यान रखा जाता है।

सावधानी और आलोचना:

१. तीन करण और तीन योग : साधु मन, वचन और काय (योग) से तथा करना, कराना और अनुमोदन (करण) से हिंसा का त्याग करता है।

> आत्म-कल्याण का मार्ग है 'समित' भाव
> -आचार्यश्री महाश्रमण

२.जागरूकता : अंधेरे में चलना हो या बैठने की क्रिया हो, हर जगह प्रमार्जन (सफाई) आवश्यक है।

३. प्रायश्चित : यदि भूलवश कोई क्रिया मर्यादा के विरुद्ध हो जाए, तो उसकी 'आलोचना' (स्वीकारोक्ति और शुद्धि) करना अनिवार्य है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 अप्रैल - 03 मई 2026

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

जन-जन के प्रेरणा स्रोत हैं आचार्य श्री महाश्रमणजी

● मुनि कमल कुमार ●

महापुरुष जन्म से नहीं शुद्ध जीवन से बनते हैं, महापुरुष अवस्था से नहीं अर्हता से बनते हैं, महापुरुष वस्त्रों से नहीं पवित्र विचारों से बनते हैं, महापुरुष चेहरे से नहीं चरित्र से बनते हैं। इसे हमें तटस्थ होकर स्वीकारना होगा। आचार्य श्री महाश्रमण जी का जीवन सद्गुणों का भंडार है। साधुत्व स्वीकारते ही आप सतत अप्रमत्तता की साधना में निरंतर गतिमान बनते गए। अध्ययन, स्वाध्याय, सेवा की त्रिवेणी में गहरे गोते लगाते रहे। शैशव अवस्था में यदि व्यक्ति का दिमाग अगर साधना, अध्ययन में लग जाये तो वह एक दिन जन-जन का प्रेरणा स्रोत बन सकता है। आचार्य महाश्रमण जी के जीवन से यह प्रेरणा ले सकते हैं। मात्र बारह वर्ष की अवस्था में दीक्षा लेकर तत्त्वज्ञान, आगम ज्ञान के साथ-साथ अन्य अनेक ग्रंथों को कंठस्थ कर उसकी स्वाध्याय में रत रहे। शैशव वय की चपलता आपके इर्द-गिर्द भी नहीं फटकती। साधना के प्रति आपकी गहरी निष्ठा थी इसी का सुपरिणाम है कि आज जिन संतों के साथ दिल्ली चातुर्मास हेतु पधारे उन्होंने जब संघ मुख्य की बात कही तब आपने संघ में रहने का ही स्वनिर्णय किया। उसी का सुफल है कि हमें आज इस पाँचवें आरे में भी चौथे आरे के सिद्ध पुरुष का कुशल नेतृत्व प्राप्त हो रहा है। आपकी अंतरंग साधना को देख कर जैन-अजैन सभी नतमस्तक हैं। वर्तमान युग में इतना संयम और इतना पुरुषार्थ देखने को मिलना भी दुर्लभ है। आचार्य श्री महाश्रमण जी तेरापंथ धर्म संघ में प्रथम आचार्य हैं जिन्होंने देश-विदेश की पैदल यात्राएं की। आचार्य महाश्रमण जी के शासनकाल में कीर्तिमानों का मानो अंबार सा लग गया है। जैसे एक साथ 43 दीक्षाएं, एक दिन में 48 कि.मि. का विहार, तपस्या की इक्कीस रंगी एक चातुर्मास में सैकड़ों मासखमण, ग्यारह सौ से अधिक वर्षीतप के पारणे, नियमित प्रवचन में हजारों की उपस्थिति - इस प्रकार अन्य अनेक कीर्तिमान बने। आपने सभा संस्थाओं के संतों को आध्यात्मिक पर्यवेक्षक बनाकर हर सभा संस्थाओं में एक आध्यात्मिक वातावरण बना दिया जिससे समन्वय व सौहार्द का वातावरण निर्मित हुआ है। सघन साधना शिविर, सुमंगल साधक-साधिका उपासक-उपासिकाओं के कारण समाज में साधना का वातावरण बना है।

उपासक-उपासिकाओं के योग से कितने क्षेत्रों की सार-संभाल हो रही है जिससे लोगों को साधना के साथ संघीय संस्कार मिल सके। पूज्य प्रवर की अनुशासन शैली अपने आप में अनुपम है। आपके द्वारा किया जा रहा अथक परिश्रम जन-जन के लिए एक प्रेरणा है। आपके 62वें जन्मोत्सव पर यह मंगल कामना करते हैं कि आप दीर्घायु और निरामय रहें जिससे युगों-युगों तक हमें आपका महनीय मार्ग दर्शन मिलता रहे और हम भी साधना के क्षेत्र में गतिमान बने रहें।

समृद्ध धर्मगुरु, आचार्य श्री महाश्रमण

● मुनि कल्प कुमार ●

धर्म अमृत है। परमवंदनीय आचार्य श्री महाश्रमण धर्मपुरुष हैं और अमृत पुरुष हैं, दयालु हैं और कृपालु हैं, आश्वस्त हैं और विश्वस्त हैं, ज्ञान मूर्ति हैं और चारित्र मूर्ति हैं। एक व्यक्ति के हाथ में लड्डू था और वह उसे देख रहा था। वह सोचने लगा कि मैं इसे किधर से खाऊँ कि मुझे अधिक मीठा लगेगा। दूसरे व्यक्ति ने मुस्कुरा कर कहा - तुम इसे कहीं से भी खाओ, इसका स्वाद मीठा ही आयेगा।

इसी तरह हम महामानव आचार्य श्री महाश्रमणजी के जीवन को देखें तो उनके व्यक्तित्व का हर पहलू आनन्द से सराबोर करने वाला मिलेगा। उनके जीवन से प्रेरणा, शान्ति और प्रकाश ही मिलता है। एक व्यक्ति गंगा के किनारे गया और बोला - गंगा माता! तेरा पानी खारा है या मीठा है? गंगा बोली - जरा चखकर के देखलो। महापुरुषों का जीवन गंगा के नीर सदृश पावन होता है। आचार्य श्री महाश्रमणजी एक महान आचार्य और अनुशास्ता हैं। चाहे हम उनके आचार को देखें, चाहे हम उनके अनुशासन को देखें और चाहे हम उनकी विचार-वीथी को देखें, तो हमें उनके जीवन-दर्शन में सादगी, सकारात्मकता और सहिष्णुता का ही साक्षात्कार होता है। वे जीवन-कला के मर्मज्ञ हैं। उनके पास अध्यात्म की संजीवनी है।

मेरी संसारपक्षीय माता श्रीमती रेशमा बेन कहती हैं - 'कल्प! तुम जब मात्र चौबीस घंटे के थे तब तुम्हें पूज्यप्रवर महाश्रमणजी के दर्शन करवाये थे।' उन्होंने मुझ पर दृष्टिपात किया, वात्सल्य की वर्षा की और देखकर आश्चर्य का अनुभव किया। पता नहीं, उन्होंने मुझ पर ऐसा क्या दृष्टिदान किया कि स्वल्प प्रेरणा से ही मेरी आत्मा जागृत हो गयी और मैं (मुनि कल्प कुमार) भिक्षु-शासन का एक सफल सिपाही बन गया।

मुनि को द्विज (द्विजन्मा) कहा जाता है। दीक्षा सचमुच पुनर्जन्म है और कल्याणकारी दिवस है। इसके प्रति आह्लाद का भाव होना स्वाभाविक है। परमाराध्य गुरुदेव श्री के दीक्षा-दिवस पर मैं परमानन्द की अनुभूति कर रहा हूँ और शतायु होने की मंगल कामना करता हूँ। मेरा प्रथम चतुर्मास श्रद्धेय मुनि श्री मदन कुमारजी के साथ सूरत में हो रहा है, इसे मैं गुरु-कृपा का सुफल मानता हूँ।

भारतीय ऋषि परम्परा के गौरव : आचार्यश्री महाश्रमण

● साध्वी योगक्षेम प्रभा ●

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के ग्यारहवें अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण भारतीय ऋषि परम्परा के गौरव पुरुष है। शांत सौम्य मुखमुद्रा, प्रसन्न नयन करुणाभरा हृदय, और आशीर्वाद बरसाता हस्त युगल हर दर्शनार्थी को प्रथम दर्शन में ही मंत्रमुग्ध कर देता है। संतता के साकार प्रतिमान आचार्य महाश्रमण समता नम्रता और तपस्विता की त्रिवेणी हैं। उनकी वाणी में माधुर्य, सौंदर्य और गांभीर्य है। सत्य की उपासना उनका आत्मधर्म है। एक-एक शब्द को तोलकर बोलते हुए वे भाषा के दोषों का दूर से भी स्वर्श नहीं करते ।

त्रिआयामी जीवनशैली

आचार्य श्री महाश्रमण की गुण-स्तुति करते हुए महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने लिखा है-

स्वात्मोपलब्धिरिति लक्ष्यमिदं महीयः,
लक्ष्यं द्वितीयमनिशं खलु संघसेवा।
श्रीजैन शासन विकास विवर्धना च,
पुतः प्रभास्वर- महाश्रमणः पुनातु ॥

आचार्य श्री महाश्रमण के जीवन का प्रथम लक्ष्य है-आत्मोपलब्धि इसके लिए वे व्यक्तिगत साधना को प्रथम स्थान देते हैं। खाद्य- संयम, विश्य संयम स्वाध्याय, जप, ध्यान आदि उनकी साधना के अभिन्न अंग हैं। उनके जीवन का दूसरा लक्ष्य है-धर्मसंघ की सेवा। वे एक महान अनुशासित धर्मसंघ के नियंता है। उसके विकास हेतु वे अहर्निश सजग हैं। साधु-साध्वियों के निर्माण हेतु वे सतत आयासरत हैं।' योगक्षेम वर्ष निर्मान का महायज्ञ है, जहां करीब 500 से अधिक साधु-साध्वियां एवं समणी वर्ग विविध रूपों में समिधा अर्थित कर रहे हैं। उनकी जीवनशैली का तीसरा आयाम है-जैन शासन के विकास हेतु चिंतन-मंथन करते रहना । उसके संवधनि हेतु अनेक- विध उपक्रमों को आकार देना।

महान परिव्राजक

आज का युग द्रुतगामी साधनों का युग है। आदमी चांद पर जाने का सपना संजो रहा है। ऐसी स्थिति में जैन मुनि को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचने में बहुत समय लगता है। जहां सुबह चेन्नई से चलकर आज का आदमी मुंबई में करता है तो लेच दुबई में लंदन जाकर करता है, वहां जैन साधु हजार- दो हजार कि.मी. के लिए महिधनों-महिनों चलते रहता है। किंतु परिव्रजन अनुभूतियों का संग्रहालय है, जनकल्याण का देवालय है। भगवान महावीर, भगवान बुई, शंकराचार्य, भगवान स्वामीनारायण आदि ने परिव्रजन से ही अध्यात्म की लौ जलाई थी। आचार्य श्री महाप्रज्ञ के शब्दों में जो प्राणवान होता है, वही परिव्रजन करता है। आचार्य श्री महाश्रमणजी ने अपने 52 वर्षीय मुनिजीवन में 60000km से अधिक पदयात्रा करके भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया है। मानवकल्यान की राहें प्रशस्त की है।

जन्मोत्सव एवं पाटोत्सव

आचार्य महाश्रमण का जन्म राजस्थान के सरदारशहर (चुरू जिल्ले) में वैशाख शुक्ला नवमी को हुआ। साधिक 12 वर्ष की वथ में नवमाधिशास्ता आचार्य तुलसी की अनुज्ञा से मुनिश्री सुमेरमलजी के मुखकमल से वैशाख शुक्ला चतुर्दशी को वे दीक्षित हुए। जन्मभूमि ही दीक्षाभूमि बन गई। आयु के 36वें वसंत में दशम दिवाकर आचार्य श्री महाक्षस जी ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। विसं. २०६६ वैशाख कृष्णा एकादशी को आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के आकस्मिक आचार्य बन गए। महाप्रयाण के पश्चात वे तेरापंथ के वैशाख शुक्ला दसमी उनके पदाभिषेक का पर्व बन गई । भगवान महावीर के कैवल्य कल्याणक के पवित्र दिन पहोत्सव की भी युति हो गई। आचार्य महाश्रमणजी के

65 वें जन्मदिवस एवं 17 वें पदाभिषेक दिवस पर श्रहाभरी वंदना । मन को महकाने वाले महामनस्वी का अभिनंदन। चेतन को चमकाने वाले चेतस्वी का अभिनंदना

जुका है जमीं, जुका है आसमां
तेरे अभिनंदन में,
जहां को जगानेवाले महातपस्वी
का अभिनंदन॥

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

जय ज्योति चरण जय महाश्रमण चरणों में वंदन करते हैं

● मुनि हिमकुमार ●

जय ज्योति चरण जय महाश्रमण चरणों में वंदन करते है।
कल्याण कारी तुम हो प्रभुवर, सब की पीडा को हरते है।।

महाव्रतधारी, धैर्यवान गुरु, जिनशासन की शान हो,
प्रवचन शैली बड़ी निराली, सब गुणों की खान हो.
तेरे आभामण्डल में आ, मंगलमय बन जाते हैं।
जय ज्योति.....

देव तुम्हारा रूप निराला नेमानंदन प्यारे हो ।
महामहिम ज्योतिर्धर भगवन् सब के तारणहारे हो।
अनुशासन वत्सलता से विभु, जीवन बगीया विकसाते हैं
जय ज्योति.....

आचार संपदा, श्रुत संपदा, अप्रतिबद्ध विहारी हो।
स्थितप्रज्ञता तेरी अनुपम, सहज समताधारी हो।
पुण्य पुरुष के राजतिलक पर, अभिनन्दन हम करते हैं।
जय ज्योति.....

तर्ज - चन्दन सा बदन

भंते! भागां स्यूं पायो शासन, दीपै है ओ सिंहासन

● साध्वी चैतन्य यशा ●

भंते! भागां स्यूं पायो शासन, दीपै है ओ सिंहासन,
चरणां में श्रद्धारो उपहार है।
हो भंते! सिंचन दो ये कलियां तैयार हैं।।

भैक्षव गण नंदनवन पायो, भाग है ओ मारो,
महाप्रज्ञ रा पट्टधर दीपो, जिनवर सो है बरतारो।
भावी पीढ़ी ने खूब निखारो, अपने हाथां स्यूं संवारो,
था स्यूं ही गण बगिया गुलजार है।।

नेमा मां की कुक्षी स्यूं अवतार लियो सरदारशहर में,
मंत्री प्रवर स्यूं संयम पायो, जन्मभूमि प्रांगण में।
दुगड़ कुल ने थे दीपायो, रजधानी रो नाम कमायो,
गाथा गावै नर-नार है।।

महाप्रज्ञ री करुणा स्यूं, शासन ने शिखर चढ़ायो,
प्रभु निरामय बनो चिरामय, यात्रा कर सुयश बढ़ायो।
शासन ने खूब दीपावो, शासन को भाग्य सवायो,
चैतन्य को महाश्रमण आधार है।

जन्मोत्सव पट्टोत्सव दीक्षा दिवस आज मनाएं,
शासन के मुकुटमणि को, हम सब आज बधाएं।
गुरुवर पावां सन्निधि रो वर, हुलसावां जन्म-जन्मभर,
अभिवंदन करते शत-शत बार है।।

(लयः संता शासन ओ स्वामीजी रो...)

उजली संयम री किरणां

● साध्वी रतिप्रभा ●

उजली संयम री किरणां, मन मोहनी लागे २
थांरी साधना री लौ, जग में राचै २

महावीर सो रूप थांरो, महावीर सो जीवन।
महावीर सी साधना कर, चमकायो नन्दनवन।
थांरै अन्तर जग रो हो... रूप निरालो लागे २

एक एक तार ज्ञान रो, खोल खोल निहार्यो।
एक एक बिन्दु पर चंचल, मन घोड़े ने वार्यो।
थांरी देशना में हो... वीर सी आवाज गाजे २
थांरी साधना री लौ, जग में राचै २

योगी महायोगी थांरै, चरणां में शीश झुकावै २
देव दानव मानव स्वर्गां में सम्मान बढ़ावै।
भारत माता हो... थांने,
बार-बार थुथकारो (जुहारो) बोले ॥
थांरी साधना री लौ, जग में राचै ॥

इक्कीसवीं सदी में, नवयुग रो निर्माण कर्यो।
अहिंसा यात्रा कर लाखां-लाखां रो, क्लेश हर्यो।
जिनशासन में नाम थांरो, भृगासर (श्रृंगार) लागे २
थांरी साधना री लौ, जग में राचै ॥

लयः मीठै रस स्युं भरियोड़ी

परम समर्थ अर्थ के ज्ञाता, तेरापंथ सम्राट

● साध्वी स्वर्णरेखा ●

परम समर्थ अर्थ के ज्ञाता, तेरापंथ सम्राट,
मुक्त पंख ज्यों मुक्त कल्पना, चिन्तन सत्य विराट॥

तुलसी युग की कृति आप हैं, तरुणाई सौन्दर्य छाप है,
महाप्रज्ञ का दिव्य प्रताप है, मिला पुण्य से ग्यारह का अंक,
शोभित तुमसे पाट ॥ १॥

नैसर्गिक निश्चल तन-मन है, सदा गुलाब ज्यों मनभावन है,
महाशून्य में आत्मरमण है, कैसे ?
तोलूं स्वर्णिम शब्दों का नहीं गुरुवर बाट ॥ २ ॥

जीवन और प्रकृति सुंदर है, गहन गंभीर नाम मन्तर है,
अनुभव से हरपल निडर है, स्निग्ध सौम्य तेजस्वी दर्शन से
रहता है ठाठ ॥ ३ ॥

गजल और गीतों में गाऊं, कविता और कहानी बनाऊं,
महाश्रमण जय ध्यान लगाऊं, तुलसी महाप्रज्ञ ने सब संतों में
लिया है छांट ॥ ४ ॥

देव मिले युग-युग पथ दर्शन चलते चले, बोधि दें, अर्पण

धरती चंदा ज्यों आकर्षण, आत्मविहारी शरण तुम्हारी, चमक
रहा है ललाट ॥ ५ ॥

आज दिशाएं गुनगुनाएं, पुरवैया मतवाली

● साध्वी उज्ज्वलरेखा ●

आज दिशाएं गुनगुनाएं, पुरवैया मतवाली।
नन्दनवन गणमंदिर में, जगमगाती दिवाली।
अक्षत कुमकुम सजाएं, श्रद्धा तिलक लगाएं।
अम्बर अमृत बरसाएं शतशः शीश झुकाएं।
आर्य देव के जन्मोत्सव पर अनहद खुशहाली ॥

लाया उजला प्रभात, दूगड़ कुल का जलजात।
भैक्षव गण गणनाथ, झूमर नेमां अंगजात।
गुरुद्वय ने दे दी अभिनव जग सौगात।
सूरज चाँद सितारों पे हम लिख देंगे ख्यात।
कल्पतरु की शीतल छाया, पाए गौरवशाली ॥

अनुपम ज्ञानाचार, बहती श्रुतता की धार।
खिलती जीवन की बयार, संयम निर्मल निरतिचार।
बैठे उपशम की डाल, रचते समता संसार।
दिव्य देव निहारें, अहिंसा यात्रा सुखकार।
पंच निष्ठाओं से अनुबन्धित, जीवन की हर डाली ॥

अनुकम्पा का ज्वार, दिल में उमड़े अपार।
सब की सुनते पुकार जो भी आता है द्वार।
प्रभु दीनों के नाथ, हर्षित पुलकित नरनार।
जन जन घाले झुथकार, जीओ वर्ष हजार।
तीर्थंकर से गणमाली, हम कितने किस्मतशाली ॥

तर्ज – आओ सुनाओ प्यार की...

तुम क्या हो कैसे मैं जानूँ? इसका कोई राज बता दो

● साध्वी सुषमा कुमारी ●

तुम क्या हो कैसे मैं जानूँ? इसका कोई राज बता दो,
पट्टोत्सव का स्वर्णिम अवसर, हृद-तंत्री के तार बजा दो

सागर की उपमा मैं क्या दूँ? तेरा मन सागर से गहरा
नाप लिया सागर मानव ने, तेरे मन पर तेरा पहरा
कैसे थाह लगे असीम की, मेरी उलझन को सुलझा दो

आभामंडल में आकर्षण, नयनों में इमरत का वर्षण
शब्द-शब्द में है पथदर्शन, मंगलकारी जीवन दर्शन
चरण शरण की चाह शुभंकर, उपासना की हमें रजा दो

समता ममता बन सहचारी, हर पल दाएं-बाएं रहती
कर कमलों में श्रम सेवा, निशदिन तेरी धारा बहती
इन उर्जस्वल नयन युगल से, कण-कण में नव शक्ति सजा दो।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 अप्रैल - 03 मई 2026

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

आचार कुशल महापुरुष– आचार्य श्री महाश्रमणजी

● डा. मुनि मदन कुमार ●

तेरापंथ धर्मसंघ की आचार्य-परंपरा अत्यंत गौरवशाली है। आचार्य देव के लिये 'तीर्थंकर के प्रतिनिधि' जैसे महत्त्वपूर्ण और सम्मानसूचक शब्द का प्रयोग होता है। इस विरुद को धारण करने वाले सचमुच महापुरुष होते हैं। तरण-तारण की परंपरा अत्यंत उच्च है। जिनके पास निर्मल सम्यक्त्व और चारित्र हो तथा पुरुषार्थ की पराकाष्ठा हो, उनकी महानता का कहना ही क्या? ज्ञान और आचार की जिनमें विलक्षणता हो, वे निस्संदेह चक्खुदयाणं (श्रुतदाता), मग्गदयाणं (मार्गदाता) और सरणदयाणं (शरणदाता) होते हैं।

महामहिम आचार्य श्री भिक्षु स्वामी महामेधावी महापुरुष थे। वे अप्रमत्त साधक और भावितात्मा अनगार थे। उनका अन्तर्ज्ञान अद्भुत था। वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमणजी उनके पदचिह्नों पर चलने वाले विलक्षण महापुरुष हैं। वे स्वनामधन्य, युगप्रधान और श्रुतकेवली बनकर जगत के लिये त्राण बन रहे हैं। उनमें प्रवचन करने का बड़ा कौशल है तथा उनकी ज्ञान-संपदा बहुत विशिष्ट है। उनके विराट व्यक्तित्व में चारों ओर निरवद्यता के दर्शन होते हैं। साध्वाचार की सजगता उनमें चुम्बकीय आकर्षण पैदा कर रही है। जहाँ अप्रमाद होता है वहाँ साधना फलवती बन जाती है। भिक्षु-शासन का सौभाग्य है कि इसमें ऐसे नर-रत्न पैदा होते रहते हैं।

हमारे वर्तमान तीर्थंकरों- सीमन्धर आदि अर्हंतों में पांच योग पाये जाते हैं। परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी की सजगता को देखकर यह कहा जा सकता है कि उनमें प्रायः पांच योग ही पाये जाते हैं। निरन्तर शुभ योग में रहने वाले महापुरुष में पांच योग ही पाये जाते हैं। परम पावन आचार्य श्री महाश्रमणजी के जीवन में यदि क्षायिक सम्यक्त्व की प्राप्ति हो जाये और एकाभवतारी बन जाये तो कोई आश्चर्य जैसी बात नहीं लगती है। जिनके समत्व योग और अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग हो, वे महापुरुष महान उपलब्धियां प्राप्त कर सकते हैं। संसार में तीर्थंकर और चक्रवर्ती अतिशय पुण्यशाली पुरुष होते हैं। वर्तमान में भरत क्षेत्र में तीर्थंकर नहीं है किन्तु आचार्य श्री महाश्रमणजी जैसे पराक्रमी और कुशल आचार्य उनकी संपूर्ति कर रहे हैं। ज्योतिपुंज आचार्य श्री महाश्रमणजी की पुण्यवत्ता प्रबल है अतः उन्हें धर्मचक्रवर्ती कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं लग रही है। आगम में तीर्थंकर नाम कर्म माना गया है वैसे ही श्रुतधर आचार्य श्री महाश्रमणजी जैसे ज्योतिर्धर आचार्यों के लिये 'आचार्य नाम कर्म' मान लिया जाये तो क्या कठिनाई है? तीर्थंकर देव अलौकिक और अतिशय पुण्यशाली महामंगलकारी महापुरुष होते हैं, कोई-कोई आचार्यदेव भी अद्भुत और विलक्षण होते हैं।

आगम सूक्त है — महप्पसाया इसिणो हवंति! ऋषि महान् प्रसन्न चित्त होते हैं। आचार्य श्री महाश्रमणजी इस सूक्त के प्रतीक पुरुष हैं। उनमें चन्द्रमा जैसी निर्मलता, सूर्य जैसी तेजस्विता और सागर जैसी गंभीरता के एक साथ दर्शन किये जा सकते हैं। उनका व्यक्तित्व विराट है। उनके प्रभामंडित व्यक्तित्व का दर्शन करने वाला प्रभावित हो जाता है।

अध्यात्म योगी आचार्य श्री महाश्रमणजी को अपने दो महान पूर्वाचार्यों से भरपूर आशीर्वाद मिला है तथा आचार्यद्वय ने खुलकर पथ-दर्शन किया है। ऐसा परम सौभाग्य अतीत में किसी आचार्य को मिला हो, यह अन्वेषणीय है। महामहिम आचार्य श्री भिक्षु की परंपरा समृद्ध परंपरा है। 27 दशक के छोटे से कालखण्ड में इतने-इतने प्रतापी आचार्यों का होना सचमुच आश्चर्यपूर्ण है। इस धर्मसंघ ने व्यक्ति-निर्माण और ग्रंथ-निर्माण का बेजोड़ कार्य किया है। वर्तमान में आचार्य श्री महाश्रमणजी के पास दस पूर्ववर्ती आचार्यों की अनमोल विरासत है जिसका संरक्षण और संवर्द्धन वे बड़ी कुशलता से कर रहे हैं।

वीतरागता के निदर्शन आचार्य श्री महाश्रमणजी के बाह्य और आभ्यन्तर दोनों ही व्यक्तित्व सशक्त हैं। देदीप्यमान मुखमण्डल और मुस्कुराता वदन हर दर्शनार्थी को आकर्षित करता है। उनके पवित्र प्रभामण्डल में वैराग्य चेतना और वीतराग आत्मा के दर्शन होते हैं। उनके आभ्यन्तर व्यक्तित्व में सहजता, समरसता, विनम्रता, वत्सलता और प्रमुदिता का साक्षात्कार होता है इसलिये वे अनिमेष विलोकनीय हैं।

योगक्षेम वर्ष एक दूरदृष्टि है और आध्यात्मिक प्रशिक्षण का एक प्रयोग है। योगक्षेम वर्ष 1989 की तरह ही योगक्षेम वर्ष 2026 बहुत प्रभावशाली और आनन्ददायी प्रतीत हो रहा है। इसमें पूज्यप्रवर का जबरदस्त पौरुष बोल रहा है।

साधना के शिखर पुरुष आचार्य श्री महाश्रमण

● मुनि जिनेश कुमार ●

साधना के शीतल समीर तुम्हें प्रणाम,
संयम के परम वीर तुम्हें प्रणाम,
महाव्रत के पावन पट्टधर हो तुम,
संघ सरोवर के निर्मल नीर तुम्हें प्रणाम।

जो प्रमाद की नींद में सोता है उसके लिए हर समय कलियुग है, जो अंगड़ाई लेकर जागने का प्रयास करता है उसके लिए द्वापर है। जो आगे बढ़ने के लिए तत्पर है उसके लिए त्रेता है और जो लक्ष्य की ओर निरंतर वर्धमान है, उसके लिए सतयुग है।

इस सुभाषित वचन के अनुसार युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी का गतिशील और प्राणवान व्यक्तित्व सतयुग का पर्याय है। उनके सान्निध्य से नई ऊर्जा और प्रेरणा का संचार होता है। 'चरैवेति' उनका जीवन मंत्र है। उनके चिंतन में रूढ़िवाद और यथास्थिति का आग्रह नहीं है। प्रज्ञा, साधना और पुरुषार्थ की तूलिका से उन्होंने जीवन की पुस्तक में हर वर्ष नये रंग भरे हैं। इसलिए वे जन-जन के श्रद्धा के केंद्र व प्रेरणास्रोत हैं। वे श्रमण परंपरा के तेजस्वी श्रमण नक्षत्र हैं। जिस प्रकार अनंत बूंदें मिलकर सागर का निर्माण करती हैं, उसी प्रकार अनंत गुण मिलकर एक महापुरुष का निर्माण करते हैं।

महापुरुषों का जीवन अनंत गुणों से परिपूर्ण होता है। जैसे समुद्र की लहरों को गिन पाना असंभव है, वैसे ही महापुरुषों के गुणों की अभिव्यक्ति करना दुष्कर है। आचार्य श्री महाश्रमण जी गुणों के आकर (खजाना) हैं। उनके समग्र व्यक्तित्व की व्याख्या कर पाना मेरी लेखनी के सामर्थ्य से बाहर है, फिर भी उनके जन्मोत्सव, पट्टोत्सव व दीक्षोत्सव दिवस के प्रसंग पर यत्किंचित लिखने का प्रयास कर रहा हूँ।

साधना के शिखर पुरुष :

आचार्य श्री महाश्रमणजी साधना के शिखर पुरुष हैं। जिस प्रकार मोदक को कहीं से भी चखने पर वह मीठा ही लगता है, उसी प्रकार आचार्य श्री के जीवन को कहीं से भी देखने पर साधना ही साधना दिखलाई पड़ती है। आचार्य श्री के जीवन का पल-पल साधना के रस से भीगा हुआ प्रतीत होता है। आचार्य श्री की साधना बहुमुखी है। उन्होंने अपने जीवन के कैनवास पर साधना के विभिन्न रंगों से सुंदर, आदर्श एवं अलौकिक चित्र उकेरे हैं। वे प्रवर आत्म-साधक व साधना-शिल्पी हैं। उनका इंद्रिय संयम अनुत्तर है। वे महाव्रतों, समितियों व गुप्तियों के पालन में जागरूक हैं।

त्रियोग साधक :

जैन ग्रंथों में मन, वचन और काया को त्रियोग माना गया है। आचार्य श्री के त्रियोग सधे हुए हैं। वे घंटों-घंटों एक आसन में विराजमान रहते हैं। उनकी काय-स्थिरता विशिष्ट है। वे जब ईर्यापथ के पथिक बनते हैं, तब स्वयं ईर्या-समिति गौरवान्वित होती प्रतीत होती है। कभी-कभी एक दिन में सैकड़ों बार हाथ उठाकर आशीर्वाद प्रदान करते हैं, तो प्रतिदिन हजारों लोग उनके चरण स्पर्श कर अद्भुत आनंद का अनुभव करते हैं।

उनकी वाणी संयमित, मधुर, परिमित व निर्दोष होती है। वे वचन की प्रामाणिकता व निश्चयता के प्रति पूर्ण जागरूक हैं। उनके प्रवचनों में एक-एक शब्द सार्थक होता प्रतीत होता है। वे वाणी भूषण हैं। उनकी भाषा-समिति के प्रति सजगता विरल उदाहरण प्रस्तुत करती है। वे श्रद्धालुओं को एक दिन में अनेक बार मंगलपाठ सुनाकर भी प्रसन्न रहते हैं।

उनके मन की एकाग्रता भी सधी हुई है। वे जब प्रवचन करते हैं तो उसमें लीन बन जाते हैं और जब वे दूसरे वक्ताओं को सुनते हैं तो सच्चे श्रोता बन जाते हैं। उनकी स्मृति तीव्र व प्रखर है। वे वर्षों पुरानी बात को भी ज्यों की त्यों सुना देते हैं। मन की एकाग्रता के ही यह सब परिणाम हैं। मन, वचन और काया की विभिन्न प्रवृत्तियों के बीच भी उनका साम्यभाव अविचल बना रहता है।

रत्नत्रय साधक :

जैन धर्म में सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन और सम्यक् चारित्र को रत्नत्रय की संज्ञा से अभिहित किया गया है। तत्त्वार्थ सूत्र में 'सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः' सूत्र से सम्यक् दर्शन, ज्ञान व चारित्र को मोक्ष का मार्ग बतलाया गया है। आचार्य श्री रत्नत्रय के साधक हैं। वे ज्ञान के हिमालय, दर्शन के दीपस्तंभ व चारित्र के चूड़ामणि हैं। वे प्रवचनों व प्रशिक्षणों के माध्यम से शिष्य समुदाय का आलोक बढ़ाते हैं। उनकी तर्क शक्ति प्रखर है। उनकी आगम निष्ठा अनुत्तर है। वे देव, गुरु और धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठावान हैं। वे साधु के नियमों और मर्यादाओं के प्रति पूर्ण सजग हैं।

प्रबल पुरुषार्थी :

वे प्रबल पुरुषार्थी हैं और अपने पुरुषार्थ को परोपकार के लिए समर्पित कर देते हैं। वे एक कुशल यायावर हैं। देशाटन उन्हें खूब प्रिय है। वे अब तक 60 हजार किलोमीटर से अधिक पदयात्रा कर चुके हैं। भारत के साथ-साथ उन्होंने नेपाल व भूटान की भूमि को भी अपने चरणों से पावन किया है। उनकी यात्रा सिर्फ यात्रा नहीं रहती, उसके साथ जनकल्याण जुड़ा रहता है। उनकी 'अहिंसा यात्रा' ने लाखों लोगों को नशामुक्ति का संकल्प दिलाया है। सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति उनका मिशन बना हुआ है। उनके संदेशों ने विभिन्न धर्मों व वर्गों के लाखों-लाखों लोगों को नई राह दिखाई है। वे परोपकार व प्रबल पुरुषार्थ के कारण सभी के प्रिय बने हुए हैं।

श्रद्धा प्रणति :

आचार्य श्री महाश्रमणजी युगप्रधान, महातपस्वी, शांतिदूत, महायशस्वी, महामनस्वी, महामनीषी, मानवता के मसीहा, साधना के सुमेरु व शक्ति संपन्न आचार्य हैं। उनके चिंतन में उदारता, व्यवहार में मानवीयता और सफलता में विनम्रता है। वे शांत, दांत, कांत, सरल व्यवहार से संवृत्त, आकांक्षा-स्पृहा से विरक्त, जीवन और जगत के रहस्यों को खोजने में सदा रत और अपनी प्रज्ञा से जनकल्याण के लिए समर्पित भारतीय संत परंपरा के गौरव पुरुष व अनमोल रत्न हैं।

उनके जन्मोत्सव, पट्टोत्सव व दीक्षोत्सव के पावन प्रसंग पर हम अपनी संपूर्ण श्रद्धा समर्पित करते हैं और मंगल कामना करते हैं कि आप युगों-युगों तक तेरापंथ धर्मशासन व मानवता की सेवा करते रहें।

हर नई राह, हर नई चाह, हर नया गीत तुम्हें शुभ हो।
हर नया प्रभात, हर नई रात, पावन पुनीत तुम्हें शुभ हो।

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

तेजोनिधि सूरज के 65वें जन्मोत्सव पर मंगलकामना

● समणी निर्मल प्रज्ञा ●

मनुष्य की सुषुम्ना नाड़ी में सात चक्रों का निवास होता है। मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहत, विशुद्ध, आज्ञा और सहस्रार चक्र। अनाहत चक्र में साधक की प्रज्ञा बहुत दीर्घकाल तक स्थिर होने लग जाती है एवं योगी विशुद्ध चक्र की ओर बढ़ जाता है। संसार से मन विरक्त हो जाता है। आज्ञा चक्र पर पहुँचने के बाद आत्मदर्शन होता है और सहस्रार चक्र जागृत होने पर जीव अनासक्त बनकर शिव बन जाता है। प्रकाश का स्पर्श होने पर अंतर्मन में विलीन हो जाता है।

आचार्य श्री महाश्रमण जी की योग साधना अत्यंत प्रभावशाली है। सिद्ध, प्रसिद्ध, योगीराज आचार्य महाश्रमण को मैं शत-शत प्रणाम करती हूँ। आपका 65वाँ मंगल जन्मोत्सव पैंसठिया योग की सिद्धि का वरदानदाता बने। योगक्षेम वर्ष में आने वाला यह जन्मोत्सव विराट धर्मसंघ को चेतना के ऊर्ध्वारोहण की ओर प्रेरित कर रहा है।

महाज्ञानी महर्षि आचार्य श्री महाश्रमणजी परमार्थ मार्ग पर गतिमान बनकर जन-जन का पथ आलोकित कर रहे हैं। अलौकिक एवं आध्यात्मिक जन्मोत्सव को मनाने के लिए आज आचार्य श्री तुलसी की जन्मभूमि में संपूर्ण संघ समुत्सुक है।

65वें जन्मोत्सव में 11 का अंक भी विद्यमान है। 11वें आचार्य की अभ्यर्थना में मैं भी शपथ ग्रहण कर अपने साधना पथ को प्रशस्त कर सकूँ। आपकी प्राणशक्ति (Willpower) व्याधिमुक्तता की दिशा में रोगी को नीरोग बना रही है। शुद्ध समाधि की दिशा में पहुँच पाएँ, यही शुभ भावना प्रकट करती हूँ।

5 जुलाई को बवानी खेड़ा में प्रवचन के बाद युवाचार्य श्री महाश्रमण, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के पास पधारे। मुमुक्षु बहनें सब साथ थीं, तब आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने विनोद करते हुए फरमाया—

'महाश्रमण ठाठ-बाठ से पधारे, काम करे जका ठाठ-बाठ से आवे, श्रम करो सफल बनो—म्हें जका बैठा रेवां, काम तो महाश्रमण करे, विहार कर आया ज्यों लागे।'

प्रभो! आप स्ट्रिक्ट नहीं हैं। हर व्यक्ति को अपनी ट्रिक से ट्रेनिंग प्रदान करवाते हो। आपका नेटवर्क स्ट्रोंग है। जब आप पत्र चर्चा मुख्य मुनि प्रवर से करवाते हो, तब आपके पासवर्ड (Password) रहते हैं— लाल, पर्स, 3 months, ten days, समीक्षण आदि। नए तरीके से कार्य भी सफल हो जाता है। आपकी यह अनुभव सिद्धि भव्य आत्मा के भवभ्रमण में अल्पीकरण करे, यही आशीर्वाद जन्मोत्सव की अभिनव बेला में माँगते हैं।

अनुभवसिद्ध पुरुष हो भन्ते,
भव भ्रमण कम करते।
करुणा के हो तुम महासागर,

जन-जन की पीड़ा हरते।
आगार को देते अनगार प्रेरणा,
वाणी मुक्तिपथ दर्शाती।
हे वर्तमान के वर्धमान,
निर्मल शत-शत सविनय शीष झुकाती।

तेरापंथ के इस आंगन में, भक्ति का नया विहान हुआ

सरदारशहर की पावन धरा पर, एक नन्हा सूरज आया था,
बालक 'मोहन' के अंतर्मन में, वैराग्य का भाव समाया था।
अंतर्मन का वह पावन मंथन, संयम की एक पुकार बनी,
जब 'गुरु कालू' का ध्यान धरा, तब राह बड़ी ही साफ़ बनी।

'गुरु तुलसी' और 'महाप्रज्ञ' ने, जीवन का आधार दिया।
मुनि सुमेरमल जी के हाथों, जब संयम का श्रृंगार किया,

'आचार्य भिक्षु' की उस पावन, मर्यादा की अटूट यह थाती है,
ग्यारहवें अधिनायक की आभा, आज जग को राह दिखाती है।

वह दीक्षा का मंगल अवसर, युवा दिवस का मान हुआ,
तेरापंथ के इस आंगन में, भक्ति का नया विहान हुआ।
महासूर्य 'महाश्रमण' बनकर, जो आज धर्म को संवार रहे,
अहिंसा के पावन पथ से, वे मानवता को निखार रहे।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स परिवार, दिल्ली

Acharya Shri Mahashraman : A leading spiritual warrior

● Sadhvi Vigya Prabha ●

Life is often compared to a journey, but it is equally a battle, not because we fight with swords or shields but because we constantly struggle with our inner weaknesses and emotions. Anger flares up like fire, ego blocks our progress, jealousy blinds the mind, grudges burden our heart, greed creates endless desire, ignorance weakens confidence and impatience destroys peace.

However, in this world full of chaos, Acharya Shri Mahashraman shines as a beacon of hope. He shows us how to live with purpose, discipline and compassion. His teachings act as a light that help us walk through the challenges of life not with violence, but with wisdom and inner strength.

Acharya Shri Mahashraman seems to be a leading spiritual warrior who fights a battle not through violence, but through values. His qualities are like divine weapons which inspire us to conquer our inner enemies and show us the path to purity, compassion and self-mastery.

Strong willpower: Acharya Shri Mahashraman has a strong willpower and I think his willpower is similar to a long-range cruise missile. Just as a long-range cruise missile hits the target from far away, similarly Acharya Shri's unwavering determination remains cutting through barriers and achieving the desired goal.

Evergreen forgiveness: Acharya Shri's evergreen forgiveness strikes like hammer bombs, shattering hatred and dissolving conflicts. His forgiveness breaks the cycle of negativity, heals wounded relationships and brings harmony.

Limitless compassion: Acharya Shri's limitless compassion works as a radar sensing pain and suffering of every soul. It keeps him connected to the emotions of people around him and directs him towards kindness and empathy in every situation.

Relief Booster Smile: Acharya Shri's relief booster smile acts as a defense system, disarming anger and negative thoughts instantly. His gentle smile calms the environment, neutralizes stress, removes bitterness and brings comfort to troubled hearts.

Hardwork : Acharya Shri's hardwork is similar to Niagara, a tireless and powerful force of energy that continuously inspires across the world. His dedication inspires us to follow the path of consistent effort.

Wisdom : His wisdom glows like a bright torch in the darkness of confusion. It removes ignorance, reveals truth and shows all of us the right path. His words illuminate our minds and help us make wise decisions.

Thus, Acharya Shri Mahashraman is a leading spiritual warrior, whose life is a shining example of how inner strength can transform us and help us overcome life's toughest battles. By following his teachings, we become stronger, more peaceful and more capable of defeating our inner enemies. He shows us that real victory is not winning over others, but winning over ourselves. Real victory is not conquest but spiritual upliftment.

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 अप्रैल - 03 मई 2026

साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के चयन दिवस पर हृदयोद्गार

एक पवित्र निर्झरिणी

● साध्वी शुभप्रभा ●

एक बार विद्वज्जनों की संगोष्ठी में चर्चा चली — 'विकास के रथ पर सवार होकर कौन अपनी मंजिल शीघ्र प्राप्त कर लेता है?' अपनी-अपनी मनीषा एवं अवधारणा के अनुसार अनेक प्रतिवचन सामने आए, जिनका समवेत प्रारूप यह बना — जो आत्म-पर्यवेक्षक हो, जिस पर तकदीर मेहरबान हो, जिसमें ज्ञान-पिपासा हो, जिसका हौसला बुलंद हो, जिसके पुरुषार्थ की लौ अखंड जलती हो, जिसकी सोच सकारात्मक हो, जिसके भीतर उत्साह का दरिया लहराता हो, जिसका समय प्रबंधन अच्छा हो, आदि-आदि।

जैसे सप्तरंगी रंगों से निर्मित इंद्रधनुष सबके चित्ताकर्षण का हेतु बनता है, वैसे ही उपरोक्त सद्गुण-फूलों से सजा व्यक्तित्व रूपी गुलदस्ता सबके मन को महमहा देने वाला हो, सांसों को संयम से सुरभित करने वाला हो, प्राणों में पुलकन भरने वाला हो, आत्मा को आनंद-सागर में निमज्जित करने वाला हो, इसमें आश्चर्य ही क्या?

मेरे चर्म-चक्षुओं ने जो देखा, बुद्धि ने जो समझा, मन ने जो माना और सहवास से जो शब्द-चित्र बना, उसी के आधार पर कहा जा सकता है कि महातपस्वी, महायशस्वी, महातेजस्वी, महावर्चस्वी आचार्य श्री महाश्रमण ने नवम साध्वी प्रमुखा के रूप में जिसे मनोनीत किया है, वह विनय और विवेक की युति है, भाग्य और पुरुषार्थ की संसृति है, श्रद्धा और समर्पण की समन्विति है तथा प्रशिक्षण, परीक्षण और प्रयोग की परिणति है। आप कृपा और करुणा की मंगलमय कृति हैं तथा साध्वी, समणी, मुमुक्षु और महिलाओं के लिए एक विलोभनीय विभूति हैं।

पिता एवं परिजनों के प्यार-दुलार से अभिसिंचित सरोज (मुमुक्षु अवस्था का नाम), सविता के अभ्युदय से विकस्वर हो उठीं और अपनी विद्युत विमल आभा से सबको आपूरित करने का इरादा कर लिया। यद्यपि 'तिन्नाणं-तारयाणं' (स्वयं तैरना और दूसरों को तारना) के पथ पर बढ़ते कदमों को रोकने का भरसक प्रयत्न किया गया, पर जिसके जीवन-दीप में वैराग्य का तेल, भक्ति की बाती, पुरुषार्थ की चिमनी और समर्पण की ज्योति हो, वह दीया तूफानों के बीच भी जल सकता है और आंधियों से टक्कर ले सकता है। बहन सरोज के संकल्प ने इस तथ्य को सत्यापित कर दिया और फलतः उनकी गति कहीं भी अवरुद्ध नहीं हुई। भगवान महावीर की निर्वाण शताब्दी का वर्ष हमारे व्यक्तित्व विकास की आध्यात्मिक प्रयोगशाला 'पारमार्थिक शिक्षण संस्था' (लाडनूं) में प्रविष्टि का पहला ही वर्ष था। हम नई बहनों ने मिलकर योजना बनाई कि हमें इस वर्ष 25 उपवास, 25 आयम्बिल और एकासन करने चाहिए। यह प्रभु चरणों में हमारे त्याग की भेंट होगी। उस अनुष्ठान को निष्ठा तक पहुँचाने वाली बहनों में एक नाम मुमुक्षु सविता का था। तप-त्याग के प्रति आपकी रुचि आज भी उज्जीवित है; हर महीने लगभग छह उपवास करना आपकी सहज प्रवृत्ति बन गई है। संस्था प्रवेश से पूर्व हमें प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल, भक्तामर और कर्तव्य-षत्रिंशिका के अतिरिक्त विशेष ज्ञान नहीं था। बड़ी बहनों को स्वाध्याय करते हुए देखतीं तो मन में आता कि काश! यह सब हमें भी आए। पंचसूत्रम् के कंठस्थीकरण से प्रारंभ हुई आपकी ज्ञान यात्रा ने एक वर्ष की अवधि में ही कल्याण मंदिर, शांत-सुधारस भावना, सिन्दूर-प्रकर आदि ग्रंथ सीख लिए। प्रति उपवास में स्वाध्याय, जप, ध्यान और मौन का तीन घंटे का क्रम चलता था। संयम, ज्ञान और वैराग्य चेतना के संपुष्टीकरण की दृष्टि से संस्था का वह प्रथम वर्ष बहुत कारगर बना। अध्ययन की दृष्टि से आप सीनियर बहनों के साथ हिंदी एवं अंग्रेजी कक्षाओं में सहभागी बनीं तथा जैन तत्वविद्या एवं 'कालो कौमुदी' पढ़ने के लिए अलग से व्यवस्थाएँ की गईं। त्रैमासिक परीक्षाओं के दौरान आगम ग्रंथ और विभिन्न दर्शनों को पढ़ने का अवसर मिला। उस समय सविता बहन की अध्ययनशीलता, ग्रहणशीलता और जागरूकता को देखकर लगता था कि उनके भीतर 'मुझे कुछ बनना है' का प्रबल भाव है। उनके भीतर से स्वर निकलता था— 'फौलादी हैं सीने अपने, फौलादी हैं बाहें, हम चाहें तो पैदा कर दें चट्टानों में राहें'। आपने अपनी दृढ़ संकल्प शक्ति और कड़ी मेहनत से अल्पकाल में ही एक विशिष्ट पहचान बना ली। आपने कभी अवसर की प्रतीक्षा नहीं की, बल्कि प्रगति के मौके स्वयं तलाश लिए। आपने समय की गेंद को हमेशा अपनी मुट्ठी में दबाए रखा और उसे कभी फिसलने नहीं दिया। जो काम जिस वक्त करणीय है, उसे पूरा करना ही है, चाहे शारीरिक कष्ट ही क्यों न हो। उस पल अन्य कार्य गौण और वही मुख्य होता था।

शायद आपने अपना लक्ष्य निर्धारित कर लिया था किः 'If you cannot fly, run. If you cannot run, walk. If you cannot walk, crawl, but keep moving towards your goal'। लक्ष्य की सतत स्मृति और उसी दिशा में सत्प्रयास हो तो मंजिल मिलना मुश्किल नहीं है। आपकी गतिविधियों से परिलक्षित होता है कि कोई सूर्यमुखी होता है तो कोई चंद्रमुखी, पर आपका हर शब्द, हर चिंतन और हर कार्य गुरुमुखी होता है। 'आप्त वाक्यं प्रमाणम्' के सदृश गुरुवचन ही आपके लिए अंतिम प्रमाण हैं। गुरु के निर्देश चाहे संस्था में रहने के हों, दीक्षा के हों या सेवा के, आपने उन्हें हमेशा अहोभाव के साथ स्वीकार किया।

संस्था काल में आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के चरणों में बैठकर आपने जो गहन प्रशिक्षण प्राप्त किया, वह आपके व्यक्तित्व की नींव बना। गुरुओं की सूक्ष्म दृष्टि ने आपके भीतर छिपी नेतृत्व क्षमता को पहचाना और उसे निखारा।

यही कारण है कि जब परीक्षण की बारी आई, तब आप हर कसौटी पर खरी उतरीं। शासनमाता साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा जी के सानिध्य में रहकर आपने संघ की मर्यादाओं और व्यवस्थाओं को बहुत बारीकी से सीखा। शासनमाता जी का आप पर अटूट विश्वास था। वे अक्सर आपकी कार्य-निपुणता और सेवा-भाव की सराहना करती थीं।

प्रयोग की दिशा में भी आपके कदम हमेशा आगे रहे हैं। आपने केवल सिद्धांतों को पढ़ा ही नहीं, बल्कि उन्हें व्यावहारिक धरातल पर उतारा है। साध्वी संघ के विकास के लिए आपके द्वारा किए गए अभिनव प्रयोग और आपकी कार्यशैली सबको प्रभावित करती है। आपश्री के जीवन में अनेक ऐसे प्रसंग आए हैं, जो आपकी दिव्यता और सूक्ष्म शक्तियों के साथ जुड़ाव को प्रकट करते हैं। यहाँ दो विशेष प्रसंगों का उल्लेख करना चाहूँगीः

प्रथम प्रसंगः

एक बार आपश्री ने अपनी साधना के दौरान कुछ ऐसे अलौकिक अनुभव किए जो आपकी गहरी गुरुभक्ति का परिणाम थे। आपकी एकाग्रता और निष्ठा ने आपको उस आंतरिक शांति तक पहुँचाया जहाँ केवल आत्मा का स्वर सुनाई देता है।

द्वितीय प्रसंग (1986) :

दूसरा प्रसंग 1986 का है। यात्रा के दौरान आपका कुरुक्षेत्र जाना हुआ। श्री भंवरलाल जी सेठिया (सरदारशहर) के आवास में आपका प्रवास था। एक दिन सबने देखा कि जहाँ आप विराजित थीं, वहाँ दीवार पर पीला थापा (हस्त-चिह्न) मंडरा रहा है। हाथ लगाकर देखा तो वह गीला था और उससे केसर की तीव्र सुगंध आ रही थी। सभी ने और उनके पारिवारिक जनों ने जाँच-पड़ताल की, पर इसका कोई बाहरी स्रोत या रहस्य ज्ञात नहीं हुआ।

अनुमानतः यह कोई अज्ञात दैवीय सूचना थी। 'इदं तत्वं कोऽपि गम्यं'। सन् 1988 में पर्युषण पर्व के लिए जब हम पुनः कुरुक्षेत्र गए, तब उन्होंने हमें वह स्थान दिखाया और पूरा घटनाक्रम बताया। जहाँ आत्म-जागरण, जन-जागरण, समाज-जागरण और राष्ट्र-जागरण के चौराहे पर खड़ा व्यक्तित्व अध्यात्म का आलोक वितरित करता है, वहाँ ऐसा होना नामुमकिन नहीं है।

इस प्रतीति में आ रहा है कि अप्रमाद संयम का प्रहरी, विनय साधना की सुगंध, अनुशासन जीवन का संरक्षक और पापभीरुता साधु की आत्मा है। शासनमाता साध्वी प्रमुखा श्री जी के द्वारा प्ररूपित इस 'चतुष्टयी' की आप आराधक हैं। आपश्री के दैनंदिन व्यवहारों में यह प्रतिबिम्बित हो रहा है। आत्मौपम्य भाव की निर्झरिणी बनकर आपश्री सबको समान रूप से अभिसिंचित और शीतल कर रही हैं। साथ ही, समय प्रबंधन के साथ अपनी अभिरुचि और क्षमता के अनुसार प्रतिभा प्रवृद्धि के लिए अवसर प्रदान कर रही हैं। चयन दिवस के इस पावन अवसर पर आपके चरणों में श्रद्धासिक्त वंदना और कोटि-कोटि मंगल कामनाएँ।

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

तेरापंथ के अखिलेश-आचार्य श्री महाश्रमण

● साध्वी रक्षितयशा ●

मेरी सांसों में हरदम बसा गुरुवर का नाम है,
पावन पुनीत चरण ही मेरा असली मुकाम है।
युगप्रधान महाश्रमण को वंदन बारंबार है,
तेरी शरण मिल गई यही मेरा नॉबेल इनाम है।

अभिनंदन! वैशाख शुक्ला नवमी के उस मंगलमय क्षण को, जिस क्षण संपूर्ण मानव जाति का कल्याण करने वाले महामानव का इस रत्नगर्भा धरती पर अवतरण हुआ।

अभिवंदन! वैशाख शुक्ला चतुर्दशी के उस अभूतपूर्व क्षण को, जब ऋजुता, मृदुता तथा विनम्रता आदि अनेक गुणों से समृद्ध बालक मोहन ने संयम पथ को स्वीकार किया। वर्धापन! वैशाख शुक्ला दशमी की वह शुभ वेला, जिस समय एक छोटा सा बीज विशाल कल्पवृक्ष बन आज चतुर्विध-धर्मसंघ को शीतल छाँव प्रदान कर पाप-ताप-संताप को दूर कर रहा है।

जय-जय ज्योतिचरण! जय-जय महाश्रमण!!

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी वर्तमान के जैनाचार्यों में सर्वाधिक प्रतिष्ठित आचार्य हैं। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के कुशल नेतृत्व में तराशी गई इस प्रतिमा में गुण पुष्पों की अनुपम बगिया महक रही है। अनुत्तर संयम, अनुत्तर ज्ञान व अनुत्तर साधना से अलंकृत पूज्यप्रवर का जीवन संयत संतता के शिखर पर विराजमान है।

तेरापंथ के अखिलेश! आपकी अलौकिक रश्मियों से पूरा विश्व जगमगा रहा है। आपश्री के ऐतिहासिक कीर्तिमानों की सौरभ से सारा जहाँ सुरभित हो रहा है। प्रभो! आपके तेजोमय आभामंडल से निकलने वाली हर किरण जन के लिए कल्याणकारी साबित हो रही है।

हे मानवता के महामसीहा! 'गुरु कृपा हि केवलं, शिष्य परं मंगलं' अर्थात् गुरु की कृपा से बढ़कर शिष्य के लिए कोई मंगल महल नहीं होता। गुरु कृपा निष्प्राण में प्राण भर देती है। प्रज्ञाचक्षु नयनसुख बन जाता है। पंगु पर्वत पर आरोहण कर लेता है। आपका संपूर्ण जीवन पवित्रता का अक्षय कोष है। अज्ञानरात्रि में सोये हुए मानव को ज्ञान का अलार्म बजाकर आप संपूर्ण भारत में जागरण का शंखनाद कर रहे हैं।

युग की धाराओं को मोड़ने वाले, नए इतिहास का सृजन करने वाले, जन की सांसों में बसने वाले युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के श्रीचरणों में इस योगक्षेम वर्ष के स्वर्णिम अवसर पर मेरी सविनय प्रार्थना है—

– मैं हर पल आपके श्रीमुख से निकले कथनों का, शब्दों का श्रवण करती रहूँ।
– मेरे बंद नयन, खुले नयन, अंतर्नयन सबमें गुरु के ही दर्शन हों।
– मेरी वाणी सदैव आपकी स्तुति करने में मग्न रहे।
– मेरा सिर सदैव आपके चरणों में नत-प्रणत रहे।

गुरुदेव की पावन सन्निधि हमें सदा प्राप्त होती रहे।

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

आध्यात्मिक पथदर्शकः आचार्य महाश्रमण

● साध्वी माधुर्यप्रभा ●

दुनिया में अनेकों विद्याएँ हैं, जैसे ज्योतिष विद्या, रसायन विद्या, अंक विद्या, स्वास्थ्य चिकित्सा विद्या, गणितीय विद्या, खगोल विद्या आदि। ये सब विद्याएँ इहलोक तक ही सीमित हैं, मृत्यु के बाद हमारे साथ नहीं जाती हैं। आत्मविद्या वह विद्या है जो भवान्तर में हमारे साथ जाती है। यह यथार्थ का बोध करवाकर, स्वार्थ का त्याग करवाकर, परमार्थ तक पहुँचाने में समर्थ है। इसीलिए कहा गया है— 'सा विद्या या विमुक्तये'— विद्या तो वही है जो दुःखों से मुक्त कराये, शाश्वत सुख की ओर प्रस्थान करवाये।

आत्मविद्या ही सुख-शांति और समाधि की चाबी है, जो असंयम पर संयम का अंकुश लगा सकती है। जब तक कर्मों को रोकने का, निवारण करने का या क्रमशः क्षय करने का प्रयास नहीं होता, तब तक असली सुख और शांति की प्राप्ति नहीं हो सकती।

आत्मविद्या के पथ पर अग्रसर होने के लिए पथदर्शक की जरूरत है। पथदर्शक के नाम पर आज दुनिया में भीड़ लगी हुई है, पर वे (सच्चे) पथदर्शक नहीं बन सकते। अध्यात्म का पथदर्शन वे ही कर सकते हैं, जिनका जीवन ही दर्शन हो, आचरण ही आदर्श हो, साधना ही शक्ति हो। जीवन्त दर्शन, उन्नत आचरण और उत्कृष्ट साधना के साधक पुरुष हैं आचार्य महाश्रमण।

आचार्य महाश्रमण आध्यात्मिक पथदर्शक के रूप में सम्पूर्ण मानवजाति एवं विशेष रूप से अपने अनुयायियों व शिष्य संपदा का आध्यात्मिक पथदर्शन करवा रहे हैं। आचार्य महाश्रमण विलक्षण योगी और साधक हैं। वे स्वयं बहुत कम बोलते हैं लेकिन उनके आदर्श बोलते हैं। 'My Life is my message' (मेरा जीवन ही मेरा संदेश है), यह सुविचार आचार्य महाश्रमण के जीवन में अक्षरशः घटित होता है।

बंगाल (कलकत्ता) के सांसद सुदीप जी बंदोपाध्याय ने अमृत महोत्सव के चौथे चरण के समय आचार्य श्री महाश्रमण जी के लिए कहा था— 'आपने अमृत महोत्सव के दौरान जितना काम किया है, उतना तो कोई सरकार भी किसी योजना के दौरान नहीं कर सकती'।

स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन जी भागवत ने कहा था— 'भारत का काम दुनिया को मर्यादा सिखाने का रहा है। पुस्तकों में ज्ञान-भाषण ही रहता है, पर उसे सिखाने के लिए आचरण चाहिए। वह तो आप ही सिखा सकते हैं'। पूज्य गुरुदेव में साधना के परमाणु वैसे ही खचाखच भरे हैं, जिस तरह लोक असंख्य परमाणुओं से भरा है।

आचार्य महाश्रमण के रोम-रोम में, श्वास-श्वास में पवित्रता के परमाणु व्याप्त हैं, जो आगंतुकों को पवित्र बना देते हैं। आचार्य महाश्रमण की हर साधना, हर आराधना के केंद्र में आत्मा की झंकार है। उत्तराध्ययन आगम में कहा गया हैः

नाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अन्नाणमोहस्स विवज्जणाए।
रागस्स दोसस्स य संसएणं, एगन्तसोक्खं समुवेई मोक्ख॥

अर्थात् सम्पूर्ण ज्ञान का प्रकाश, अज्ञान और मोह का नाश तथा राग-द्वेष का क्षय होने से आत्मा एकान्त सुसमय मोक्ष को प्राप्त करती है। आचार्य महाश्रमण स्वयं इस आराधना में संलग्न हैं। ऐसा लगता है मानो विकृति के बाजार में वे संस्कृति का शंखनाद कर रहे हैं, ज्ञान का प्रकाश फैलाकर अज्ञान और मोह का नाश कर रहे हैं। राग-द्वेष क्षय करने का मार्ग बताकर सम्पूर्ण शिष्य समुदाय का आध्यात्मिक पथदर्शन करवा रहे हैं।

1. ज्ञान के प्रकाश से पथदर्शन :

आत्मा ज्ञान का दर्पण है। गीता में ज्ञान को नौका कहा गया है। आचार्य महाश्रमण की ज्ञान चेतना भी विलक्षण है। यथावसर बहुत उपयुक्त उदाहरणों द्वारा समझाने की उनकी कला विलक्षण है, जो आध्यात्मिक पथदर्शक होने का उत्कृष्ट उदाहरण है। आचार्य श्री महाश्रमणजी अपनी अमृतमयी वाणी से शिष्यों का दिशादर्शन करते हैंः

–सम्यग् ज्ञान वृद्धिंगत हो, जिससे बहुश्रुतता बढ़े।

–श्रुत विकास के लिए प्रज्ञा-प्रतिभा द्वारा पुरुषार्थ किया जाए।

पूज्य गुरुदेव चाहते हैं कि शिष्य संपदा आत्मसमाधि के साथ बहुश्रुतता एवं प्रबुद्धता को प्राप्त करे। इसलिए वे प्रेरणा देते हैं कि योगक्षेम वर्ष पी.एच.डी. करने का स्वर्णिम अवसर है। मुताराधना, तत्वज्ञान, तेरापंथ दर्शन आदि पाठ्यक्रमों से जुड़ने से ज्ञानवता का विकास हो सकता है।

आचार्य श्री महाश्रमणजी की प्रवचन शैली में जो सहज, सरस ज्ञानात्मकता है, वह सबको कृत-कृत्य कर देती है। नवागंतुकों को वह अनायास ही आकृष्ट कर लेती है। केवल जैन ही नहीं, कितने ही अजैन लोग कहते हैं— 'हम टी.वी. चैनल पर आचार्य श्री महाश्रमणजी का प्रवचन सुनते हैं और हमें हमारी समस्या का समाधान मिल जाता है'। उनके प्रवचन सर्वहिताय हैं। भगवद्गीता और धम्मपद प्रवचनमाला ने समन्वयवादिता को मुखर कर अलौकिक पथदर्शन दिया है।

2. अज्ञान और मोह का नाश करने का पथदर्शनः

अध्यात्म का प्रथम पड़ाव है सम्यग्दर्शन। सम्यग्दर्शन घट-घट में उजाला करने वाला है। निर्मल सम्यग्दर्शन के धारक आचार्य महाश्रमण युगद्रष्टा एवं युगस्रष्टा हैं। वे सिद्धांतप्रियता और वैचारिक औदार्य के दुर्लभ समवाय हैं। वे चिंतन की प्रौढ़ता और सूक्ष्मदर्शिता से अपने शिष्य समुदाय को अज्ञान के अंधकार के निवारण की प्रेरणा और वैराग्य को पुष्ट करने का आध्यात्मिक पथदर्शन करवाते हैं। 'अनुशासन पर्व' के माध्यम से नियमों एवं मर्यादाओं की पुनः-पुनः स्मारणा करवाकर अनुशासन का पाठ पढ़ाते हैं।

प्रेरणा दीप (सद्वाक्य):

– ज्ञाने तर्कः, आज्ञायां सतर्कः।

– सार है तो स्वीकार करो— नहीं तो परिष्कार करो।

– सहन करना थोड़ा है तो कठिन, पर लाभकारी है।

–चिंता ही करना है तो दिन भर भार क्यों ढोना,आधा घंटा बैठकर जो चिंतन करना है कर लो, फिर निश्चिंतता से अपना कार्य करो।

–अंतिम श्वास से पहले एक बार समग्र आलोचना हो जाए।

–मन का दमन, इंद्रियों का शमन; प्रतियोगी नहीं, सहयोगी बनें— उपयोगी बनें।

– शुद्धि का उपाय प्रतिक्रमण है, खुद शुद्ध रहें।

–थोड़े से भौतिक लाभ के लिए चारित्र का खजाना लुट न जाए।

ये वाक्य साधना के बीहड़ पथ पर बढ़ते साधक के लिए 'प्रेरणा दीप' बनते हैं।

3. राग-द्वेष क्षय करने का पथदर्शन :

'रागो य दोसो बीय कम्मबीयं'— राग और द्वेष कर्म के बीज हैं। बीज तभी वृक्ष बनता है जब उसे अनुकूल वातावरण मिले, अन्यथा वह निष्प्राण हो जाता है। आचार्य महाश्रमण राग-द्वेष के बीजों को न तो कषायों की खाद देते हैं, न प्रमाद और अशुभ योग का वातावरण। उनके राग-द्वेष के बीज बहुलांश रूप में निष्प्राण सम हैं। वे वीतरागता की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

उनकी सतत 'आत्मस्थता', कषाय विजय और अनुकूल-प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों में समत्व की साधना स्तुत्य है। वे 'भीतर जिएँ बाहर' के साक्षात् उदाहरण हैं। यही कारण है कि उनकी सन्निधि में जो आता है, वह पवित्रता और राग-द्वेष विमुक्ति का अनुभव करता है।

पथदर्शन के मुख्य बिंदुः

—भावों की जितनी शुद्धि रह सके, रखने का प्रयास करना चाहिए।

—ध्यान प्रतिदिन करना चाहिए; यदि समय न मिले तो ध्यान हमारी हर क्रिया में उतर जाए।

—प्रतिक्रमण और प्रायश्चित वर्तमान में वे उपाय हैं जिनसे चारित्र की निर्मलता रह सकती है।

—आसक्ति से दोषों का सेवन न हो जाए।

वर्तमान योगक्षेम वर्ष में दर्शन केंद्र पर 'नमो सिद्धाणं' के ध्यान के प्रयोग द्वारा वीतरागता की दिशा में अग्रसर होने का पथदर्शन मिल रहा है।

ऐसे दुर्लभ संयोग और कुशल नेतृत्व को आध्यात्मिक पथदर्शक के रूप में पाकर हम धन्य हैं। जब तक हम भवसागर पार न पहुँचे, यह अनुपम पथदर्शन मिलता रहे।

नाव मिली, नाविक मिले, मिली सुघड़ पतवार।
अब क्या चिंता है हमें, पहुँचेंगे भवपार॥

व्यक्तित्व की रेखाओं में आचार्य महाश्रमण

● मुनि भव्य कुमार ●

शब्द परिमित हैं व्यक्तित्व की रेखाएं अपरिमित। परिमित से अपरिमित को बांधने का प्रयास गागर में सागर भरने जैसा है। परन्तु जब यथार्थता अभिव्यक्ति पाने के लिए ललचाती है तब व्यक्ति ऐसा असंभाव्य प्रयास भी कर बैठता है। आचार्य महाश्रमण का व्यक्तित्व कुछेक रेखाओं से निर्मित है पर वे रेखाएं अत्यन्त स्फुट हैं। समस्त रेखाएं यथार्थता की परिक्रमा किये चलती हैं। अतः उन्हें श्लाघा के रंग से रंगने की आवश्यकता नहीं रहती। वास्तव में वे जो हैं वे ही हैं। इससे अतिरिक्त और कुछ नहीं। उनके व्यक्तित्व का लेखा-जोखा अनुभूति में है शब्दों में नहीं। अनुभूति चेतन है और शब्द जड़। फिर भी दृश्य लोक शब्दों के सहारे ही समझता-बूझता है। अतः हम चेतन को जड़ माध्यम से अभिव्यक्त करने का दुःसाहस करते हैं। आचार्य महाश्रमण का व्यक्तित्व चित्रण भी कुछ ऐसा ही लघु प्रयास है। आचार्य महाश्रमण का बाह्य और आन्तरिक दोनों ही प्रकार का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षक है। गौर वर्ण, मझला कद, प्रशस्त व भव्य ललाट, तीखी और उठी हुई नासिका, गहराई तक झांकते तेजोदीप्त नयन, अद्भुत कान, गीर्वाण ग्रीवा, भरा हुआ मनमोहक मुखमण्डल और भव्य संस्थान – यह है आपका प्रथम दर्शन से ही आकृष्ट करने वाला दृश्य व्यक्तित्व। आचार्य महाश्रमण का आन्तरिक व्यक्तित्व इससे भी कहीं बढ़कर है। आप एक धर्म सम्प्रदाय के आचार्य होते हुए भी सभी सम्प्रदायों की विशेषताओं का आदर करते हैं और सहिष्णुता के आधार पर उन सबमें नैकट्य स्थापित करते हैं। आप मानव में नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति के संस्कारों को जगाकर भूमण्डल पर मानवता की प्रतिष्ठा में अहर्निश लगे हैं। अथक परिश्रम आपके मानस को अपार तुष्टि प्रदान करता है।

आत्मवान् व्यक्तित्व -

जीवन के दो पक्ष हैं - एक मुख्य और दूसरा गौण। मुख्य वह है जो किसी भी स्थिति में छोड़ा न जा सके। कितनी ही व्यस्तता हो वह तो होगा ही। गौण कार्य वह है जिसे किया हो या न किया हो फिर भी चल सकता है। हुआ तो अच्छा, न हुआ तो भी अच्छा। कोई चिन्ता का विषय नहीं होता। जीवन में व्यवहार का मुख्य स्थान है या अध्यात्म का, यह एक सोचनीय प्रश्न है। यदि अध्यात्म मुख्य तो व्यवहार गौण हो जाता है और यदि व्यवहार मुख्य तो अध्यात्म गौण। वास्तव में जो मुख्य होता है वही ओजस्वी, तेजस्वी, वर्चस्वी बनाता है। आचार्य महाश्रमण इसके साक्षात् उदाहरण हैं। आचार्य महाश्रमण एक अध्यात्म पुरुष हैं और आपका मुख्य कार्य है अपनी आत्मा में स्थित रहना। आपका हर कार्य, हर लक्ष्य का केन्द्र आत्मा रहता है। वास्तव में आप एक आत्मवान् व्यक्तित्व के धनी हैं। जो आत्मवान् होता है वही विद्वान् होता है। आप आत्मवान् भी हैं और विद्वान् भी। विद्वान् को गंभीर होना चाहिए। आप सागर से भी ज्यादा गंभीर हैं। इतने ज्यादा गंभीर कि अनुत्तरदायित्वपूर्ण कोई भी बात आपके मुख से निकलती ही नहीं। न जाने कितनी-कितनी अनुकूल या प्रतिकूल बातों को आप पचा जाते हैं, भुला देते हैं।

अप्रमादी व्यक्तित्व -

आचार्य महाश्रमण का जीवन अप्रमाद-चेतना की जीवन्त मिसाल है। आपका पूरा जीवन अप्रमत्तता की अवस्था में रहा है। हर छोटी से छोटी बात, हर छोटे से छोटा कार्य में आप हमेशा पूर्ण सजग और सावधान रहते हैं। भगवान महावीर के जागरूकता के सूत्र को आपने आत्मसात् कर लिया है। इसीलिए आपका आहार संयम, वाणी संयम, निद्रा संयम और उपकरण संयम इतना प्रशस्त है कि देवता भी प्रसन्न हो जाएं। आपका जीवन भाव साधुता को पूर्ण चरितार्थ करने वाला है। कहा गया है -

क्षान्त्यादि गुण सम्पन्नो, मैत्र्यादि गुण भूषितः।
अप्रमादी सदाचारी, भाव साधुः प्रकीर्तितः।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 अप्रैल - 03 मई 2026

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

निर्मल गंगा नीर, वंदना महाश्रमण

● 'शासन गौरव' साध्वी कनकश्री ●

निर्मल गंगा नीर, वंदना महाश्रमण,
शीतल मलय समीर, वंदना ज्योतिचरण।
नेमां दुलारे हैं, अखियों के तारे हैं,
धरती के सूरज सारे विश्व के उजारे हैं,
इस युग के महावीर, वंदना महाश्रमण॥

समता की मूरत ये मुनीश शांतिदूत हैं,
श्रम के पुजारी फैला सुयश अद्भूत है।
दूगड़ कुल अवतंस की महिमा अकूत है,
गांव-गांव घूमता ये योगी अवधूत है।
नयन निहारे हैं, अनुपम नजारे हैं, धरती के सूरज...
सागर वर गंभीर, वंदना ज्योतिचरण॥

महावीर प्रभु का निनाद, सांस-सांस में,
अभय, अहिंसा, संयम मुखर विश्वास में।
समय प्रबंधन सुंदर यात्रा-प्रवास में,
चिंतन-मंथन चलता निशि दिन संघ के विकास में।
शास्ता हमारे हैं, दुनिया में न्यारे हैं, धरती के सूरज...
तेरापंथ तकदीर, वंदना महाश्रमण॥

भैक्षव शासन के ये उजले प्रभात हैं,
वीतरागी साधना है, कुंदन से अवदात हैं।
देश व्यापी यात्राएं कर जगत विख्यात हैं,
करुणा के निधान आर्य प्रज्ञा पारिजात हैं।
लाखों को तारे हैं, पार उतारे हैं, धरती के सूरज...
बदली युग तस्वीर, वंदना ज्योतिचरण॥

(धुन – करुणा के भंडार हमारे महावीरा)

संघ के पारस– आचार्य श्री महाश्रमण

● साध्वी कीर्ति प्रभा ●

गण उपवन की हर कली में, आज नव उल्लास छाया
महामहिम अभिषेक दिन पर, आस्था का उपहार सजाया

भक्ति का सागर भरा है, शक्ति का अहसास दे दो
चीर कर तम को सदा बढ़ती रहूँ, ज्योति का विश्वास दे दो

क्यों निहारूँ गगन के झिलमिल सितारे
जब धरा के सूर्य का है प्राप्त मुझको सुखद साया
उपवन गण की हर कली में, आज नव उल्लास छाया

कदम ये अविरल बढ़ें अब लक्ष्य पाने, प्रगति की अब राह दे दो
विलय हो आलस्य का पुरुषार्थ जागे, वह अमिट उत्साह दे दो

क्यों करूँ इंतज़ार क्यों दस्तक लगाऊं, स्वयं को पहचानने का गुर सिखाया
गण उपवन की हर कली में, आज नव उल्लास छाया

संघ के पारस तुम्हारा स्पर्श पाकर, लोहमयी अज्ञान की जड़ता मिटेगी
उदय होगा नव्य प्रज्ञा किरण का अब,चेतना से धूल की परतें हटेगी

क्यों सजाऊं थाल जब तुम स्वयं ही हो उत्कृष्ट मंगल
चरण इंगित पर बढ़ें संकल्प से मन को सजाया

उपवन की हर कली में, आज नव उल्लास छाया
महामहिम अभिषेक दिन पर, आस्था का उपहार सजाया

जन्मोत्सव प्रभु का आज, हम खुशी मनाते हैं

● साध्वी हिमश्री ●

जन्मोत्सव प्रभु का आज, हम खुशी मनाते हैं।
सेवा, समर्पण का संकल्प बढ़ाते हैं।।

नेमा माँ के नंदन, झुमर कुल उजियारे,
दुगड़ कुल है रोशन, जागे भाग्य हमारे।
अज्ञान अंधेरे को तुम दूर भगाते हो।।

कमनीय कीर्तिधर हो, तुम दिव्य दिवाकर हो,
रमणीय सुधाकर हो, करुणा के सागर हो।
पंचामृत की वर्षा रहते वर्षातें हैं।।

शासन नायक तेरी क्या गुण गौरव गाऊँ,
संयम में रमण करूँ, आराधक पद पाऊँ।
प्रभो! वत्सलता हम पर, हर पल दर्शाते हो।।

हे शांतिदूत प्रभुवर, हे महातपस्वी विभुवर,
हे महाश्रमण श्रुतधर, हे महाप्रज्ञ पट्टधर।
प्रभो! बनो चिरायु तुम, शुभ कामना करते हैं।।

तुलसी की कृति हो तुम, महाप्रज्ञ की उपकृति हो,
तुलसी महाप्रज्ञ द्वय की, तुम बढ़ा रहे ख्याति हो।
ईमान सत्य का पाठ, जन-जन को पढ़ाते हैं।।

(तर्ज: ए मेरे दिले नादान)

महाकीर्तिधर महाश्रमण करते चरणों में वंदन

● साध्वी कनक रेखा ●

महाकीर्तिधर महाश्रमण करते चरणों में वंदन,
महासूर्य की किरणों से आलोकित है गण उपवन।
दे दो आशीर्वाद पावन बन जाएं रे... ॥

शिशु वय में संयम धारा मां नेमा का उजियारा,
जन्मभूमि सरदारशहर मोहन मुदित बना प्यारा।
विनय, समर्पण पहचान बनाएं रे... ॥

जिनशासन की शान हो जन-जन के भगवान हो,
भिक्षुगण के मुकुटमणि संस्कृति के सम्मान हो।
करुणा के सागर अमृत बरसाएं रे... ॥

पटोत्सव दिन आया है खुशियां भर-भर लाया है,
शुभ-भावों का अर्घ्य चढ़ाकर मंगल थाल सजाया है।
त्रिभुवन सितारे यश घुंघरू बजाएं रे... ॥

युगों-युगों तक शासना मिलती रहे यह भावना,
पंचाचार की साधना बढ़ती रहे यह कामना।
विजय पताका चिहुं दिशी लहराएं रे... ॥

तर्ज: जीवन है पानी की बूंद...

महातपस्वी महाश्रमण के तप का तेज निराला है

● साध्वी काव्यलता ●

महातपस्वी महाश्रमण के तप का तेज निराला है,
चरण टिके जहाँ-जहाँ गुरुवर के फैला नया उजाला है।
कर बद्ध खड़े भक्त द्वार पर अब जादुई मुस्कान बिखेरो
रंग-बिरंगी इस दुनिया में प्रभु तू ही तो रखवाला है॥

महामहिम प्रभु का मिताहार और मितभाषिता है अचरजकारी
नयनों से बहता करुणा निर्झर बुझाता है प्यास युगोंकारी
योग क्षेम वर्ष आयोजन प्रयोग-प्रशिक्षण है मनघारी
उपशम की हम करें साधना चित्त समाधि मंगलकारी॥

महातपस्वी महाश्रमण का नेतृत्व पा हम सब निहाल हो गए
विरल व्यक्तित्व का अद्भुत आलोक पा हम सभी गुलजार हो गए।
सुधर्मा सभा में प्रभु वाणी का अमृत पान कर गुरुवर!
लगता है हम सभी मालामाल हो गए॥

महायशस्वी, महावरदायी अब करुणामय वरदान दिलाएं
सही सोच और सही नज़रिया तम को घाटो पार कराएं
मंगल पल में मंगल कल का आज आधार अभी पाऊँ मैं
प्रभु चरणों में मंगल सन्निधि में द्वार सिद्धि के खुल जाए॥

नेमानंदन को हम आज बधाईं, श्रद्धा से शीश झुकाएं

● साध्वी जागृत यशा ●

नेमानंदन को हम आज बधाईं, श्रद्धा से शीश झुकाएं,
झुमर नंदन को हम आज बधाईं भक्ति की भेंट चढ़ाएं
जन्मोत्सव की मंगल बेला मंगल भाव सजाएं।
आस्था का अक्षत ले प्रभु के भाल पे तिलक लगाएं॥ नेमानंदन...

दिव्य लोक से दिव्य संपदा, लेकर देव कुमार,
वैशाख शुक्ला नवमी को, धरती पे लिया अवतार,
तन है कोमल, मन है निर्मल, निश्छल है व्यवहार,
उदितोदित पुण्याई से, हर दिल पे हुए असवार।
भोला बचपन, चंचल चित्तवन, उसमें जागृत थी अवचेतना
सत्यं शिवं सुंदरम् के, साक्षात् रूप बन आए।
जन्मदिवस का शुभ अवसर, स्वस्तिक आज रचाएं॥ नेमानंदन को...

हे युग द्रष्टा तुमने जानी, अंतर मन की पीर।
तेरे श्रम की कहानी है, इस युग की भव्य नजीर।
नशा मुक्त अभियान आपका, युग धारा बदले।
सद्भावों के शतदल, युगो युगो तक रहे खिले।
दिव्य दिवाकर, सौम्य सुधाकर, शारदशशधर, गुणरत्नाकर
ज्योति चरण की परिक्रमा कर, ज्योतिर्मय बन जाएं।
करो अचक्का राज प्रभो! हर दिल की यही दुआएं॥ नेमानंदन को...

तर्ज— कितना सोणा तुझे

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

प्राणवान संकल्प पुरोधा पुरुषः आचार्य महाश्रमण

● साध्वी शुभ्रयशा ●

प्राणवान संकल्प वह सूर्य है जो जीवन को प्रकाश से भर देता है। जिस व्यक्ति के भीतर संकल्प रूपी सूर्य उदित हो जाता है, उसके लिए असंभव जैसा कुछ भी नहीं रहता। सिद्ध संकल्प एक जादुई पिटारा है, एक चामत्कारिक मंत्र है, जो असंभव को संभव, कठिन को सरल और दुर्लभ को सुलभ बना देता है।

सन् 1930 में महात्मा गांधी ने यह संकल्प लिया कि जब तक स्वराज नहीं मिलेगा, तब तक आश्रम में वापस नहीं लौटूँगा। उस दृढ़ संकल्प शक्ति के द्वारा उन्होंने अपना लक्ष्य प्राप्त किया। आप सब जानते हैं कि जिस बच्चे को अध्यापक ने बेवकूफ कहकर पाठशाला से निकाल दिया था, उस बच्चे को माँ के संकल्प ने विश्व का महान वैज्ञानिक एडिसन बना दिया। ऐसे एक नहीं अनेक घटना प्रसंग हैं जिनसे यह स्पष्ट होता है कि दृढ़ संकल्प जीवन का कल्पवृक्ष है। व्यक्ति उससे जो माँगे, वह मिल सकता है; किंतु ऐसा तभी संभव है, जब व्यक्ति का संकल्प सिद्ध होता है।

संकल्प सिद्धि की प्रक्रिया :

संकल्पी पुरुष केवल बड़ा काम ही नहीं करते, किन्तु वे छोटे-छोटे कामों को भी महान तरीके से करते हैं। ऐसे ही एक महान पुरुष हैं, तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण। आप संकल्प पुरोधा पुरुष हैं और आपका संकल्प प्राणवान है। ऐसा लगता है आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपने जीवन में 'भगवती सूत्र' में समागत संकल्प सिद्धि की प्रक्रिया को आत्मसात कर लिया है।

भगवती सूत्र में उल्लेख है :

आढाह परियाणह सुमरह, अट्ठम बंधह, निदानं पकरेह, ठितिपकप्पं पकरेहा

1. आदर: संकल्प का पहला सूत्र है 'आदर'। जिसके प्रति आदर का भाव नहीं होता, उस विषय का संकल्प सिद्ध नहीं होता।

2. परिज्ञा : इसका दूसरा तत्त्व है 'परिणा' (संकल्प-विषय की धारणा)। धारणा होने पर ही संकल्प की सिद्धि होती है।

3. स्मृति : तीसरा सूत्र है 'स्मृति'। संकल्पित विषय की सतत स्मृति संकल्प-सिद्धि के लिए आवश्यक है।

4. अर्थबन्ध : चौथा सूत्र है 'अर्थबन्ध'। संकल्प के प्रयोजन के साथ तादात्म्य स्थापित करने पर वह सिद्ध होता है।

5. निदान : पाँचवाँ सूत्र है 'निदान'। वृत्तिकार अभयदेव सूरि के अनुसार यहाँ निदान से तात्पर्य है—प्रार्थना विशेष। संकल्प-विषय के प्रति तीव्र अभिलाषा संकल्प-सिद्धि के लिए आवश्यक होती है। आचार्य प्रवर ने आगमानुसारी संकल्प सिद्धि की इस प्रक्रिया में अपने आपको समर्पित कर दिया है।

अडोल संकल्प के उदाहरण :

2015 में नेपाल (काठमांडू) का भूकंप दिल को दहलाने वाला दृश्य था। भूकंप के बाद भी कई दिनों तक आने वाले झटके कभी-कभी मस्तिष्क को भी झंकृत कर देते और नींद से जगा देते। ऐसी स्थिति में पूज्यवर का संकल्प मेरु की भाँति अडोल व अकम्प रहता। काठमांडू प्रवास के बाद विहार का प्रसंग आया। अनेक शुभचिन्तकों, प्रशासन के पदाधिकारियों, वरिष्ठ साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं ने भावनाएँ निवेदित कीं कि ऐसी स्थिति में आपको पाद-विहार नहीं करना चाहिए और वायुयान आदि वैकल्पिक व्यवस्था का उपयोग करना चाहिए। किसी ने तो यहाँ तक कहा कि हम आपके लिए 'चार्टर्ड फ्लाइट' या हेलीकॉप्टर की व्यवस्था करते हैं।

श्रावकों ने निवेदन किया कि आपका शरीर केवल आपका ही नहीं, पूरे धर्मसंघ का है और इसकी सुरक्षा हमारा दायित्व है। पूज्यवर ने सबके सुझावों को बड़े ध्यान से सुना और सबका आदर किया, किंतु प्राकृतिक आपदा की उस विकट परिस्थिति में भी आपने पाद-विहार का ही निर्णय किया। यह आपके प्राणवान संकल्प की जीत थी।

प्राणवान संकल्प का एक और जीवंत उदाहरण है—आचार्य तुलसी शताब्दी पर 'सौ मुनि दीक्षा' का संकल्प :

आपका यह संकल्प सवा सौ प्रतिशत सफल हुआ। संकल्प की सम्पूर्ति के लिए आपने बार-बार साधु-साध्वियों को प्रेरित किया और संकल्प की बार-बार स्मृति कर उसे सिद्धि तक पहुँचाया।

संकल्प से सिद्धि :

जैसे बूँद-बूँद से घट भरता है, वैसे ही छोटे-छोटे संकल्प भी बड़े इरादों को पूरा कर देते हैं। संकल्प तभी महत्वपूर्ण है जब संकल्पकर्ता एकलव्य की तरह लक्ष्यभेदी बाण साधने के लिए कटिबद्ध हो। इसी संकल्प शक्ति के आधार पर आपने कोरोना काल में भी लक्षित मंजिल प्राप्त की। सोलापुर से हैदराबाद व हैदराबाद से भीलवाड़ा तक की यात्रा स्वयं इसकी साक्षी है। इंदौर के श्रावक समाज ने यात्रापथ छोटा करने का अनुरोध किया, किंतु धुन के पक्के आचार्य श्री के चरण लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अनवरत गतिशील रहे।

वर्तमान परिस्थिति में 'अहिंसा यात्रा' ने यह सिद्ध कर दिया कि संकल्प शक्ति के द्वारा असंभव को संभव किया जा सकता है। संकल्प से व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है और आत्मशक्ति का जागरण होता है। विश्व में जिसने भी उन्नति की है, उसके पैरों की गति के साथ मस्तिष्क में संकल्प की सृजनशील तरंगें भी गतिशील रही हैं। राम हों या रहीम, गांधी हों या विनोबा, आचार्य श्री भिक्षु हों या आचार्य जयाचार्य अथवा आचार्य तुलसी हों या आचार्य महाप्रज्ञ—सभी की आत्मकथाएँ संकल्प शक्ति के जागरण का शंखनाद करती हैं।

किसी ने कहा है— जो संकल्प शक्ति का प्रज्ज्वलित दीपक अपनी हथेली पर रखकर चलता है, अंधियारी राहें स्वयं आलोकित होकर उसका पथदर्शन करती हैं।

आचार्य श्री महाश्रमण एक प्राणवान संकल्प पुरोधा पुरुष हैं। आपके जीवन की हर गतिविधि में संकल्प की सुवास आती है। ऐसे प्राणवान संकल्प पुरोधा पुरुष को शत्-शत् प्रणाम!

तीर्थंकर के प्रतिनिधि महाश्रमण–सु–प्रज्ञप्त

● साध्वी कमनीयप्रभा ●

दसवे आलिय आगम के चतुर्थ अध्ययन में एक शब्द आता है— 'सुपण्णत्ता'। सुपण्णत्ता - सु-प्रज्ञप्त - इसका अर्थ है — 'जिस प्रकार प्ररुपित किया गया है उसी प्रकार आचीर्ण किया गया है'। अर्थात् भगवान महावीर ने जो कहा वही आचरण किया या यों कहें जो आचरण किया वही उपदेश दिया। तीर्थंकर प्रतिनिधि आचार्य महाश्रमण जी भी जो कहते हैं उसका आचरण करते हैं या यों कहें जो आचरण करते हैं वही उपदेश देते हैं। आचार्य महाश्रमण जी के सानिध्य में जो आता है अथवा उनके निकट या दूर रहता है, वह इसका साक्षात् अनुभव कर सकता है कि आचार्य महाश्रमण जी के जीवन में कथनी-करणी की समानता है। इस सु-प्रज्ञप्त शब्द के आलोक में यदि हम पूज्यवर के जीवन का पर्यवेक्षण करते हैं तो ज्ञात होता है कि उनका जीवन दर्शन सूक्त से अभिमण्डित है। आचार्य महाश्रमण जी अपने प्रवचन में ये सूत्र फरमाते हैं:

—मेरा संयम मुझे प्यारा है।
—मेरा संघ मुझे प्यारा है।
—मेरा सुगुरु मुझे प्यारा है।

1. मेरा संयम मुझे प्यारा है

मुनि सुमेरमल जी (लाडनूं) का सरदारशहर वि.स. 2030-31 का चातुर्मासिक प्रवास, बालक मोहन के लिए संयम की राह को प्रशस्त करने वाला सिद्ध हुआ। 11 वर्षीय बालक मोहन के सामने जब मुनि श्री सुमेरमल जी ने एक निर्णय करने का निर्देश दिया— 'आज तुम्हें एक निर्णय करना चाहिए कि तुम्हें साधु बनना है या गृहस्थ जीवन में ही रहना है'। तब बालक मोहन ने एकान्त में बैठकर अपने भविष्य का चिन्तन प्रारम्भ किया। आचार्य कालूगणी का जप करके आत्मा के हित-अहित का अनुचिन्तन किया। बालक मोहन ने सोचा— साधु जीवन कठिन है तो गृहस्थ जीवन में भी अनेक कठिनाइयाँ हैं। कहीं भी रहो कठिनाई तो झेलनी ही है, किन्तु जहाँ साधु जीवन मोक्ष ले जाने वाली सरणि है, वहीं गृहस्थ जीवन अधोगति का कारण है। साधु जीवन से 15 भवों में ही मुक्ति संभव है। भीतर का दीपक जल उठा और बालक मोहन संयम स्वीकारने हेतु, साधु बनने हेतु कृत-संकल्प हो गया।

2. मेरा संघ मुझे प्यारा है

मुनि मुदित के बाल जीवन की यह घटना हर साधु के लिए आदर्श रूप है। यह एक प्रसिद्ध घटना है— सन् 1979 मुनि मुदित के दिल्ली प्रवास की, जब मुनि मुदित मुनि रूपचन्द जी के साथ में थे। रूपचन्द जी ने कहा— 'मुदित! मैं संघ से अलग होने जा रहा हूँ, तुम अपना चिन्तन कर लो तुम्हें कहाँ रहना है? हमारे साथ चलना है या यहीं संघ में रहना है'।

सतरह वर्षीय बाल मुनि मुदित ने तत्काल कहा— 'मैं तो संघ में ही रहूँगा'। यह निर्णय करने के बाद मुनि मुदित युवाचार्य महाप्रज्ञ जी के पास अणुव्रत भवन में चले गए। यह खबर सुन युवाचार्य महाप्रज्ञ जी ने फरमाया— 'यह तो मुझे विश्वास ही था'। पंजाब यात्रा में यात्रायित आचार्य तुलसी ने संदेश के माध्यम से मुनि मुदित की प्रशंसा करते हुए फरमाया— 'मुनि मुदित ने इतनी छोटी अवस्था में भी जिस शालीनता और संघनिष्ठा का परिचय दिया है, वह सब बाल साधुओं के लिए अनुकरणीय है'। यह थी मुनि मुदित की संघ के प्रति गहरी निष्ठा, जिसने उनके जीवन की आरोहण यात्रा का प्रारंभ कर दिया।

3. मेरा सुगुरु मुझे प्यारा है

आचार्य महाश्रमण जी के जीवन में गुरु के प्रति विनय और समर्पण बेजोड़ है। जिसकी संयम के प्रति गहरी निष्ठा होती है और जो संघ निष्ठा से परिपूरित होता है, वही व्यक्ति गुरु के करीब होता है। वास्तव में गुरु ही हैं जो हमें संघनिष्ठा और संयमनिष्ठा की प्रेरणा देते हैं।

आचार्य महाश्रमण जी के जीवन का हर पन्ना गुरु भक्ति के भाव उजागर करता है। युवाचार्य मनोनयन पर आपने कहा— 'गुरु का वात्सल्यभाव मुझे मिलता रहे। मैं गुरुभक्ति और गुरु आज्ञा को बहुत महत्त्व देता हूँ और भविष्य में भी देता रहूँगा। मेरे मन में अपने गुरु आचार्य श्री महाप्रज्ञ के प्रति परमभक्ति का भाव है। उनकी दृष्टि की अनुपालना के लिए मुझे बड़े से बड़ा कष्ट भी झेलना पड़े तो वह भी सहर्ष स्वीकार है'।

आचार्य पदाभिषेक पर भी आपने कहा— 'आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ का वरद सानिध्य, महत्त्वपूर्ण पथदर्शन मुझे प्राप्त हुआ। दोनों धर्मगुरुओं के प्रति मैं श्रद्धाप्रणत हूँ'। आपने गुरुभक्ति का अद्वितीय उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा— 'परम श्रद्धेय आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा प्रारंभ और पोषित गतिविधियों को यथौचित्य संचालित करने का प्रयत्न करता रहूँगा'। आपने पूज्य गुरुदेव आचार्य महाप्रज्ञ जी के अधूरे संकल्पों को पूर्ण करने का निर्णय लिया और वर्ष 2011 का केलवा में व 2012 का जसोल में चातुर्मास तथा मर्यादा महोत्सव कर गुरु वचनों को अमोघ किया। जब भी कोई विशेष कार्य प्रारंभ करना हो, तो आचार्य तुलसी के गीत की ये पंक्तियाँ आपके सम्बोधन में समाहित होती हैं:

'बात-बात प्रवचन-प्रवचन में, गण-गणपति रो नाम। सरल कसौटी सुविनीता री, दो चावल कर थाम ॥'

आचार्य महाश्रमण जी के जीवन में परिलक्षित ये सूत्र हमारे जीवन को भी सुंदर व प्रशस्त बनाएँ, यही मंगल कामना है।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 अप्रैल - 03 मई 2026

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

महायोगी महात्मा : आचार्य महाश्रमण

● साध्वी अक्षयप्रभा ●

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी ने एक गीत में कहा है— **'साधना ही शान्ति का आधार है, योग विरहित जिंदगी बेकार है'**

शान्ति हर मानव को चाहिए। शान्ति के स्रोत भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। बचपन, यौवन और वृद्धावस्था में शान्ति के विविध साधन व्यक्ति चाहता है। शाश्वत, स्थायी शान्ति के लिए योग ही एक मात्र साधन प्रतीत होता है। योगाचार्य हरिभद्रसूरि ने अपने योगग्रंथों में उन सब साधनों को योग कहा है, जिनसे आत्मा विशुद्ध होती है, कर्ममल का नाश होता है और उसका मोक्ष के साथ संयोग होता है। गुरुदेव तुलसी ने अपने योगविषयक ग्रंथ 'मनोनुशासनम्' में योग को परिभाषित करते हुए कहा है— मनोवाक्कायानापानेन्द्रियाहाराणां निरोधो योगः अर्थात् मन, वचन, काय, श्वास, इन्द्रिय एवं आहार का निरोध योग है। युग युगान्तर से भारतीय साधना योग से अनुप्राणित रही है। योगसाधना के दो रूप हैं— बाह्य रूप एवं आभ्यन्तर रूप। योग साधना का बाह्य रूप एकाग्रता है और यही एकाग्रता योग का शरीर है। साधक एकाग्रता संपन्न है, पर यदि 'मैं' और 'मेरेपन' का भाव नहीं छूटा है, उस साधक की साधना व्यावहारिक साधना है। 'मैं' और 'मेरापन' के भावों को तिलांजलि दिए बिना साधक के योग स्थिर नहीं बन पाते। समत्व भाव का विकास नहीं हो पाता एवं उसके बिना योगसाधना भी असंभव सी लगती है। बिना योगसाधना साध्य सिद्धि में परिणत नहीं हो सकता। मैं और मेरा (अहंभाव, ममभाव) आदि मनोविकारों का अभाव योगसाधना का आभ्यन्तर रूप है। ममत्व का परित्याग ही योग की आत्मा है। जिस साधक में मनोविकारों का अभाव है या बहुत कम है, वही साधक सच्चा योगी है, वही साधक पारमार्थिक योगी है, वही साधक साध्य को सिद्धि तक पहुंचा सकता है। गीताकार ने साधक की ऐसी साधना को समत्व योग की संज्ञा से अभिहित किया है। ऐसे योग को धारण करने वाले व्यक्ति की जिंदगी भी सफल, सफलतर और सफलतम बन जाती है। युगप्रधान जीवंतयोगी महाश्रमणजी के जीवन पर दृष्टिपात करें, तो ऐसा लगता है कि उस महायोगी की योग साधना में योग के बाह्य एवं आभ्यन्तर दोनों रूपों का अद्भुत समन्वय दिखता है। उनके मन-वचन-काय की एकरूपता उन्हें समत्व योगी के रूप में प्रतिष्ठित करती है। 'मैं' और 'मेरेपन' के भावों से मुक्ति उन्हें एक पारमार्थिक योगी के रूप में प्रतिष्ठित करती है। विश्व विभूति महाश्रमणजी सहजसिद्ध एकाग्रता के धनी हैं। उनके मन-वचन-काया में महान सुयोग है, इसलिए ही वे नए-नए कीर्तिमान गढ़ते जा रहे हैं। बाह्य विक्षेप भी उनकी साधना में बाधक नहीं बन पाते हैं। अलबेले योगी की सघन एकाग्रता एवं दृष्टि की पवित्रता से मनोविकार भी उन पर आक्रमण नहीं कर पाते हैं। 'सव्वं मे अकरणिज्जं पावं' इस आगम वाक्य की आराधना द्वारा योग के स्वरूप की जीवन में जीवंत सिद्धि कर वे जीवन का मधुर संगीत भव्य प्राणियों को सुना रहे हैं। अंतःकरण में प्रश्न उठ रहा है कि इस योग का अधिकारी कौन हो सकता है? जैन योग साहित्य में अभिनव युग के जन्मदाता जैन योग के पुनरुद्धारक आचार्य हरिभद्र ने 'योगविंशिका' ग्रंथ में चारित्रशील एवं आचारनिष्ठ साधक को योग का अधिकारी माना है। 'योगबिन्दु' में मिथ्यात्व का भेदन करने वाले एवं शुक्लपक्षी को योग-साधना का अधिकारी कहा है तथा योगाधिकारी जीवों के चार स्तर भी निर्धारित किये हैं:

1. अपुनर्बन्धक
2. सम्यग्दृष्टि
3. देशविरति
4. सर्वविरति

तेरापंथ के ग्यारहवें अधिशास्ता अनुत्तर दर्शनाचार के धारक अनुत्तर योगी श्री महाश्रमणजी चारित्राचार और आचारनिष्ठा में अग्रणी साधक हैं। वे महावीर परंपरा के सर्वविरति साधक हैं एवं दुनिया को भी पापविरति का संदेश देते हैं। जीवन का उच्च पुरस्कार और उसका महान भाग्य यही है कि मनुष्य किसी कार्य विशेष के लिए जन्म ले; ऐसा लगता है जन्मसिद्ध योगी महाश्रमण ने इमर्सन के इस कथन को सार्थकता प्रदान की है एवं दुनिया को बुराइयों से बचाने के लिए ही जन्म धारण किया है। अपनी योगसाधना से वे योगयुक्त जीवन की महत्ता प्रतिपादित कर रहे हैं। चारित्र के अंतर्गत योगाचार्य हरिभद्र द्वारा निर्दिष्ट पांच योग-भूमिकाएं— अध्यात्म, भावना, ध्यान, समता और वृत्ति संयम— फक्कड़ योगी महाश्रमण के जीवन में प्रतिक्षण गूंजते हुए दिखाई देते हैं। उनकी हर क्रिया ध्यान-योगमय है, इसलिए ही उनके व्यक्तित्व में हर स्थिति में उत्कृष्ट समत्वयोग की स्थिति है। योग के विविध प्रयोगों से साधना की भट्टी में वे काया को तपा रहे हैं। दुनिया उनको महायोग साधक के रूप में देख रही है। योग विरहित जिंदगी बेकार क्यों है? इस प्रश्न का समाधान भगवद् गीता में मिलता है। वहां बताया गया है:

युक्ताहारविहारस्य, युक्तचेष्टस्य कर्मसु।
युक्तस्वप्नावबोधस्य, योगो भवति दुःखहा॥

जिसका आहार-विहार युक्त (संयत) है, कर्म में जिसकी चेष्टाएं युक्त हैं, जिसका सोना और जागना युक्त है— इस योग से उसके सारे दुःख मिट जाते हैं। इससे बड़ी उपलब्धि और क्या हो सकती है। योग रहित जीवन दुःखमय बन जाता है। योगयुक्त आत्मा अलौकिक योगी के रूप में सामने आती है। योगविभूति महाश्रमणजी योगयुक्त विशुद्धात्मा के रूप में हमारे आदर्श हैं। कल्याण का इच्छुक हर प्राणी स्वयं को योगसाधना में योजित कर योगयुक्त विशुद्धात्मा बनने की ओर अपने कदमों को गतिशील करे ताकि सब दुःखों से मुक्ति की ओर अग्रसर हो सके। अपने योगों की शक्ति-संपन्नता से जीवन की साधकता सिद्ध कर सके। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य का अचूक उपाय भी योगासन है। यहाँ योग शब्द आसन, प्राणायाम आदि अर्थों में प्रयुक्त है। यह योग शरीर को साधना के अनुकूल बनाने में सहायक बनता है।

अनन्त शक्तियों की प्रकाशपुंज आत्मा के मन, वचन, काय के योग जब अपनी चंचल वृत्तियों-प्रवृत्तियों पर नियंत्रण कर लेते हैं, विषयग्रह की शून्यता को प्राप्त हो जाते हैं, विशद और निर्मल बन जाते हैं, तब ऐसी आत्मा योगयुक्त आत्मा कहलाती है। वही जीवन की सार्थकता को सिद्ध करने वाली आत्मा होती है। योगयुक्त महात्मा महाश्रमण को जन्मोत्सव और पट्टोत्सव पर श्रद्धायुक्त नमन। योगयुक्त आत्मा का पवित्र योग ही जीवन में सफलता का महामंत्र है। यह पवित्र योग ही आत्मविकास में अहम भूमिका निभाता है। यह पवित्र योग ही साध्यसिद्धि का सोपान है। योगयुक्त साधक की यह योगसाधना ही लौकिक व लोकोत्तर सभी लब्धियों की प्राप्ति का कारण है। आओ करें योग के द्वारा आत्म कल्याण!!!

विलक्षण संघ : विलक्षण गुरु

● डॉ. साध्वी परमयशा ●

आँधियों से कह दो वे औकात में रहें..
हम पेड़ों से गिरने वाले पत्ते नहीं हैं।

A great person

आचार्य महाश्रमण एक ऐसा नाम है, जिनके चारों तरफ महिमा, गरिमा, भव्यता, दिव्यता का दर्शन होता है। ज्योतिचरण जो भी करते हैं चिंतन, मनन, मंथन के साथ करते हैं। यही वजह है यह राष्ट्र, यह देश, यह दुनिया उन्हें श्रद्धा से नमन करती है। 100 year Calendar सिर्फ 100 वर्षों का लेखा-जोखा दे सकता है पर आचार्य श्री महाश्रमणजी के व्यक्तित्व में भगवान ऋषभ से महावीर की हजारों वर्षों की परंपरा प्रतिबिम्बित होती है। इसलिए कहा गया है -

'मूल्य व्यक्ति का नहीं उसके व्यक्तित्व का होता है।

मूल्य नेता का नहीं उसके नेतृत्व का होता है।

मूल्य वक्ता का नहीं उसके वक्तृत्व का होता है।

मूल्य कर्त्ता का नहीं उसके कर्तृत्व का होता है।'

A Polite person

विनम्रता का वैभव है महामहिम का कर्तृत्व। वे तेरापंथ शासन के सम्राट हैं क्योंकि विनय-विवेक उनके रोम-रोम में बसे हैं। अपने से बड़ों को यूं वंदना करते हैं जिसे देखकर सकल समाज रोमांचित हो जाता है। शासन माता को आप दर्शन देने दिल्ली पधारे जब मस्तक झुकाकर वंदना करना एक ऐसा पहलू था जो जन-मन के अंतस् में बस गया। ऐसे सैकड़ों प्रसंग अद्वितीय असाधारण विनम्रता के इतिहास को स्वर्णाक्षरों से गौरवान्वित करते हैं। विनम्रता को सीखना है तो उसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण होगा जय-जय ज्योतिचरण का जीवन दर्शन।

A Projective Person

एक विशाल विशद प्रोजेक्ट के साथ महामहिम का कारवां जिधर से गुजरता है राहें रोशन हो जाती हैं। राहें नूरानी हो जाती हैं। जंगल मंगल बन जाता है। वह प्रोजेक्ट चाहे अर्हत् - वाङ्मय का संपादन हो, जैन दर्शन तेरापंथ दर्शन का हो, इस प्रोजेक्ट ने जन-जन को आकर्षित किया है। गजब के लीलापुरुष हैं आचार्य प्रवर। जिनके पास तीन-तीन आचार्यों के अनुभवों का खजाना है। जिन्हें विरासत में मिली है इस यशस्वी गणनायक गुरुओं की महान परंपरा।।

A Happy Person

अहिंसा यात्रा के दौरान जो उतार-चढ़ाव आए, चाहे वह काठमांडू का भूकंप हो या हैदराबाद प्रवास से पूर्व का कोरोना वायरस हो। हर परिस्थिति में गुरुदेव की मनःस्थिति सम स्थिति में रहना एक ऐसा सदाबहार गुलदस्ता है जिसने भी इस गुलदस्ते को देखा वह चकित विस्मित हो गया। परम पावन की मनमोहक मुस्कान प्रतिकूलता में अनुकूलता का अहसास वीतरागकल्प की पारदर्शिता का परिचायक है। जिसके लिए कहा जा सकता है - 'आंधियों को भी कह दो वे औकात में रहें। पेड़ों से गिरने वाले हम पत्ते नहीं हैं।।'

A Healthy Person

गुरुदेव जब दोनों हाथ ऊपर करके जयकारा दिलाते हैं, मंगलपाठ फरमाते हैं, तब सुनने वाले श्रावक श्राविकाएं खुशहाल खुशनसीब हो जाते हैं। शक्ति और भक्ति का अहसास करते हैं, पर गुरुदेव का तन-मन रोम-रोम हर धमनी और शिरा रक्त की हर बूंद ताजगी से तंदुरुस्त हो जाती है। ऐसे भाग्यवान गुरु भाग्यशालियों को मिलते हैं।।

An Attractive Person

एक विचारक रॉबिन ने वकालत शुरू की। उसने महान विचारक से पूछा - मुझे क्या करना चाहिए? महान व्यक्तित्व ने कहा - तुम इतने दक्ष बनो कि आपको कोई अनदेखा न कर सके। आपके बिना फर्म का काम न चल सके। भले जैन हो या अजैन, भक्त हो या अभक्त, आस्तिक हो या नास्तिक। जो एक बार महानायक के वचनों को सुन लेता है, उनके करिश्माई प्रभामंडल में आ जाता है, वह सदा-सर्वदा के लिए यों आकृष्ट हो जाता है कि बार-बार दर्शन, देशना व सेवा की चाहत लिए मन-मस्तिष्क में बस जाती है। वंदना अभिवंदना शत-शत बार।।

'जिनके चरण कमल में लक्ष्मी का निवास रहे।
जिनका मुख कमल प्रसन्नता से प्रफुल्ल रहे।
जिनके नयन कमल से अमृत बरसता रहे।
जिनके कर कमल से आशीर्वाद मिलता रहे।।

साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के चयन दिवस पर हृदयोद्गार

प्रमुखा श्री के चयन दिवस पर रूँ-रूँ हर्ष अपार

● मुनि कमल कुमार ●

प्रमुखा श्री के चयन दिवस पर रूँ-रूँ हर्ष अपार
महाश्रमण गुरु सूझ-बूझ को सरा रहा संसार
सरा रहा संसार खूब गण आन बढ़ाई
साध्वी विश्रुत विभा जी नवमी प्रमुखा जी कहलाई
प्रांजल लेखक प्रवर भाषिणी अनगिन गुण भंडार
प्रमुखा श्री के चयन दिवस पर रूँ-रूँ हर्ष अपार ।।1।।

तुलसी गुरु के मुख कमलों से संयम सुरमणी पाया
समणी से साध्वी बनने से हुआ है काम सवाया
हुआ है काम सवाया देश विदेश की की यात्राएं
हिंदी संस्कृत प्राकृत इंग्लिश विविध सीखी भाषाएं
आगम का अध्ययन तलस्पर्शी सबके मन को भाया
तुलसी गुरु के कर कमलों से संयम सुरमणी पाया ।।2।।

महाप्रज्ञ ने देख योग्यता नूतन पद बक्साया
नियोजिका पद देकर गण में नव इतिहास रचाया
नव इतिहास रचाया खूब ही वाह-वाह पाई
तप-जप सुश्रम करके गण की शान बढ़ाई
सहिष्णुता व विनम्रता से वर व्यक्तित्व बनाया
महाप्रज्ञ ने देख योग्यता नूतन पद बक्साया ।।3।।

भिक्षुगण की नवमी प्रमुखा तपी-तपाई आई
हर कार्यों में देख दक्षता अणु-अणु में तरुणाई
अणु-अणु में तरुणाई स्वास्थ्य का ध्यान रखवावें
हम भी कुछ कर सकें हमें ऊर्जा दिलवावें
गुरु दृष्टि की पूर्णाधिक जन-जन के मन भाई
भिक्षुगण की नवमी प्रमुखा तपी-तपाई आई ।।4।।

जीवन अर्पण हृदय समर्पण, इंगित पर बढ़ जाएँगे

● साध्वी रतिप्रभा ●

जीवन अर्पण हृदय समर्पण, इंगित पर बढ़ जाएँगे
इंगित पर बढ़ जाएँगे ॥

भैक्षव शासन नन्दनवन में चमका भाग्य तुम्हारा २
नेमानन्दन ने दिखलाया, गण ने भव्य नजारा २
हर्षित पुलकित साध्वीगण सारा, मंगल तिलक लगाएँगे
इंगित पर बढ़ जाएँगे ॥

अध्यात्म धरा पर बढ़ो सदा हम, सभी तुम्हारे साथ हैं २
रुकें न पल भर चरण हमारे, बढ़ें सदा निर्बाध ही
तर जाएँगे भवसागर को, जीवन में अलख जगाएँगे २
इंगित पर बढ़ जाएँगे ॥

अप्रमत्त साधिका बन, अपना जीवन बनाया है २
गुरुओं का आभामंडल पा, निज पौरुष जगाया है २
हम भी प्रेरणा लें हर पल की, दिव्य स्रोत पा जाएँगे २
इंगित पर बढ़ जाएँगे ॥

शुभ भावों का स्वस्तिक रच हम, तुमको आज बढ़ाएँ
स्वस्थ रहो आत्मस्थ रहो तुम, मंगल दीप जलाएँ
चिन्मयता की सौरभ पाकर, भीतर में रम जाएँगे २
इंगित पर बढ़ जाएँगे ॥

(लय – राधा बिना है...)

संघ क्षितिज पर मेघ धनुष यह नवरंगा उभरा है

● साध्वी कनकश्री 'लाडनूँ' ●

संघ क्षितिज पर मेघ धनुष यह नवरंगा उभरा है।
साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी का जीवन निखरा है ॥
साध्वी समुदाय हरा-भरा है, गीतों से मन भरा-भरा है ॥

चंदेरी की कीर्तिकौमुदी, मोदी कुल की ज्योति,
महाप्राण की जन्म धरा पर, निपजा उजला मोती।
लाड सती और कनकप्रभाजी की अभिराम धरा है ॥
(तेरापंथ की राजधानी वह सचमुच वसुंधरा है ॥)

प्रतिभा और प्रबंधन पटुता की नैसर्गिक क्षमता,
अनुशासन में भी अपनापन, व्यवहारों में मृदुता।
लहरों-सा उत्साही मानस, श्रुत वैभव गहरा है ॥

ध्यान योग, स्वाध्याय योग, कायोत्सर्ग का संगम,
साम्य योग है सधा हुआ, प्रेरक नियमित जीवन क्रम।
अपने पर अपना अनुशासन का प्रतिपल पहरा है ॥

योगीश्वर श्री महाप्रज्ञ की कृपा अनन्या पाई,
महाश्रमण ने दी साध्वीप्रमुखा पद की ऊंचाई।
गुरु करुणा से युग अनुरूप मिली साध्वी प्रवरा है ॥

स्वर्णिम हो हर प्रात आपका, रजतमयी हर रजनी,
जीओ वर्ष हजारों, स्वस्थ रहो, दो कृतियाँ वजनी।
वर्धापन करने नभ से कोई, ज्योतिपुंज उतरा है ॥

युगप्रधान की सन्निधि, नन्दनवन की सुषमा न्यारी,
अंतरंग परिषद की आभा है अतिशय मनहारी।
परितः प्रतिभा पारिजात का पुण्यपुंज बिखरा है ॥

लय – मांय न मांय...

खुशियों का मौसम आया, मंगल गाएँ

● साध्वी प्रेक्षाप्रभा ●

खुशियों का मौसम आया, मंगल गाएँ।
श्रमणीवृंद को मिलजुलकर, आज बढ़ाएँ ॥
श्रद्धा के सुमनों से, भाव सजाएँ।
श्रमणीवृंद को, मिलजुलकर आज बढ़ाएँ ॥

सविता से स्मित प्रज्ञा की विशद कहानी।
विश्रुतविभाजी, साध्वी प्रमुखा सुहानी।
नमन श्री चरणों में, चयन दिन मनाएँ ॥

शरद पूर्णिमा जैसी, उज्ज्वल साधना।
स्वाध्याय रोशनी से, प्रभु पथ आराधना।
साँसों की सरगम तेरी, गाएँ बजाएँ ॥

श्री महाप्रज्ञ सन्निधि, बनी वरदायी।
महातपस्वी की शुभ दृष्टि सवाई।
खुशहाली छायी गण में, नयन मुस्काएँ ॥

ऊर्जा का निर्झर पावन, करुणा का आलम।
तनुरत्न रहे हरदम, तेरा निरामय।
सपने साकार हों सब, कदम बढ़ाएँ ॥

लयः तुम्ही मेरे मंदिर

मनोनयन शुभ नयन का, विश्रुत मृदु व्यवहार

● साध्वी स्वर्णरेखा ●

मनोनयन शुभ नयन का, विश्रुत मृदु व्यवहार,
धैर्य स्थैर्य की आकृति, दिया प्रभु ने भार ॥

निर्मल काया पर अंकित, भाव शुद्धि का तेज,
सबके प्रति समत्व चिन्तन और हृदय में हेज ॥

कोमल भाव बिछे हैं दिल में, पास विविध विद्याएँ,
ज्ञान-प्रकाश दिखाती जाओ, मिट जाएँ दुविधाएँ ॥

नयन-प्यालियों से अमृत रस, युगों-युगों तक पाएँ,
चढ़ो कीर्ति के शिखरों पर, गौरव के शंख बजाएँ ॥

छंद-छंद में तेरी अर्चा, सांस-सांस में दृष्टि,
शब्द-अर्थ ज्यों गौरव गाएँ, यही है मेरी सृष्टि ॥

आज आपके मनोनयन पर, उर से सुर हैं निकले,
करूँ गुणों का वर्णन,
अपना सब कुछ अर्पण कर दूँ, करती रहूँ नमन ॥

महाश्रमण की पावन सन्निधि में चयनोत्सव की सदी मनाएं

● साध्वी पराग प्रभा ●

युगों-युगों तक मिले शासना, भावों का दीपक आज जलाएं
प्रबल पुण्य के प्रबल उदय से, नंदनवन हमने पाया ॥

है मोक्ष मार्ग की साधिका, ऐसा क्या है आपमें
जो देखे आपको तो शासन माता दिखती हैं आपमें
इतनी सादगी, इतनी सहिष्णुता कैसे आई आपमें
तेरापंथ का नया इतिहास दिखता है आपमें।

हैं गुण सम्पन्न आत्मा, ऐसा क्या है आपमें
गुलाब सती की छवि दिखती है आपमें
इतना विवेक, इतना विनय कैसे आया आपमें
इतना व्यवहार, इतना समर्पण कैसे आया आपमें
है वत्सलता का झरना, संघ का गौरव दिखता है आपमें ॥

हैं मुख मुस्कान वाली विश्रुतविभा जी, ऐसा क्या है आपमें
कनककुमारी जी जैसी गंभीरता है आपमें
इतनी मधुर अमृतवाणी कैसे आई आपमें
इतनी श्रद्धा भक्ति कैसे आई आपमें
गुरु महाश्रमण की दृष्टि में ही सृष्टि मन भाई आपमें
गुरु महाश्रमण के संकल्प की अनुप्रेक्षा दिखती है आपमें ॥

हैं पंचमगति का जीव, ऐसा क्या है आपमें
पन्ना जी जैसी अनासक्ति दिखती है आपमें
इतनी वीरता, धीरता कैसे आई आपमें
इतना संकल्प मजबूत हुआ कैसे आपमें
इतनी कार्य कुशलता का 'कार्बोहाइड्रेट' कैसे आया आपमें
हैं चौथे अर का जीव तेरे ये गुण संप्रेषित कर दो मुझमें
सती शिरोमणि का रूप दिखता है आपमें ॥

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 अप्रैल - 03 मई 2026

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धासिक्त वंदन

Acharya Tulsi
Diagnostic Centre
Dental Care

**M. C. Layout, Hampinagar, Magadi Road,
Kamakshipalya, Nagarbhavi, Mudalpalya, Attiguppe**

:: श्रद्धाप्रणत ::

तेरापंथ युवक परिषद्, विजयनगर

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

"एक अच्छा संकल्प भी अनेक समस्याओं से बचाने वाला हो सकता है।
अपेक्षा है कि उसका निष्ठा के साथ पालन हो।
वह तुम्हारा अभिन्न व सच्चा मित्र होगा।"

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर वंदन, अभिवंदन

:: श्रद्धाप्रणति ::

तेरापंथ युवक परिषद्, भीलवाड़ा

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

दो जीवन-शैलियां हैं–
1. अहिंसा प्रधान जीवन-शैली, 2. हिंसा प्रधान जीवन-शैली।
पहली जीवन-शैली शांति का मार्ग है।
दूसरी जीवन-शैली अशांति का मार्ग है।
तुम किसे चुनना चाहोगे?

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर नमन

Acharya Tulsi®
Diagnostic Centre
Dental Care

AcharyaMahapragya
Medicals

पूर्वांचल कोलकाता

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026-2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

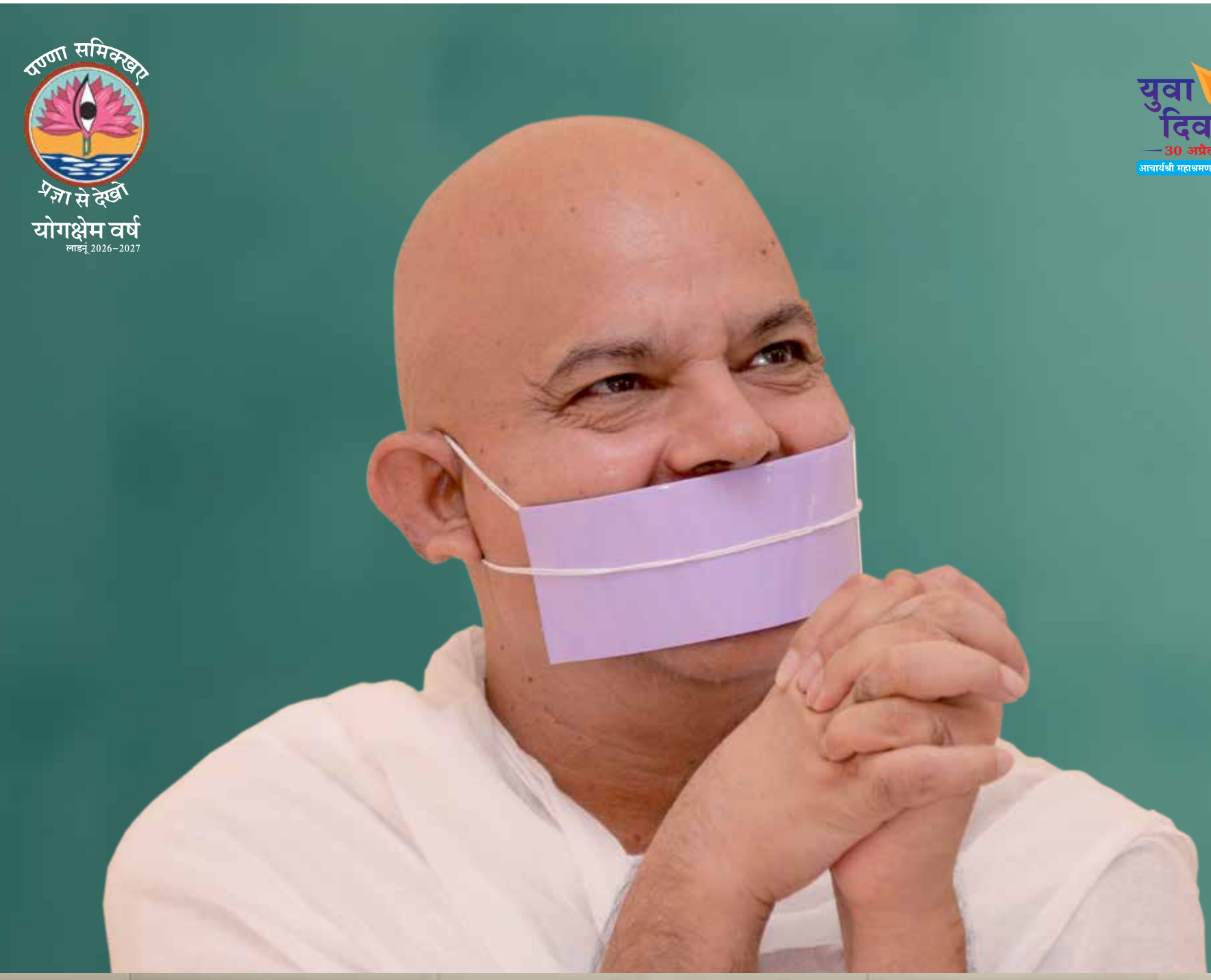

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर नमन

:: अभिवन्दना ::

श्रीमती सुशीलादेवी-श्री अनूपकुमार दूगड़,
श्रीमती पुष्पा-श्री पंकज, श्रीमती निर्मला-रोहित, श्रीमती नीलम-सिद्धार्थ
भाग्यश्री, विनय, प्रथम, अनन्या, तेजस, मानवी दूगड़
सरदारशहर (मेहरी वाले)-जोरहाट (असम)

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

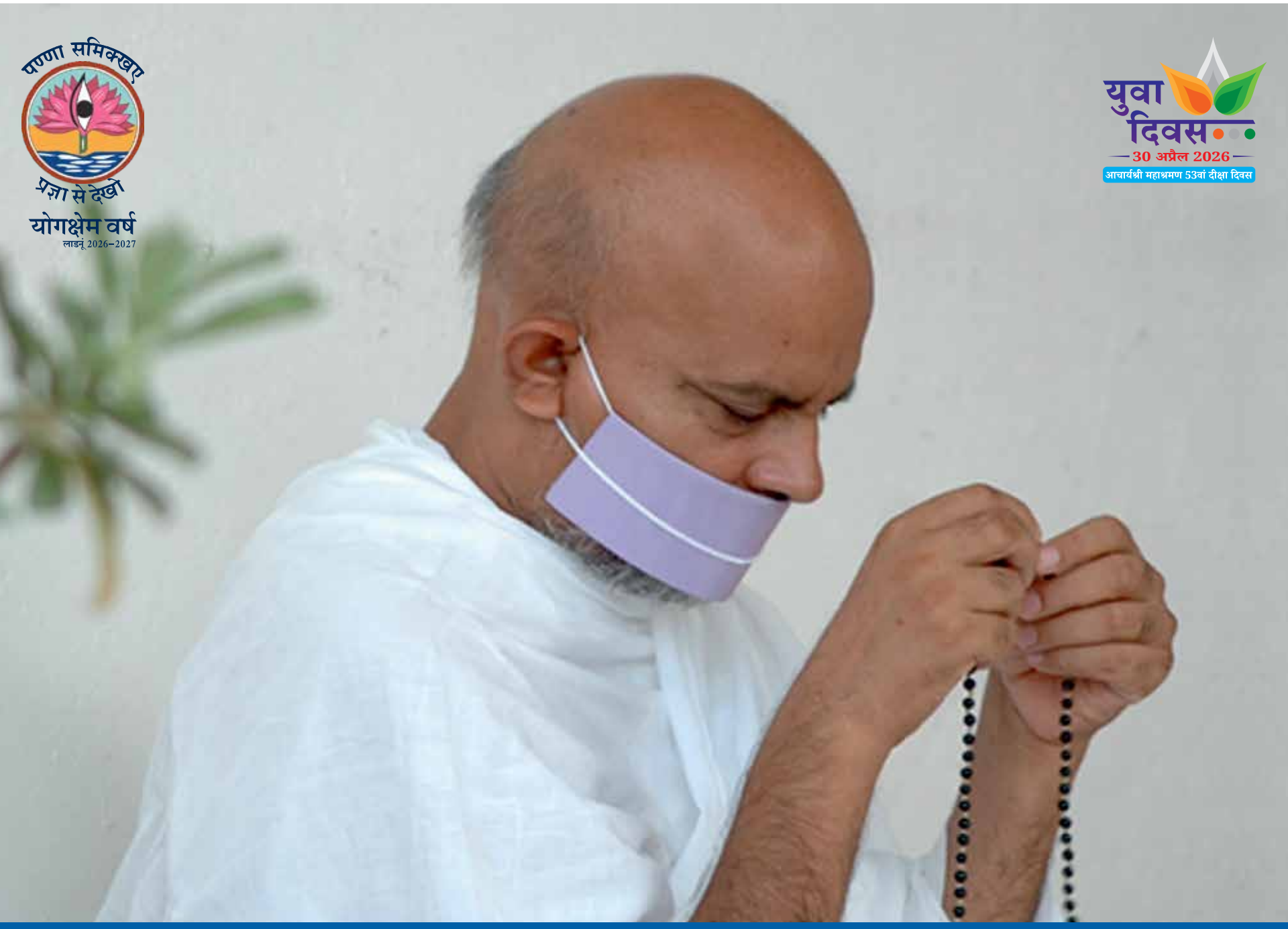

तात्कालिक लाभ को अधिक महत्त्व मत दो।
धैर्य रखो व दीर्घकालिक लाभ पर चिन्तन को केन्द्रित करो।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर वंदन, अभिवंदन

:: श्रद्धावनत ::

श्री महाश्रमण नगर
धनवन्तरी प्रोपर्टीज ग्रुप
कांकरोली

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

दूसरी कीमती चीजें यदि खो जाए तो उन्हें दुबारा प्राप्त किया जा सकता है, किन्तु समय एक ऐसी चीज है, जिसे खोने के बाद दुबारा कभी नहीं पाया जा सकता।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धाणत

:: अभिवंदन ::

तेरापंथ युवक परिषद्, आदर्श नगर सवाई माधोपुर

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

तुम कार्यकर्ता बनना चाहते हो,
यह अच्छी बात हो सकती है।
पर तुम यह सोचो तुम्हारा अपने काम,
क्रोध व भय पर नियंत्रण है या नहीं?

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर अभिवंदना

:: अभिवंदन ::

तेरापंथ युवक परिषद्, ब्यावर

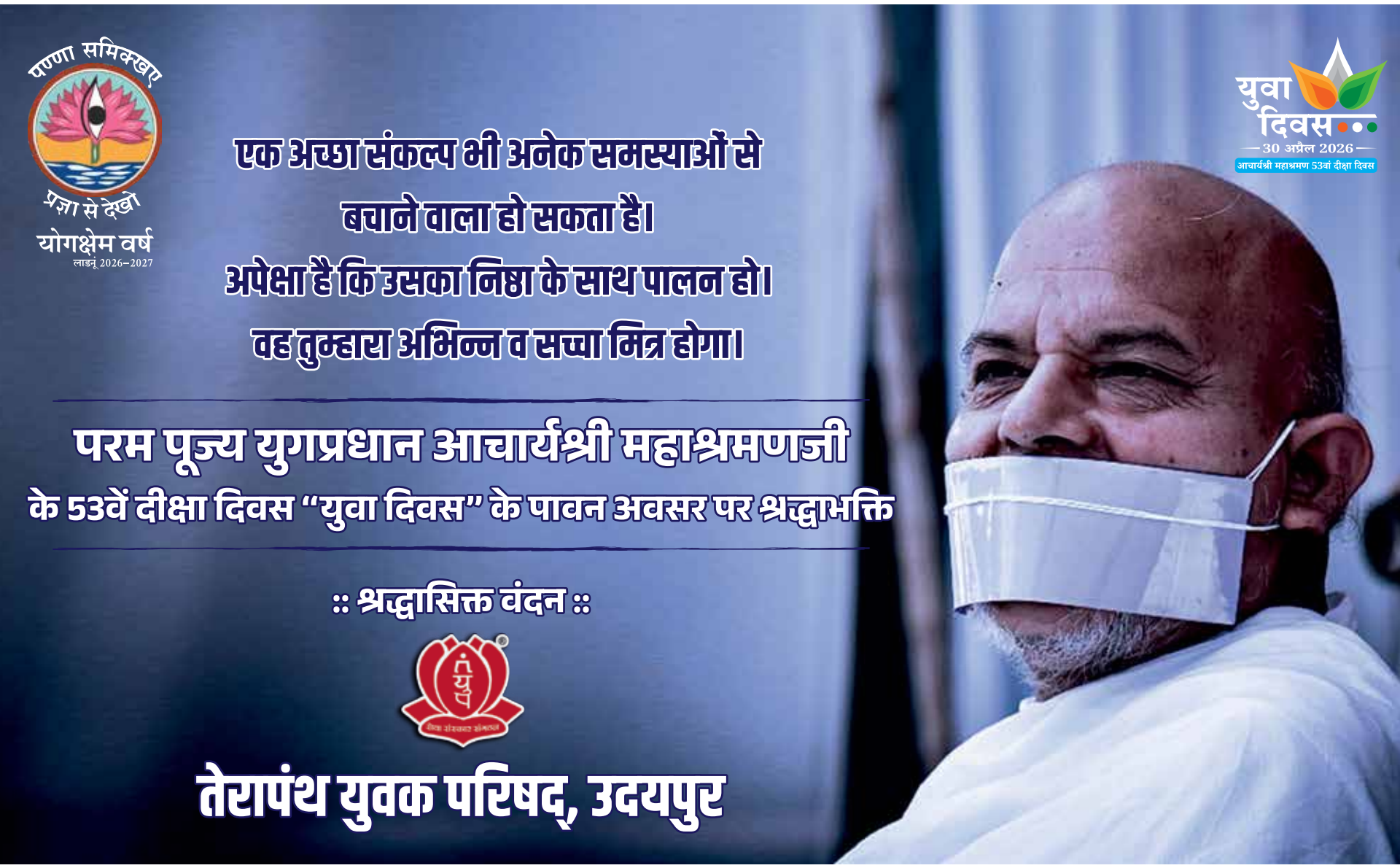
पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027
युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस
एक अच्छा संकल्प भी अनेक समस्याओं से
बचाने वाला हो सकता है।
अपेक्षा है कि उसका निष्ठा के साथ पालन हो।
वह तुम्हारा अभिन्न व सच्चा मित्र होगा।
परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी
के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धाभक्ति
:: श्रद्धासिक्त वंदन ::
तेरापंथ युवक परिषद्, उदयपुर

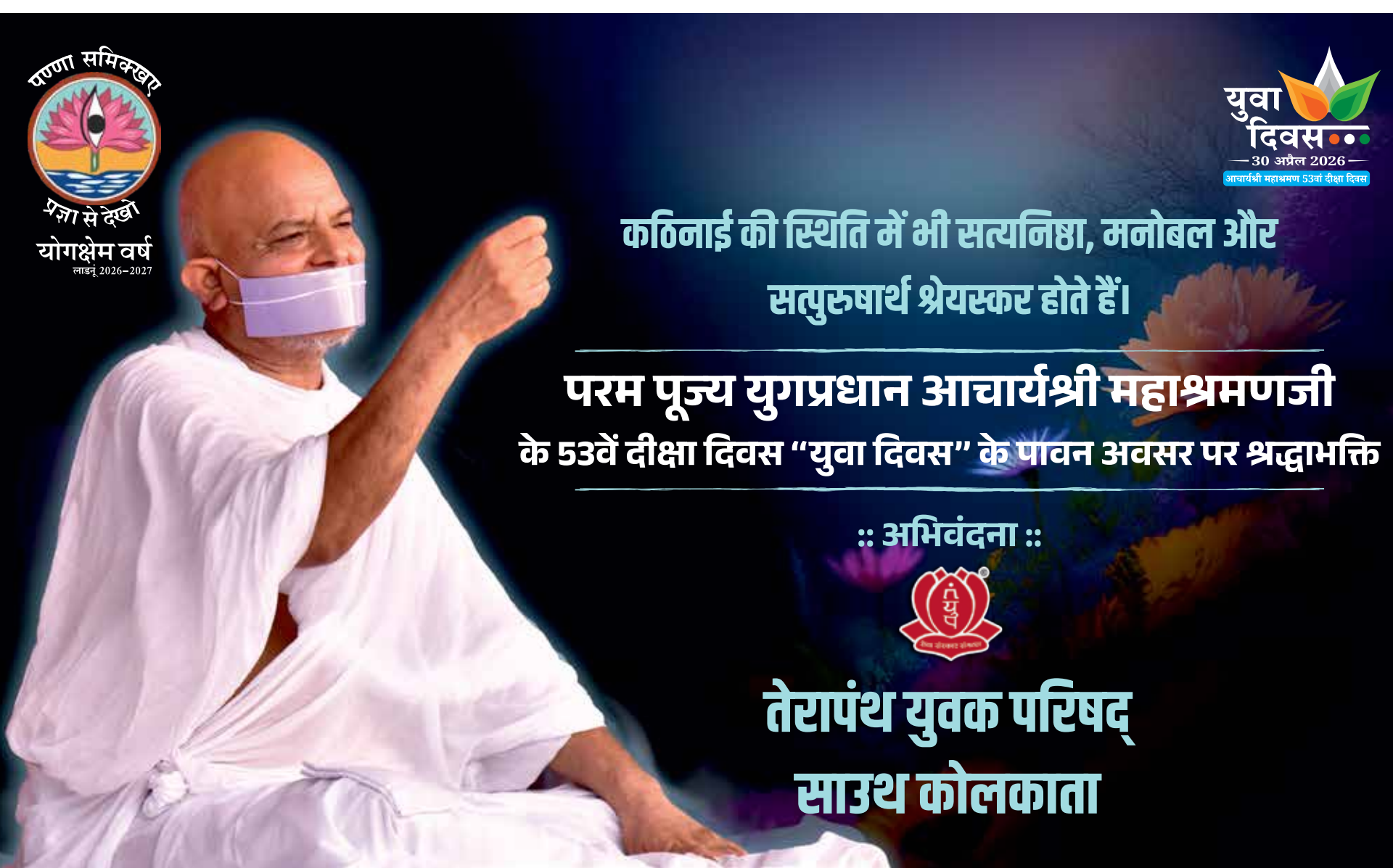
पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027
युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस
कठिनाई की स्थिति में भी सत्यनिष्ठा, मनोबल और
सत्पुरुषार्थ श्रेयस्कर होते हैं।
परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी
के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धाभक्ति
:: अभिवंदना ::
तेरापंथ युवक परिषद्
साउथ कोलकाता

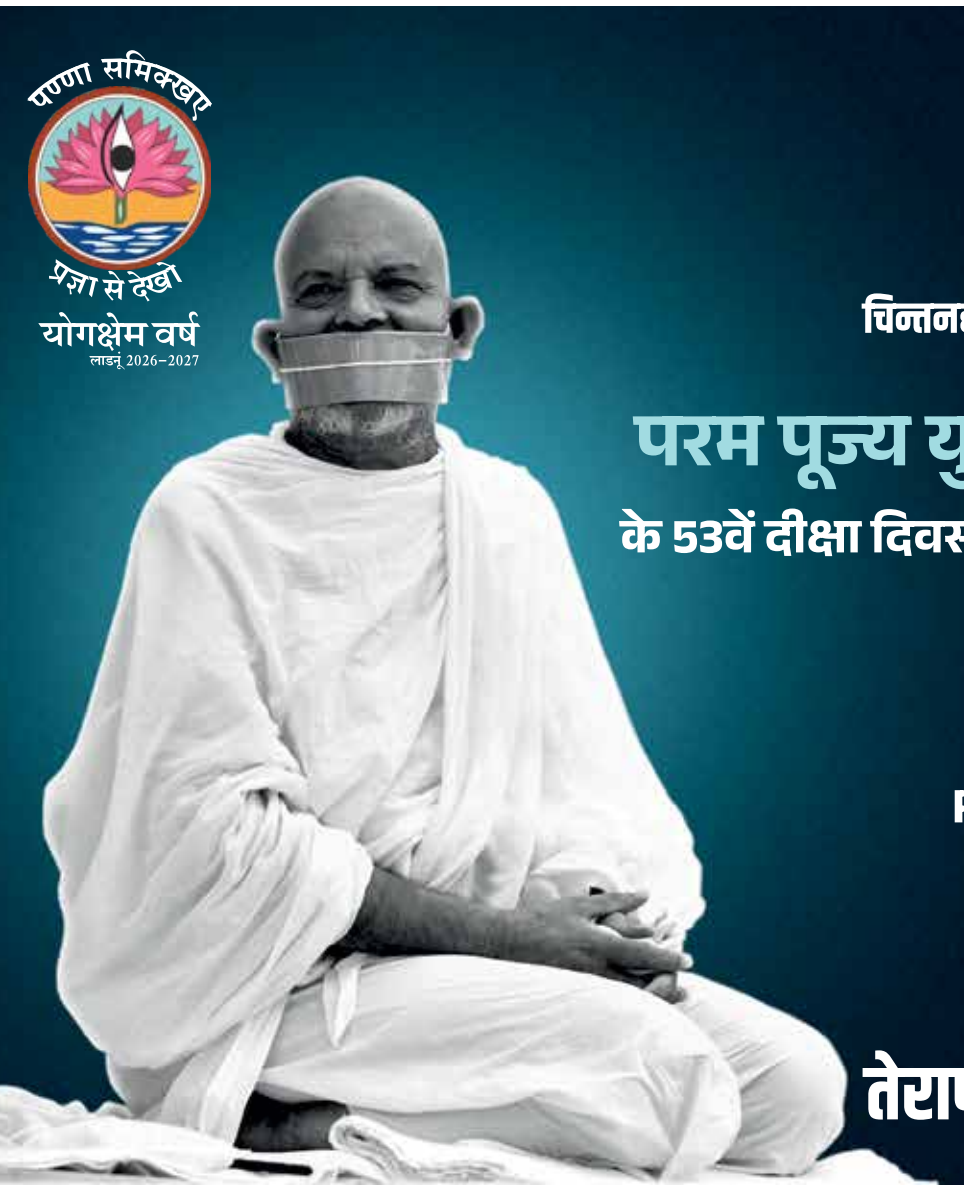

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

चिन्तनहीन निर्णय और निर्णयहीन चिंतन कारगर नहीं होते।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धासिक्त वंदन

Acharya Tulsi
Diagnostic Centre
Dental Care

Rajajinagar, Palace Guttahalli, Adugodi

:: श्रद्धाप्रणत ::

तेरापंथ युवक परिषद्, बेंगलूरु (R) गांधीनगर

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

एक बड़ी कठिनाई को झेलने का मतलब है
विकास के सूर्य की तरफ एक छलांग भर लेना।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के
पावन अवसर पर अभिवंदना

:: अभिवंदन ::

तेरापंथ युवक परिषद्, चेन्नई

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 अप्रैल - 03 मई 2026

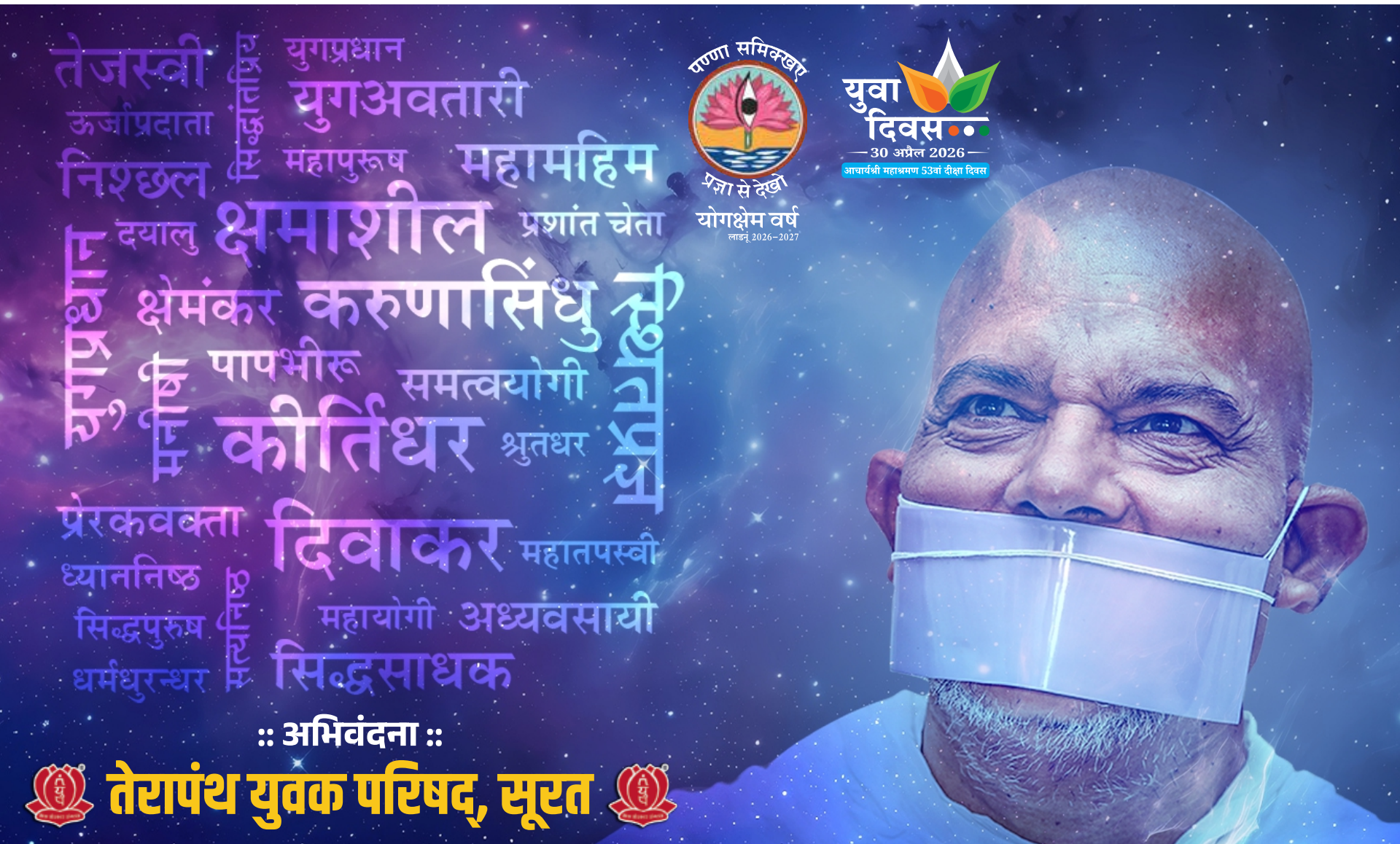

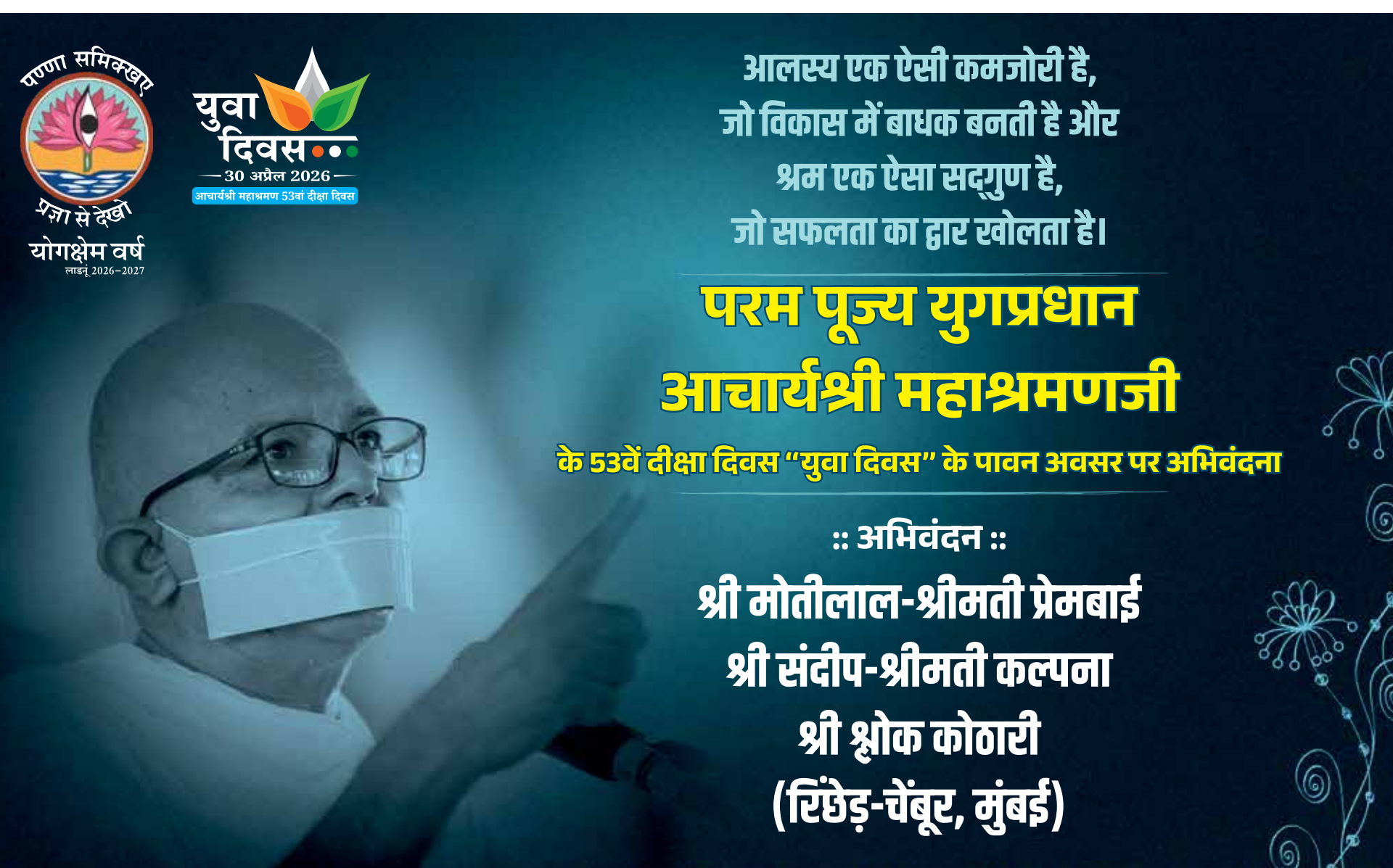

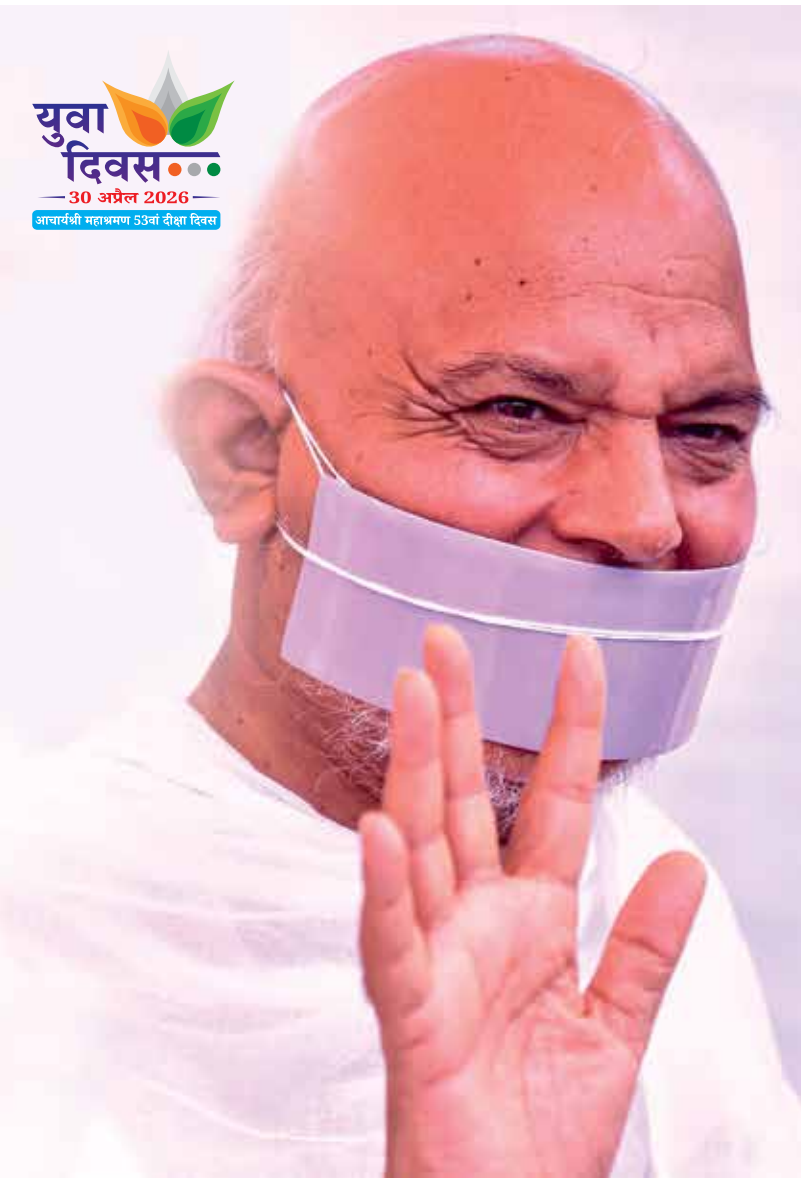

व्यक्ति के जीवन की बहुत बड़ी उपलब्धि है–
सहज सतत प्रसन्नता।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस"
के पावन अवसर पर श्रद्धाभक्ति

:: श्रद्धासुमन ::

श्री निर्मलजी, नितेशजी, कमलेशजी,
तत्त्व, द्रव्य भंसाली
जोजावर-दादर
निर्मल ज्वेलर्स (एल्फीस्टन & ज़वेरी बाजार)

अपनी आवाज को सुनने वाला, अपने आपको
देखने वाला और अपना हित चाहने वाला
व्यक्ति अपना मित्र होता है।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस"
के पावन अवसर पर श्रद्धाभक्ति

:: श्रद्धासिक्त वंदन ::

श्री सुरेंद्र, मनीष, भूपेश कोठारी
केलवा-सांताक्रूझ, मुंबई

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
27 अप्रैल - 03 मई 2026

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धाभक्ति

:: श्रद्धाप्रणत ::

रोशनलाल-पुष्पादेवी, महेश-सरोज, अशोक-भावना, अनिल-संगीता, प्रतीक, रिषिका, छवि, तीर्थ, हीर, ध्विज, बाफना

(पिपरडा) नेरुल, नवी मुंबई

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धासुमन

:: अभिवंदन ::

संपतलालजी राजेशजी नरेशजी सोनी

थामला (चेम्बूर-मुंबई)

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धाभक्ति

:: श्रद्धार्पण ::

कंचन देवी (धर्मपत्नी स्व. गणेशलालजी कोठारी)
सम्पतलाल-ललितादेवी, कुलदीप-संजना, विकास-प्रियंका, सौम्या, अदित, प्रिशा, विभव कोठारी परिवार
पहुँना (मेवाड़)-सूरत

भावना-विशाल, रुही, राही भरसारिया, अहमदाबाद | पूजा-अंकित, हीर, वान्या धींग, मुलुंड (मुंबई)

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026

अतीत का पुरुषार्थ ही वर्तमान व
भविष्य का भाग्य बन जाता है।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी
के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धाभक्ति

pragya NX
ARIHANTSIDDH FASHION PVT. LTD.

anupraas
Made for comfort
ANUPRAAS FASHION PVT. LTD.

Manufacturers of Premium Ladies Kurtis, Skirts & Maternity Wear

Hitesh Jain Ramesh Jain Manish Jain

Contact No.- 8003842745 E-mail: arihantsiddhfashion@gmail.com

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

प्रत्येक कर्म के साथ धर्म को जोड़ दिया जाए तो
धर्म के लिए अलग से समय निकालने की जरूरत ही नहीं।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धाणत

:: अभिवंदन ::

तेरापंथ युवक परिषद्, चित्तौड़गढ़

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

आचार्य परम्परा के 11वें पट्टधर, तुलसी महाप्रज्ञ के नव नक्षत्र का
युवा दिवस के अवसर पर कर रहा है समस्त परिवार
अभिवंदना स्वीकार करो हे! नेमा-नंदन, स्वीकार करो हे! नेमा-नंदन
अभिवंदना... अभिवंदना... अभिवंदना...

Shine Shilpi Jewellers
Bhilwara

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

सही दिशा में शक्ति का नियोजन करने वाला व्यक्ति ही सफलता प्राप्त करता है।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर अभिवंदना

:: अभिवंदन ::

मनीष बोरदिया, अभिषेक आंचलिया
Matex EV Pvt. Ltd., Bhilwara

पण्णा समिक्खए
प्रज्ञा से देखो
योगक्षेम वर्ष
लाडनूं 2026–2027

युवा दिवस
30 अप्रैल 2026
आचार्यश्री महाश्रमण 53वां दीक्षा दिवस

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर वंदन, अभिनंदन।

:: श्रद्धाप्रणति ::

श्रीमती कमलादेवी अन्नराजजी संकलेचा
ताराचंद, मुकेश, मनोज, विमल, अक्षत, मयंक,
हर्ष, गौतम एवं संकलेचा परिवार
जैन बंधु, पूना-चवाडियाँ

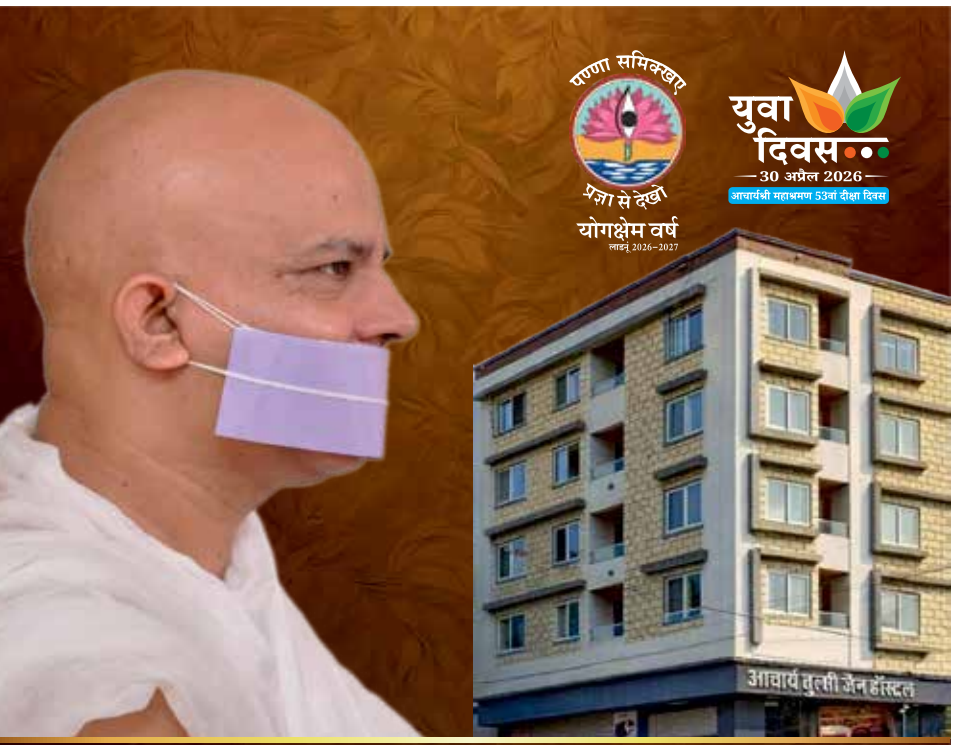

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धाणत

:: अभिवंदन ::

तेरापंथ युवक परिषद्, कोटा

9251437108, 9783655036, 9829252564

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धाणत

लुनिया परिवार

देशनोक-ठाणे, मुंबई

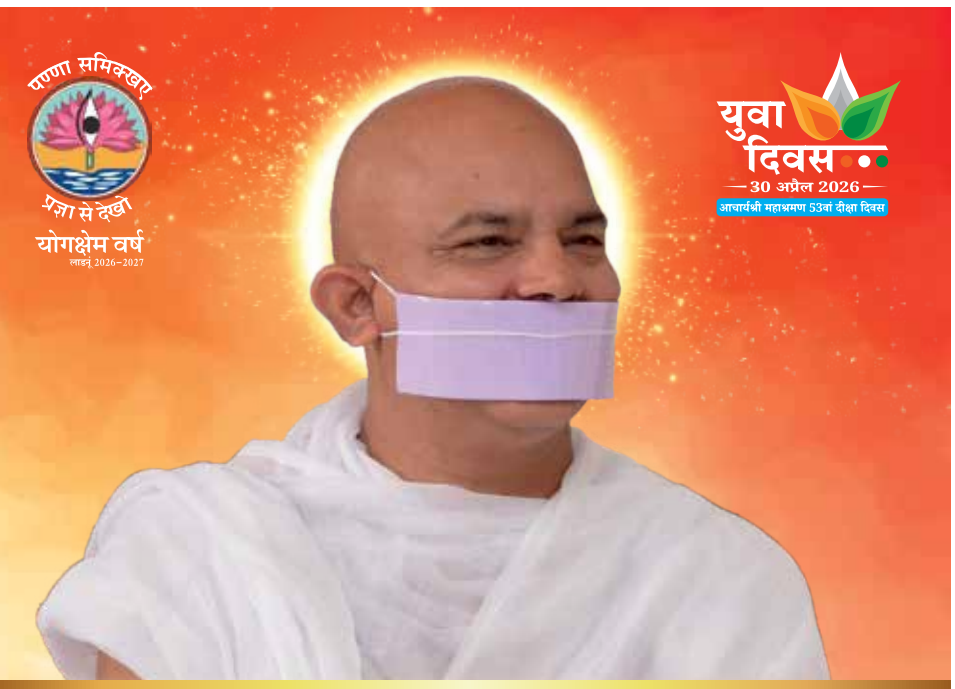

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर अभिवंदना

:: अभिवंदन ::

स्व. श्रीमती मनोहरदेवी-श्री पुखराजजी

श्रीमती गुणवंती-उगमराजजी, श्रीमती देवुबाई-रोशनलालजी, श्रीमती लीलादेवी-दिनेशचंद्रजी,

हीना-पंकज, ज्योति-नीरज, श्वेता-निखिल, सोनल-अमित, डिंपल-गौरव,

काव्या, हितांश, पर्व, पार्थ, शनाया, ध्रीहान, वाणी आच्छा परिवार

देवगढ़-मुंबई

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर वंदन, अभिनंदन।

:: श्रद्धाप्रणत ::

स्व. भंवरीबाई-स्व. धूलचंदजी

कमलेशजी, मयंकजी धाकड़

(बांद्रा-शिशोदा)

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 अप्रैल - 03 मई 2026

तुम स्वाध्याय करो। उससे तीन लाभ हैं– ज्ञान बढ़ता है, वैराग्य बढ़ता है, आचरण निर्मल बनता है।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धाणत

:: श्रद्धाप्रणति ::

जीवराज-वनिता
नवीन-प्रियंका, रवी-रुचि, विवेक-रवीना
सांखला परिवार
(आमेट-विरार-सायन कोलीवाड़ा, मुंबई)

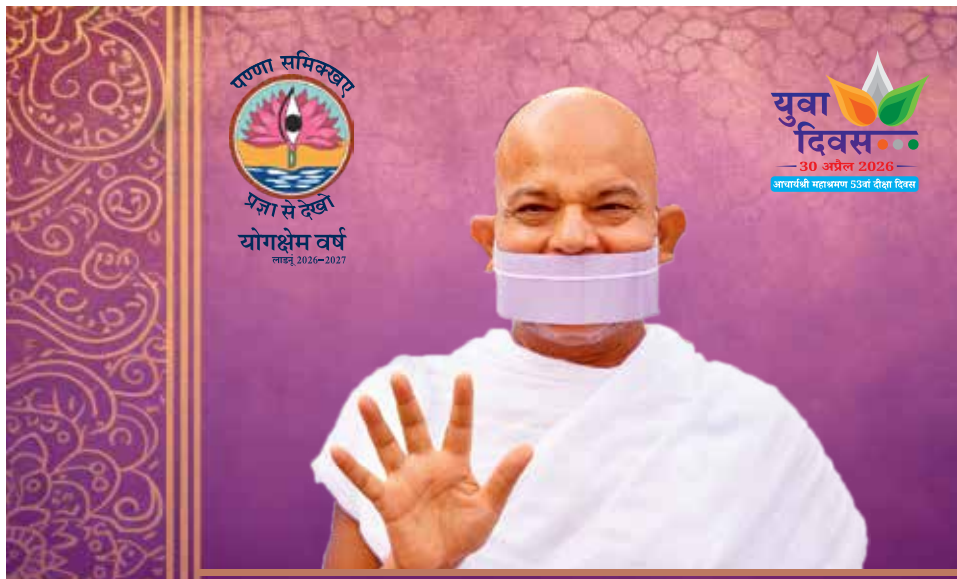

विद्या, विनय, विवेक इस त्रयी में विद्यार्थी निष्णात बनें।
वे अधिक उपयोगी बन पाएंगे।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस"
के पावन अवसर पर श्रद्धाणत

:: अभिवंदना ::

अर्जुनलाल गर्वकुमार सोनी
बिनोल-वाशी

सही दिशा में शक्ति का नियोजन करने वाला व्यक्ति ही सफलता प्राप्त करता है।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर अभिवंदना

:: विनयनत् ::

बसंत-विमल
अर्पित-ज्योति
डॉ. प्रियल-आर्या नाहर
(महेन्द्रगढ़-सूरत)

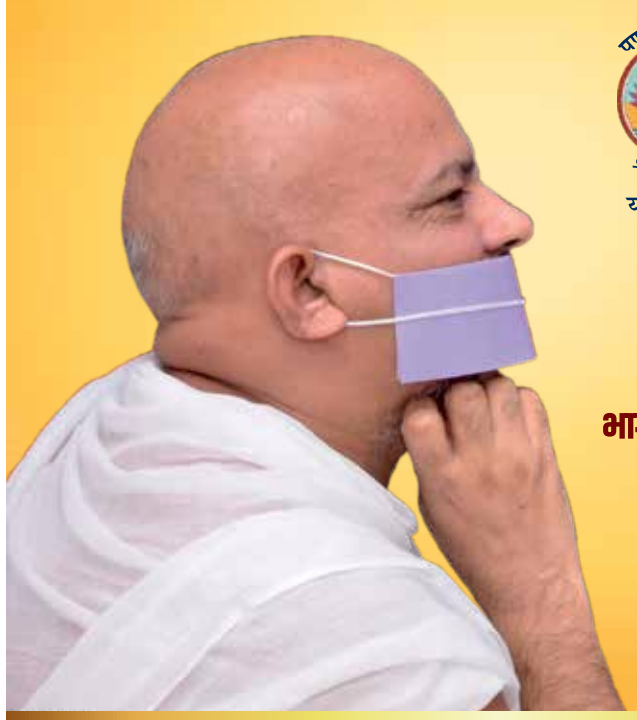

भाग्य की चिन्ता नहीं,
सत्पुरुषार्थ करो।
भाग्य स्वत: अच्छा हो जाएगा।

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर वंदन, अभिनंदन।

:: श्रद्धाप्रणत ::

श्रीमती जैनदेवी स्व. हिरालालजी धाकड़
हेमंत, संजय धाकड़
मोरनी ज्वैलर्स विरार | गोल्ड कॉर्नर विरार

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धाणत

:: श्रद्धावनत ::

कन्हैयालाल स्व शांतिलालजी मेहता

(राजनगर-सायन कोलीवाड़ा, मुंबई)

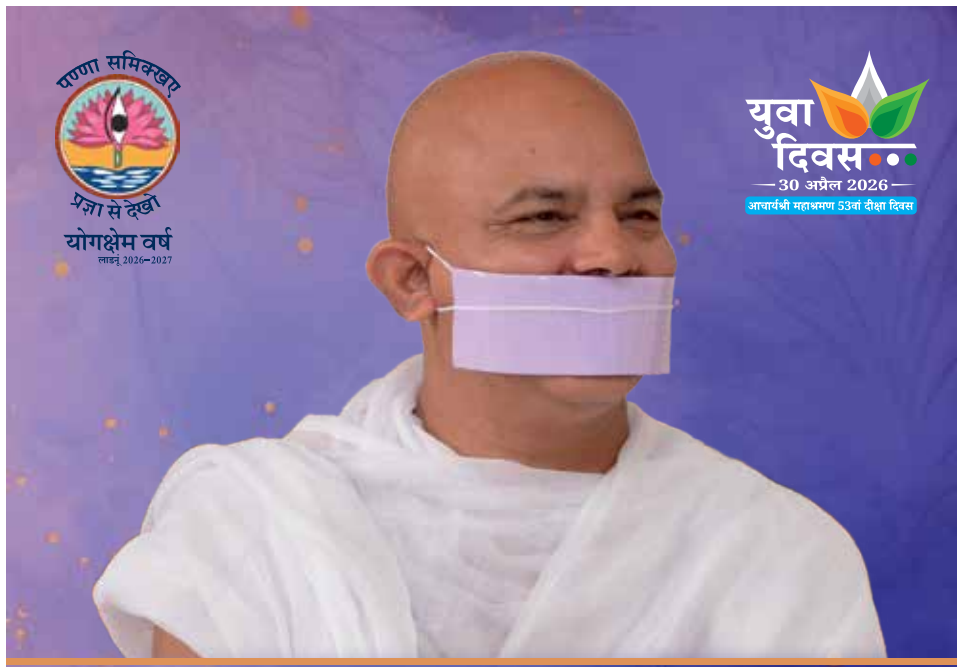

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर श्रद्धाणत

:: श्रद्धार्पण ::

संदीप सौरभ सुराणा

राजगढ़-मुंबई

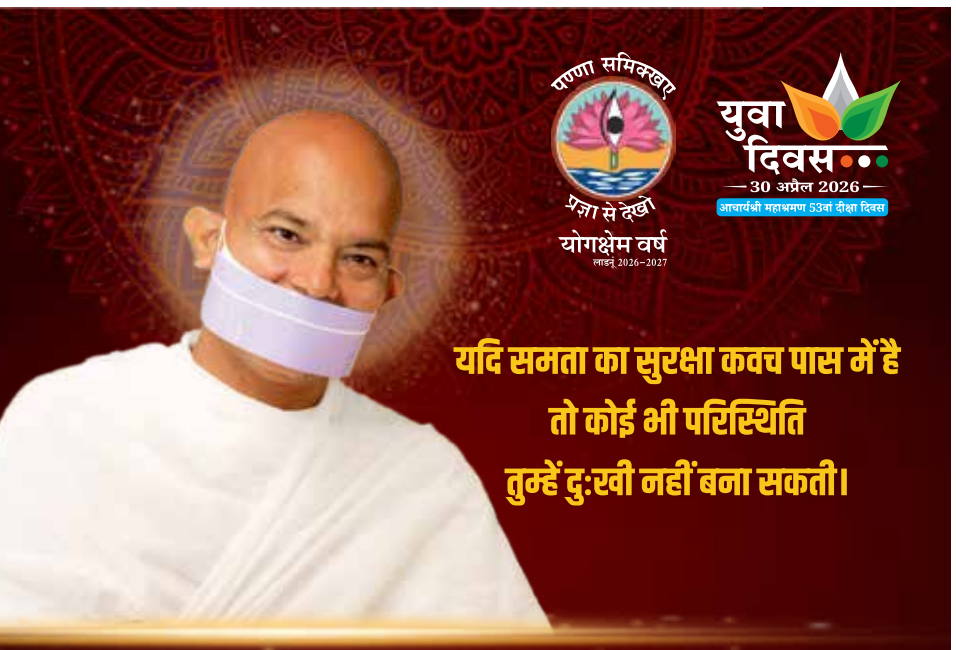

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर अभिवंदना

:: अभिवंदना ::

Suresh Chandra, Nirmal Kumar, Naksh Chandaliya

(गंगापुर-ठाणे)

Ananya Casting

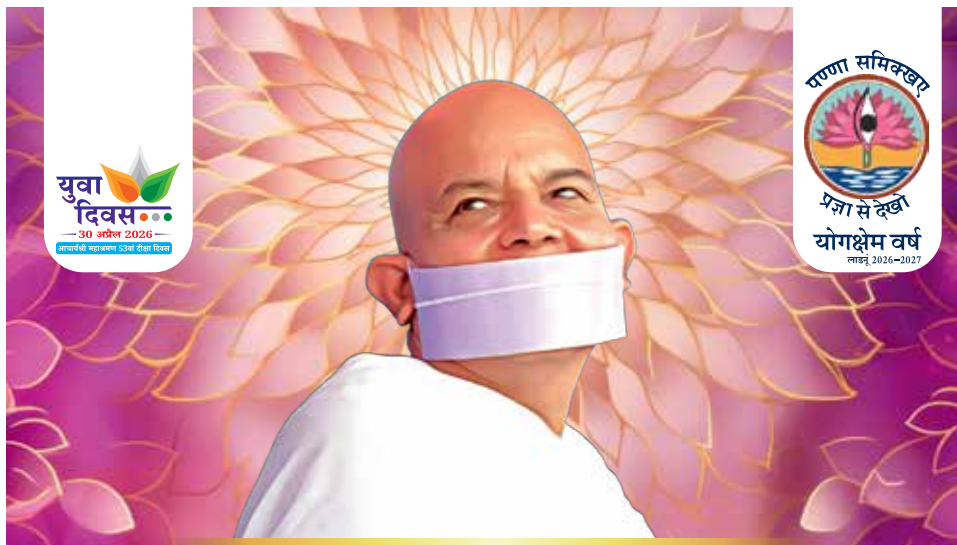

परम पूज्य युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी

के 53वें दीक्षा दिवस "युवा दिवस" के पावन अवसर पर अभिवंदना

:: अभिवंदन ::

तेरापंथ युवक परिषद्, जसोल

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 अप्रैल - 03 मई 2026

साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के चयन दिवस पर हृदयोद्गार

दुर्गा के नौ रूपों से संपन्न : नवम साध्वी प्रमुखा

● साध्वी नवीन प्रभा ●

नहीं जानती मैं कैसे तेरी पूजा अर्चना
नाही मेरे पास स्वर हैं, शब्द हैं और नहीं आता
मैं अल्पबुद्धि, अल्पमति और अल्पज्ञानी
फिर भी तेरी कृपा से मैंने तेरी महिमा पहचानी'

कुछ समय पहले मैं एक लेख पढ़ रही थी— 'माँ दुर्गा के नौ रूपों से मिलेंगे अमीर बनने के सबक'। फिर पढ़ा कि इनके नौ रूपों की आराधना का पर्व नवरात्रा है। जैसे-जैसे उन रूपों को पढ़ रही थी, मुझे अचानक याद आया कि ये रूप तो हमारी नवम साध्वी प्रमुखा विश्रुत विभा श्री जी में साक्षात् देखने को मिल रहे हैं। इनकी उपासना तो हम 365 दिन कर सकते हैं। बुलंदियों पर महान व्यक्ति ही पहुँचते हैं और वह केवल एक उड़ान से प्राप्त नहीं होती, उसके लिए वे दिन-रात एक करते हैं। आपमें आज जो मुकाम दिखाई देता है, वह एक जन्म की नहीं, कई जन्मों की साधना और भिक्षु शासन की महिमा बढ़ा रही है।

1. ब्रह्मचारिणी

कठिन परिस्थितियों में भी मन विचलित न हो और संयम बना रहे, यही सीख ब्रह्मचारिणी देवी देती हैं। यही सीख आप भी देती हैं; 'संयम' आपका मुख्य विषय है। इंद्रिय, खाद्य या वाणी संयम, हर क्षेत्र में आप अग्रणी रहती हैं। आप हमें प्रेरणा देती हैं कि— 'परिस्थितियों को दामन में समेट लो, गुमनामी से बाहर निकलकर स्वयं को पहचानो'। हमारा साधुपन कैसे सुरक्षित और तेजस्वी बने, कैसे हम आदर्श साध्वी बनें, यह गुर आप सिखाती हैं। आपका अनासक्त भाव अद्भुत है। एक बार प्रातः राश में आपको फूट में 'चीक' परोसा गया। आपने बिना कुछ बोले उसे आरोग लिया। जब साध्वी तन्मयप्रभा जी ने उसे चखा तो वह कच्चा और कसैला था। निवेदन करने पर आपने फरमाया— 'तुम लोग भी तो इसको खाते ही हो, मैंने ले लिया'।

2. चंद्रघंटा (शक्ति स्वरूपा)

सिंह पर सवार यह देवी हमेशा सतर्क और युद्ध के लिए तैयार रहती हैं। वैसे ही आप हमेशा सतर्क रहती हैं कि कहीं मन-वचन-काया से किसी को कष्ट न हो या कर्मों का बंधन न हो।

आपने एक बार गोष्ठी में फरमाया था कि मैं सोचती हूँ यह व्यवस्था कहीं मेरे कर्मों का बंधन न बन जाए। स्वास्थ्य की प्रतिकूलता में भी आप सहिष्णुता रखकर कर्मों से युद्ध के लिए तैयार रहती हैं। इतने बड़े पद पर होकर भी आप सेवा में पीछे नहीं रहतीं। 2024 सूरत चातुर्मास में जब किसी साध्वी के अस्वस्थ होने का पता चलता, तो आप अपने प्रतिकूल स्वास्थ्य के बावजूद सुबह-शाम उनकी सुध लेने पहुँच जाती थीं।

3. कूष्माण्डा

इस देवी का वास सूर्यमण्डल के केंद्र में है। आप तेरापंथ धर्म संघ की प्रथम बैच की समणी, प्रथम समणी नियोजिका, प्रथम मुख्य नियोजिका और आचार्य श्री महाश्रमण जी के शब्दों में एम.ए. करने वाली प्रथम प्रमुखा हैं। आप विदेश यात्रा करने वाली और अपने आराध्य के दीक्षा दिवस पर 'प्रमुखा' का उपहार पाने वाली प्रथम साध्वी हैं, जिससे आप इतिहास के केंद्र में हैं। आपने वात्सल्य और विनम्रता से साध्वी समाज के दिलों में स्थान बनाया है।

4. स्कंदमात

यह ज्ञान और विवेक की देवी हैं। आप अपने उद्बोधन के द्वारा हज़ारों लोगों को ज्ञान बाँटती हैं। आपके उद्बोधन में जान होती है। जब आप गुरु विषय पर बोलती हैं, तो लगता है साक्षात् गुरु की उजली तस्वीर के दर्शन करा रही हैं। एक लड़की ने यूट्यूब पर आपका प्रवचन सुनकर कहा कि 'अब मुझे पता चला कि वास्तव में गुरु क्या होते हैं, गुरु पर मेरी श्रद्धा और मजबूत हुई है'।

5. कात्यायनी

महिषासुर का वध करने के लिए देवी ने यह रूप लिया था। आपने पूर्व संचित कर्मों का वध करने के लिए दीक्षा ली और एक उत्कृष्ट कोटि की साधिका बनीं। आपके जीवन में अनवरत स्वाध्याय, ध्यान, जप-तप और मौन का क्रम चलता रहता है। कैसा भी संघर्ष हो, आप कात्यायनी बनकर कर्म रूपी महिषासुर का वध करती हैं।

6. कालरात्रि

यह देवी हमेशा शुभ फल देती हैं। आपकी सन्निधि में आने वाला हर व्यक्ति परम शांति प्राप्त करता है। आप आने वालों को सामायिक, माला और स्वाध्याय की प्रेरणा देकर उन्हें शुभ योग से जोड़ती हैं। एक बार साध्वी नमन प्रभा जी के पेट में 4-5 साल से दर्द था, जो आपके बताए जप से ठीक हो गया। अहमदाबाद के एक परिवार की बच्ची की बीमारी भी आपके बताए मंत्र जप से ठीक हुई।

7. महागौरी

यह देवी भक्तों के कष्ट और पाप हर लेती हैं। आपके पास आने वाले श्रावक-श्राविका या साधु-साध्वियां अपनी समस्या रखते हैं और आप ध्यान से सुनकर समाधान देती हैं। आपके पास एक 'मंत्र' है जिससे सारी निराशा आशा में बदल जाती है।

8. शैलपुत्री

यह स्वयं को संतुलित करने की प्रेरणा देती हैं। भीलवाड़ा चातुर्मास के दौरान जब मैं बीमार थी, तो आप (जो उस समय मुख्य नियोजिका थीं) मेरे पास पधारीं और कहा— 'नवीनप्रभा जी, कपड़ा लाओ, मैं धुलाकर शाम तक भेज दूँगी'। इतना बड़ा पद और इतना छोटा काम करने की तत्परता हमें संतुलित रहने की प्रेरणा देती है।

9. सिद्धिदात्री

जब आप आराध्य की भक्ति में लीन होती हैं, तो साक्षात् सिद्धिदात्री का रूप दिखता है। आप नई उम्मीद और उत्साह देकर माँ का रूप धारण करती हैं। महाराष्ट्र यात्रा के दौरान एक मिल मालिक ने बताया कि आपके वहाँ रुकने से उन्हें 12-13 लाख का भौतिक लाभ (सिद्धि) हुआ। आध्यात्मिक स्तर पर, साध्वी गौरवयशा जी के पैर का भयंकर दर्द आपके मंगलपाठ सुनाने मात्र से विहार के दौरान गायब हो गया।

उपसंहार : इतिहास कहता है कि 'जन्म लेना भाग्य के अधीन है, पर व्यक्तित्व पुरुषार्थ की देन है'। आपका यह मुकाम आपके पुरुषार्थ, समर्पण और गुरु कृपा की देन है। आपके चयन दिवस पर यही मंगलकामना है कि आप निरामय रहकर लंबे समय तक संघ सेवा करती रहें और नवीन इतिहास का सृजन करती रहें।

मेरे स्मृति पटल पर उमड़ रहा है 2012 का एक परिदृश्य

● साध्वी कमनीयप्रभा ●

साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभाजी की पहचान कुछ विलक्षण है। आप योग साधिका, गुरु दृष्टि आराधिका और भक्ति व समर्पण का त्रिवेणी संगम हैं। आपके कर्तृत्व और व्यक्तित्व में जिम्मेदारी का फौलादी पौरुष प्रकट हो रहा है। मेरी लेखनी चतुर्थ मनोनयन पर कुछ आलेखन करना चाह रही है। आज मेरे स्मृति पटल पर उमड़ रहा है 2012 का एक परिदृश्य। पूज्यप्रवर का 2012 का चातुर्मास जसोल में था, उस समय आप मुख्य-नियोजिका पद को सुशोभित कर रहे थे। यही वह समय था जब अनेक बहिनों ने पा. शि. संस्था में प्रवेश किया। पा. शि. संस्था की मुमुक्षु बहिनों के शिक्षण-प्रशिक्षण का दायित्व आपके कंधों पर था। आप उस वर्ष पूरी जागरूकता से मुमुक्षु बहिनों का पथदर्शन करते। अनेक छोटी-छोटी बहिनें संस्था में भर्ती हुई थीं, उनमें एक मैं भी थी। आप छोटी उम्र की बहिनों का विशेष ध्यान रखते। आप उन्हें अपने पास बिठाते, ज्ञान-ध्यान सिखाते, छोटी कहानियों व घटनाओं के माध्यम से उनमें संस्कारों का बीजारोपण करते। उनके अध्ययन व कंठस्थ में कैसे गति हो, इसकी समुचित व्यवस्था भी करते। मैंने अनुभव किया कि आप जब छोटी मुमुक्षु बहिनों के साथ बात करते तो उसमें कितना अपनापन होता। आपका जो असीम वात्सल्य प्राप्त हुआ, वह आज भी मस्तिष्क में चल-चित्र के समान घूम रहा है।

वर्तमान में भी हम छोटी-छोटी साध्वियां यह प्रत्यक्ष अनुभव कर रही हैं कि आप किस प्रकार हमारे निर्माण में अपना श्रम लगा रहे हैं और हमारे विकास का अनवरत चिंतन कर रहे हैं। ज्ञान, संस्कारों और साध्वाचार के छोटे-छोटे नियमों के प्रति हमें जागरूक रहने का समुचित प्रशिक्षण आप निरंतर देते रहते हैं।

आपके असीम वात्सल्य के साथ-साथ आपके जीवन का उज्ज्वल पक्ष—साधना का पक्ष—भी हमें सतत मूक प्रेरणा देता रहता है। आपके जीवन में साधना की गहराई है। सधी हुई साधना ही आपके जीवन का दर्शन है।

एक छोटी सी घटना ने मुझे आपके वात्सल्य और साधना के दोनों पक्षों का एक साथ अनुभव करा दिया। योगक्षेम वर्ष का भव्य अवसर था और साधु-साध्वियों की संख्या 350 तक पहुँच गई थी। सभी को संभालना साध्वी प्रमुखा का परम कर्तव्य है। इसी दौरान एक समय ऐसा आया जब साध्वी प्रमुखा श्री जी ने मुझे ग्रास (भिक्षा का अंश) नहीं बकसाया। मेरे मन में उथल-पुथल मच गई कि क्या मुझसे कोई गलती हो गई है। मेरे मन में आपके ग्रास के प्रति एक सहज आकर्षण रहता है। कई दिनों तक ग्रास न मिलने पर मैं संकुचाते हुए आपकी सेवा में पहुँची। आपने पूछा— 'आज कैसे आना हुआ?' मैंने धीमे स्वर में निवेदन किया कि कई दिन हो गए आपने ग्रास नहीं दिया, क्या मुझसे कोई गलती हुई है? आपने वात्सल्यपूर्ण नयनों से निहारा और आश्वस्त करते हुए फरमाया— 'अभी बहुत साध्वियां हैं; कभी समाधिवरम् वाली साध्वियों को ग्रास देते हैं तो कभी अमृतायन् वाली साध्वियों को। गोचरी आने पर तुम्हें याद कर लेंगे। रही बात गलती की, तो मैं नाराज होकर क्या करूं? राग-द्वेष करने से तो मेरा ही कर्म बंधन होगा। मेरा लक्ष्य केवल गलती बताकर परिष्कार का प्रयत्न करना रहता है।'

इस छोटी सी घटना ने आपके साधना पक्ष को उजागर कर दिया। जो निरंतर अपने प्रति जागरूक रहते हैं, उनकी साधना सिद्धि को प्राप्त होती है। आपके आचार, विचार और व्यवहार में हर परिस्थिति में साधना झलकती है। आपके चयन दिवस के उल्लासमय अवसर पर यही मंगलकामना है कि आपका वात्सल्य भरा वरदहस्त मेरे सिर पर सदा बना रहे। मैं आपके तेजस्वी साध्वी समाज के सपनों में रंग भरने का प्रयत्न करती रहूँ।

साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी के चयन दिवस पर हृदयोद्गार

'आधी दुनिया की उजली तस्वीर' – साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा

● साध्वी गुप्तिप्रभा ●

आर्हत वाङ्मय में सुंदर वाक्य आता है— 'सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणां' अर्थात् मनुष्य का कोई भी (सत्) प्रयत्न विफल नहीं होता। आपने अपने गृहस्थ जीवन के छोटे आयतन में एक वैराग्य की चैतन्य ज्योति प्रज्वलित की। वही ज्योति आगे जाकर सविता बनी, फिर पुण्यवत्ता आचार्य श्री तुलसी की शुभ दृष्टि मिली। उनकी अभिनव क्रांति को सफलता में बदलने के लिए आप 6 बहनों ने पहल कर नया कीर्तिमान स्थापित किया। उस समय परम पूज्य गुरुदेव श्री तुलसी ने सोचा— 'वर्षों के परिश्रम के बाद आज तृषा की हार हुई है और तृप्ति की जीत'। पुण्याई का ग्राफ आगे बढ़ने लगा।

युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी ने फरमाया— 'सफलता और खुशी हाथ-में-हाथ डाले साथ-साथ चलती हैं। जो चाहता था उसे पा लिया, यह मेरे जीवन की सफलता है; और सफलता की चाह को पूर्ण कर लिया, यह मेरी खुशी है।' मैंने अनुभव किया है कि सफल व्यक्ति कोई महान काम नहीं करते, अपितु छोटे-छोटे कार्यों को महान ढंग से करते हैं। सफलता कोई अजूबा नहीं है, यह बुनियादी उसूलों का लगातार पालन करने का नतीजा है। सफलता मुसीबतों को पार कर हासिल की जाती है, न कि केवल ऊंचे ओहदे से। आप 6 बहनों ने सफल होने के लिए कार्यों, वृत्तियों और व्यवहारों में बदलाव लाकर रिकॉर्ड पर रिकॉर्ड तोड़े हैं। सफल व्यक्ति पूरी जिंदगी चुनौतियों का मुकाबला करते हैं। उन 6 बहनों में एक नाम है— साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी का। कहा जाता है कि ढाई अक्षर का भाग्य होता है, तीन अक्षर का नसीब होता है और साढे तीन अक्षर की किस्मत होती है; लेकिन जब उसमें चार अक्षर की 'मेहनत' जुड़ जाती है, तो जीवन के नील गगन में चार चाँद लग जाते हैं। मुझे ऐसा अनुभव होता है, आपके जीवन को गहराई से पढ़ने के बाद, कि आप सहस्त्र गुणों से सुसज्जित बनने को समुत्सुक हैं। संवेदनशीलता, सहनशीलता, विनम्रता, उदारता, कोमलता, सहजता और श्रमशीलता आदि के समवाय का नाम है— साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभा। इन महनीय गुणों से आपने अपनी एक अलग पहचान बनाई है। श्रमणी संघ के आध्यात्मिक निर्माण में आप सतत जागरूकता रख रही हैं। आपमें व्यक्ति की क्षमता को उभारने, तराशने और जगाने की अद्भुत कला है। आपश्री के संरक्षण एवं मार्गदर्शन में हम सबने अमित वात्सल्य और अनुग्रह प्राप्त किया है। आपको आचार्यत्रय (आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ और आचार्य महाश्रमण) की उपासना में प्रणत रहकर बहुमूल्य गुण-रत्नों को हस्तगत करने का अलभ्य और स्वर्णिम अवसर मिला है। व्यक्तित्व को विराट बनाने वाला पाथेय मिला है। इसीलिए कहा जाता है:

हवा का सहारा मिल जाए तो नाव अपने आप चलती है,

गुरु का इशारा मिल जाए तो राह अपने आप मिलती है।

आपकी आँखों में उम्मीदों की रोशनी है, मन में संकल्पों की धार है, हाथों में कर्मठता की मशाल है और पैरों में मंजिल तक पहुँचने का विश्वास है। कदम-दर-कदम आगे बढ़ते हुए आप पूज्यवर के हर सपने को साकार करें। चयन दिवस पर यही मंगल कामना है कि आप सृजन की स्याही और कर्तृत्व की कलम से धर्मसंघ में एक नया इतिहास गढ़ें।

सारणा हो तो ऐसी

● साध्वी मंथन प्रभा ●

मुझे दीक्षा लिये कुछ महीने ही हुए थे। लम्बे-लम्बे विहारों से पैरों में छाले हो गए थे। एक दिन मैं साधन के साथ विहार करके आई। साध्वी प्रमुखा श्री जी के दर्शन किए तब आपने फरमाया, 'थोड़ा थक जाते होंगे ना? एक तो पैरों में छाले और साधन के साथ तेज चलना?' मैं मौन थी। आपने मेरी मौन भाषा को पढ़ लिया और साध्वी शुभ्रयशा जी से कहा, 'इनको तो मेरे पास ही छोड़ दो'।

उन्होंने कहा— 'तहत्'। कुछ दिन बाद गुरुदेव ने फरमाया कि नव-दीक्षितों को साधन के साथ नहीं, हमारे साथ ही जाना है। पहले दिन विहार किया, शाम को आहार नहीं भा रहा था। तब प्रमुखा श्री जी ने कहा, 'क्या हुआ? थोड़ा आहार क्यों कर रहे हो? ग्रुप की याद आ रही है?' मैंने कहा, 'ठीक नहीं लग रहा, सिर में भी दर्द हो रहा है'। फिर तापमान (Temperature) चेक किया तो 101 बुखार आया। प्रमुखा श्री जी ने फरमाया, 'तुम्हें जो रुचि हो वह आराम से बता देना, संकोच मत करना। ग्रुप वाले नहीं हैं तो हमें बता सकते हो'।

मैंने कहा— 'तहत्!' आपने कृपा कराई और एक साध्वी जी को फरमाया कि मंथन प्रभा जी को प्रतिक्रमण सुना दें और फिर इन्हें सुला देना। आपने यह भी निर्देश दिया कि ठंड बहुत है, अतः गर्म कपड़े आदि का ध्यान रखा जाए। रात में भी 2-3 बार साध्वियों से पूछवाया कि उनकी तबीयत कैसी है? सुबह भी मुझसे पूछा कि अब कैसा लग रहा है? मैंने कहा, 'बुखार कम हुआ है, थोड़ा ठीक है'। सुबह विहार करना था, तब आपने एक साध्वी श्री को कहा कि नवकारसी आते ही इनको कुछ खिला देना और जैसे इनके चलने में साता (सुविधा) हो, वैसे धीरे-धीरे लेकर आना। प्रमुखा श्री जी ने मेरा बहुत ध्यान रखा। इतनी ममता और इतना वात्सल्य केवल एक माँ ही अपने बच्चे को दे सकती है। जैसे माँ बच्चे को जन्म देती है, उसका पालन-पोषण करती है, उसे पढ़ाती-लिखाती है और उसका विकास चाहती है, वैसे ही दीक्षा लेकर मुझे नया जन्म मिला। समय-समय पर प्रमुखा श्री जी का वात्सल्य, शिक्षण और प्रशिक्षण मिलता रहता है।

चतुर्थ मनोनयन दिवस पर मैं आपके प्रति यही शुभकामना करती हूँ कि आप इसी तरह हम छोटी साध्वियों की सार-संभाल (रिछपाल) करती रहें और हम आपके इंगित की आराधना करते रहें।

ये नए चाँद की नई चाँदनी

● साध्वी उज्ज्वलरेखा ●

ये नए चाँद की नई चाँदनी, धरती पर छिटकाई है।
नखत सितारे तान सुनाते, गण की आब बढ़ाई है ॥
आओ गाओ, आओ गाओ...।

उजले पल उजली दिशाएं, श्रद्धा की सरगम गाएं।
मनोनयन यह महासती का, अभिनन्दन कर हर्षाएं।
स्वीकारो सौ-सौ वंदनाएं, शुभ दिन शुभ घड़ी आई है ॥
नखत सितारे...

सतरंगी अरुणाभ सन्धि, सतरंगी खुशियां लाई।
पंचम स्वर कोयलियां चहकें, हरकणी ये मन भाई।
मंगल गाएं आज बधाई, सतरंगी सुषमा छाई ॥
नखत सितारे...

ज्ञानयोग से भक्तियोग और दुर्लभ कर्मयोग संगम।
पाप-ताप-संताप हरे, निर्मल पावन तीर्थ जंगम।
तेरे तपोयोग की गाथा, 'गणवन' में महकाई है ॥
नखत सितारे...

बह्म बेला स्वाध्याय बांसुरी, करती पीयूष रस वर्षण।
अद्भुत अनुशासन कौशल है, जागरूक पल-पल जीवन।
विनय समर्पण श्रमनिष्ठा से, हरपल दीपित पुण्याई है ॥
नखत सितारे...

तर्ज – है प्रीत जहाँ की रीत सदा

शुभ आया दिन आया

● साध्वी शुभ्रयशा ●

शुभ आया दिन आया, भोर सुहानी लाया
खुशियां अपरम्पार, गण में छाई बहार...
तप से भी, जप से भी, ध्यान स्वाध्याय से भी
विमल विचार जलधार, गण में छाई बहार...

सफल संरचना आर्य देव की, सबके मन भाई
चिन्तन निर्णय कार्यप्रणाली, गुरुता गहराई
मनोनयन का दृश्य अनूठा, बगियां सरसाई
आर्यचरण में अविरल बहती करुणा कल्याणी
गुरु रिछपाल करें, सबको निहाल करें, सपने हुए साकार ॥

शौर्य भरा कर्तृत्व तुम्हारा, श्रम की सहनाणी (निशानी)
नीति निपुण नेतृत्व निराला, गण हित कुर्बानी
पूर्व जन्म की साधिका हो, महाप्रज्ञ वाणी
श्रुत राशि का अमृत प्याला, सींचो फुलवारी
सहज समर्पण, गुरुभक्ति दर्पण, महके गण मन्दार ॥

कब कैसे कितना कहना है, पूरा ध्यान धरे
शांत भाव से समय-समय पर अनुशासन भी करे
तन रोगी भी, मन रोगी भी चित्त समाधि वरे
संग रहे माता के हरदम, अनुभव खरे
उज्ज्वल मोती, जगमग ज्योति, श्रमणी गण श्रृंगार ॥

गुरु हृदय ने यह रूप सँवारा, लगता मनहार
महाश्रमण युग में शोभित है, पद प्रमुख प्यारा
है अनन्त उपकार प्रभु का, बदली युग धारा
निज दीक्षोत्सव पर है उत्सव, प्रणत है गण सारा
समदर्शन तेरा, युग दर्शन तेरा, युगनायक जयकार ॥

योगक्षेम वर्ष में अभिनव चयन दिवस सुखकर
हर दिन तुमसे मिलता शिक्षण है कितना हितकर
कुशल व्यवस्था तंत्र तुम्हारा, सुरभित गण सरवर
आत्मलीन साध्वीगण तेरा, अनुशासित परिकर
सुन्दर है शैली तेरी, कितनी अलबेली तेरी, महिमा का नहीं पार॥

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 अप्रैल - 03 मई 2026

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

युगप्रधान आचार्य महाश्रमण : त्रिवेणी संगम का जीवंत स्वरूप

● सुधांशु जैन ●

भूमिका : परंपरा का सातत्य

जैन शासन की परंपरा में 'आचार्य' केवल एक पद नहीं, बल्कि आत्म-कल्याण और शासन-प्रभावना की एक अविरल धारा है। जब हम वर्तमान अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के पावन व्यक्तित्व को निहारते हैं, तो हमें उनमें तीर्थंकर महावीर की करुणा, आद्य आचार्य भिक्षु की क्रांति और गणाधिपति गुरुदेव तुलसी की रचनात्मकता का एक अनूठा 'समत्व' दिखाई देता है। यह विशेषांक जब उनके जन्म, दीक्षा और पट्टोत्सव के मंगल प्रसंगों पर केंद्रित है, तब यह अनिवार्य हो जाता है कि हम उस महान चेतना का गुणगान करें जो हमारे समय में सत्य का साक्षात पर्याय है।

प्राचीनता और आधुनिकता का अद्भुत समन्वय

आचार्य प्रवर की प्रज्ञा का विस्तार विस्मयकारी है। जहाँ एक ओर वे संस्कृत और प्राकृत जैसी प्राचीन आगमिक भाषाओं के गहरे विद्वान हैं, वहीं दूसरी ओर समय की मांग को समझते हुए अपने प्रवचनों में अंग्रेजी भाषा का भी प्रभावी और सटीक उपयोग करते हैं। उनका यह दृष्टिकोण सिद्ध करता है कि वे केवल परंपरा के वाहक नहीं, बल्कि आधुनिक युग के पथ-प्रदर्शक भी हैं। उनकी देशना में आगमिक तत्त्वज्ञान का आधार होता है और उसे प्रस्तुत करने की शैली सर्वथा आधुनिक है, जिससे नई पीढ़ी भी सहजता से अध्यात्म की ओर आकर्षित हो रही है।

आगम सेवाः आचार्य तुलसी के स्वप्न की परिपूर्णता

आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी ने आगम संपादन का जो महान कार्य प्रारंभ किया था, उसे आचार्य महाश्रमण जी ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि और अनवरत पुरुषार्थ से निरंतरता प्रदान की है। आज आगम संपादन का कार्य अपनी परिपूर्णता की स्थिति में पहुँच रहा है, जो जैन धर्म के इतिहास में एक मील का पत्थर है। यह गुरु के प्रति उनके समर्पण का सबसे बड़ा उदाहरण है कि उन्होंने अपने गुरुओं द्वारा सौंपे गए बौद्धिक और आध्यात्मिक उत्तराधिकार को न केवल सुरक्षित रखा, बल्कि उसे समृद्ध भी किया।

भगवान महावीर की अहिंसा और करुणा का विस्तार

भगवान महावीर ने 'अहिंसा परमो धर्मः' का शंखनाद किया था। आचार्य श्री की 'अहिंसा यात्रा' उसी महावीर की वाणी का वैश्विक विस्तार है। भगवान महावीर ने जिस तरह जाति-पांति से ऊपर उठकर मानवता का कल्याण किया, ठीक उसी समता भाव को पूज्य प्रवर ने अपना आधार बनाया है। नेपाल की तराई हो या भारत के दुर्गम प्रांत, उनकी पदयात्रा में महावीर का वह सूत्र साकार होता दिखता है— 'अप्पणा सच्चमेसेज्जा मेत्तिं भूएसु कप्पए' (स्वयं सत्य की खोज करें और सब प्राणियों के प्रति मैत्री रखें)।

कठोर साधना और अनुशासन का वात्सल्य

आचार्य भिक्षु की मर्यादा और अनुशासन के प्रति निष्ठा आचार्य श्री के रोम-रोम में बसती है। उनकी दिनचर्या स्वयं में एक कठिन तपस्या है। अत्यंत भीषण गर्मी में भी बिना पंखे के रहना, निरंतर पदयात्रा और संयमित आहार चर्या—यह सब उनके भीतर की अंतर्मुखी साधना को प्रकट करते हैं। किंतु यह अनुशासन केवल स्वयं के लिए कठोर है। धर्म संघ के साधु-साध्वियों के प्रति उनका हृदय 'करुणामय वात्सल्य' से भरा है। वे न केवल संघ का कुशलतापूर्वक संचालन करते हैं, बल्कि प्रत्येक साधु-साध्वी की 'चित्त समाधि' और मानसिक शांति का भी पूरा ध्यान रखते हैं।

समर्पण और यशस्वी आचार्य परंपरा

भगवान महावीर और तेरापंथ की यशस्वी आचार्य परंपरा के प्रति आचार्य श्री का समर्पण अनन्य है। वे स्वयं को सदैव इस गौरवशाली परंपरा की एक कड़ी के रूप में देखते हैं। आचार्य तुलसी की रचनात्मकता और विजन का सामंजस्य उनके हर कार्य में झलकता है। उनका जीवन एक ऐसा संगम है जहाँ श्रद्धा, शक्ति और शांति एक साथ प्रवाहित होती हैं।

त्रि-आयामी महोत्सवः श्रद्धा का संगम

आचार्य श्री का जन्म दिवस, दीक्षा दिवस और पट्टोत्सव—ये तीनों पड़ाव उनके महामानव बनने की यात्रा के साक्षी हैं। यह अद्भुत संयोग है कि उनके जीवन के ये तीनों ही प्रसंग लगभग आसपास आते हैं, जो इस बात का प्रतीक है कि उनका संपूर्ण जीवन ही एक महोत्सव है। उनके भीतर महावीर की 'समता', भिक्षु की 'मर्यादा' और तुलसी की 'सृजनात्मकता' एकाकार हो गई है।

निष्कर्ष

आचार्य महाश्रमण जी केवल एक व्यक्ति नहीं, एक विचार हैं। उनके चरणों में हमारा वंदन केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि उस सत्य और समत्व के प्रति समर्पण है, जिसे उन्होंने अपने जीवन से सिद्ध किया है। आज उनके नेतृत्व में तेरापंथ धर्म संघ के स्वर्णिम काल को देखना हम सभी के लिए सौभाग्य की बात है।

गुरुदेव के श्रीचरणों में अनंत-अनंत वंदना!

संयम की सौंदर्य-गाथा : आचार्य महाश्रमण

● श्रेयांस कोठारी, जयपुर ●

आज हम एक ऐसे संत के जन्मदिवस, दीक्षा दिवस और पट्टोत्सव के पावन अवसर पर उनके व्यक्तित्व का स्मरण कर रहे हैं, जिन्हें देखकर समय भी ठहरकर सोचता है—

'क्या वाकई संयम इतना सुंदर हो सकता है?'

आज जब हर चीज़ को हम आधुनिक प्रतीकों में समझते हैं, तब Acharya Mahashraman जैसे व्यक्तित्व को यदि आज का युवा अपनी भाषा में परिभाषित करे, तो वह उन्हें एक 'जीवित GPS' कहेगा, जो केवल यह नहीं बताते कि कहाँ जाना है, बल्कि यह भी सिखाते हैं कि वहाँ पहुँचना कैसे है।

आज का युवा Google पर उत्तर खोजता है, पर आचार्यश्री ऐसे 'Guide' हैं, जिनके सान्निध्य में प्रश्न स्वयं ही मौन हो जाते हैं।

जब हम स्क्रीन पर आँखें गड़ाए बैठे रहते हैं, तब वे बिना किसी स्क्रीन के भी हमें Inner Clarity प्रदान कर देते हैं। वे एक 'Spiritual Startup' हैं—जो किसी Unicorn से कम नहीं;

एक ऐसा 'ज्ञान-मेघ', जहाँ से शांति और संतुलन की वर्षा होती है। हज़ारों किलोमीटर की पदयात्राएँ न किसी विश्राम की अपेक्षा, न थकान की शिकायत, हर दिन नई ऊर्जा, हर क्षण नया उल्लास। जहाँ आज का युवा जिम में पसीना बहाता है, वहीं आचार्यश्री संपूर्ण भारत की धरती को अपने पदचिह्नों से पावन करते हैं। वे Trends नहीं बनाते—वे Timeless हैं।

इस युग में जहाँ ट्रेंड्स हर सप्ताह बदलते हैं, वहाँ उनका संदेश,

'संयम, सेवा और साधना', हर काल में प्रासंगिक रहता है। वे हमें स्मरण कराते हैं कि युवावस्था उम्र से नहीं, विचारों की ताजगी से होती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने Hero बदलें, Instagram Influencers की जगह हमें ऐसे Inner Transformers चाहिए, जैसे हमारे आचार्य महाश्रमण जी हैं। क्योंकि वे सिखाते हैं, 'रफ़्तार से नहीं, स्थिरता से दुनिया बदलती है।'

आचार्य महाश्रमण : निष्ठाओं का जीवंत स्वरूप : आचार्यश्री का व्यक्तित्व केवल उपमाओं में नहीं, बल्कि उनके जीवन की निष्ठाओं में और अधिक स्पष्ट होकर सामने आता है—

1. कर्मनिष्ठ : वे निषिदिन अनवरत कर्म में रत रहते हैं—बिना किसी अपेक्षा के, बिना किसी विराम के। उनका प्रत्येक कदम लोकमंगल के लिए समर्पित है।

2. श्रमनिष्ठ : उनकी पद यात्राएँ केवल यात्रा नहीं, श्रम की साधना हैं। वे हमें सिखाते हैं कि श्रम ही साधना का सच्चा आधार है।

3. समयनिष्ठ : समय उनके लिए केवल घड़ी की सूई नहीं, बल्कि जीवन का अनुशासन है, वे समय के साथ नहीं चलते—समय को सार्थक बनाते हैं।

4. कार्यनिष्ठ : जो कार्य हाथ में लिया, उसे पूर्ण समर्पण के साथ निभाना— यह उनके जीवन का सहज स्वभाव है।

5. अनुशासननिष्ठ : उनका जीवन अनुशासन की जीवंत परिभाषा है। संयम केवल उपदेश नहीं, उनके आचरण में प्रकट होता है।

6. तीर्थंकर वाणी निष्ठ : वे तीर्थंकरों की वाणी के सच्चे संवाहक हैं, जो शास्त्रों को केवल पढ़ते नहीं, बल्कि जीते हैं।

7. गुरु निष्ठ : गुरु परंपरा के प्रति उनकी आस्था और समर्पण, उनके व्यक्तित्व को और अधिक ऊँचाई प्रदान करता है।

8. संघ निष्ठ : समूचे संघ के प्रति उनका वात्सल्य, समर्पण और नेतृत्व— उन्हें एक सच्चा युगनायक युगप्रधान बनाता है।

उपमाओं से परे एक युगदृष्टा, उन्हें किसी एक उपमा में बाँधना संभव नहीं—

वे दीपक हैं— जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देते हैं।

वे कंपास हैं— जो केवल राह नहीं, दृष्टि प्रदान करते हैं।

वे सौर ऊर्जा हैं— एक अक्षय शक्ति स्रोत।

वे ज्ञान का अथाह भंडार हैं, एक जीवंत 'हार्ड डिस्क'।

वे रेलगाड़ी की तरह हैं— जो सबको साथ लेकर चलती है, पर लक्ष्य से विचलित नहीं होती।

वे घड़ी की तरह हैं— जो समय का बोध कराती है, पर स्वयं समय से आगे जीती है।

वे नदी की तरह हैं— निरंतर, शांत और कल्याणकारी।

वे वाई-फाई हैं— जो बिना दिखाई दिए हृदयों को जोड़ते हैं।

वे गूगल मैप्स से भी आगे हैं— क्योंकि वे जीवन की दिशा बताते हैं।

वे एक सेतु हैं— जो संयम और संसार को जोड़ता है।

वे रडार हैं— जो सूक्ष्म भावों को समझते हैं।

वे मिट्टी हैं— जो सबको स्थान देती है।

वे कैमरा लेंस हैं— जो भीतर की सच्चाई उजागर करते हैं।

वे अनंत ऊर्जा स्रोत हैं— जो कभी थकते नहीं।

वे जड़ों से जुड़े वृक्ष हैं— जो ऊँचाइयों को छूते हुए भी मूल से जुड़े रहते हैं।

वे समुद्र हैं— शांत, गहन और अथाह।

आचार्य महाश्रमण को केवल 'संत' कहना उनके व्यक्तित्व को सीमित करना होगा। वे एक चलता-फिरता दर्शन हैं, एक युगपुरुष, एक युगप्रधान—

समय का सार

ऐसे युगद्रष्टा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि हम उनके कदमों के पीछे नहीं, बल्कि उनके विचारों की दिशा में चलें। वे हमें यही सिखाते हैं कि जीवन की वास्तविक उन्नति बाहरी उपलब्धियों में नहीं, बल्कि आंतरिक जागरण में निहित है।

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 65वें जन्मोत्सव, 17वें पट्टोत्सव एवं 53वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

अनंत से अनंत की यात्रा

● निखिल बांठिया, बैंगलोर ●

पाँच सितंबर, 2025—वह पावन दिन।

अहमदाबाद की पुण्य भूमि पर सत्रह मुमुक्षु आतुर खड़े थे—गुरुदेव आचार्य श्री महाश्रमण जी के कर-कमलों से अगार धर्म से आगे बढ़कर, अनगार धर्म को स्वीकार करने हेतु। संयममय जीवन को अंगीकार कर मुनि बनने की उत्कंठा उनके अंतर्मन में स्पंदित हो रही थी। दीक्षा स्वीकार कर अपने जीवन-पथ को मोक्ष की दिशा में मोड़ देने का दृढ़ संकल्प लिए वे उपस्थित थे।

ऐसे में प्रत्येक मुमुक्षु अपने मनोभावों को गुरुदेव के चरणों में अर्पित कर रहे थे—अपनी दीक्षा के हेतु, अपने लक्ष्य और अपने संकल्प को सबके समक्ष साझा कर रहे थे। इसी क्रम में अब बारी आई बैंगलोर से आए मुमुक्षु प्रीत कुमार की। अपने वक्तव्य की शुरुआत करते हुए उन्होंने कहा—

'अनंत को तोड़कर अनंत को पाना है।'

अनंत—सुनने में यह एक अत्यंत छोटा-सा शब्द प्रतीत होता है, परंतु जब इसकी गहराई से समीक्षा की जाती है, तो इसी एक शब्द में समस्त लोक समाहित दिखाई देता है। यह अनंत प्रत्येक जीव की इस लोक में चल रही अनादि यात्रा से जुड़ा हुआ है। हर जीव न जाने कितने सैकड़ों कालचक्रों से इस संसार में भ्रमण कर रहा है—अनंत जन्म और अनंत मरण की इस यात्रा से वह थक चुका है, तृप्त हो चुका है; फिर भी इस अनंत को तोड़ पाने में स्वयं को असमर्थ पाता है।

प्रश्न यह है कि सब कुछ जानते हुए भी, जन्म-मरण की इन परंपराओं से पूर्णतः अवगत होने पर भी, वह जीव इस चक्र—इस चक्रव्यूह—से बाहर क्यों नहीं निकल पा रहा है? इसका एक अत्यंत गहरा और मूल कारण है—बंधन।

परंतु क्या है यह बंधन? बंधन का अर्थ अत्यंत सूक्ष्म है। यह बंधन केवल परिवार से नहीं है, न इस सांसारिक जीवन से, न ही घर-परिवार या धन-वैभव से। वास्तविक बंधन तो उन अनंत जन्म-मरण से चले आ रहे कर्म-पुद्गलों का है, जिनके कारण जीव आज भी इस जन्म-मरण की परंपरा से ग्रस्त बना हुआ है।

तो अंततः प्रश्न उठता है—ये बंधन होते ही क्यों हैं? कर्म-पुद्गलों का आत्म-प्रदेशों के साथ ऐसा गहन बंधन आखिर बनता कैसे है? क्या कारण है कि ये कर्म-पुद्गल आत्म-प्रदेशों से चिपक जाते हैं? और एक बार चिपक जाने के पश्चात् भी उनसे निवृत्त होना इतना कठिन क्यों प्रतीत होता है? ऐसा क्या है कि अनंत काल से जीव इन कर्म-पुद्गलों से आबद्ध ही चला आ रहा है?

मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग—ये पाँच आश्रव इसके प्रमुख कारण हैं। इन्हीं के कारण कर्म-पुद्गल निरंतर आत्म-प्रदेशों से चिपकते चले जाते हैं। जब तक ये आश्रव सक्रिय रहते हैं, तब तक कर्मों का प्रवाह रुकता नहीं और जीव अनजाने ही नए-नए बंधनों का निर्माण करता रहता है।

इसी अनंत को तोड़ना आवश्यक है—क्योंकि अनंत कालचक्र से, अनंत जन्म-मरण की परंपरा के साथ जो बंधन जीव के साथ चले आ रहे हैं, उन्हें तोड़े बिना मुक्ति संभव नहीं। ये बंधन भले ही बहुत लंबे समय से जुड़े हुए हों, परंतु इनसे पूर्णतः मुक्त हुए बिना जीव न तो परम सुख की अनुभूति कर सकता है और न ही परम मोक्ष की प्राप्ति।

तो अब यह स्पष्ट होता है कि बंधन—चाहे वे कर्म-पुद्गलों के हों, चाहे अनंत काल से चले आ रहे कर्म-पुद्गलों के ही क्यों न हों—शाश्वत नहीं हैं। तब प्रश्न उठता है कि एक जीव की जीवन-यात्रा में शाश्वत क्या है?

इसी संदर्भ में आलंबनसूत्र का एक सूत्र आता है—

एगो मे सासओ अप्पा, नाण-दंसण-संजुओ।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोगलक्खणा॥

अर्थात् जीव की जीवन-यात्रा में यदि कुछ शाश्वत है, तो वह आत्मा है—जो ज्ञान और दर्शन से संयुक्त है। इसके अतिरिक्त जो कुछ भी है, वह बाह्य है, संयोगजन्य है और संयोग से ही नष्ट होने वाला है।

और इसी शाश्वत को पाने के लिए हमें भी उसी दिशा में प्रयत्न करना है, जिस दिशा में आज ये सत्रह मुमुक्षु अग्रसर हैं। अगार धर्म से आगे बढ़कर अनगार धर्म को स्वीकार करना, उसी दिशा में उठाया गया एक अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक कदम है। शाश्वत सत्ता हमारे भीतर ही विद्यमान है—ज्ञान और दर्शन की अनंत सत्ता के रूप में। उसी अनंत सत्ता को उपलब्ध कर, उसी में स्थित होकर ही जीव अनंत मोक्ष को स्वीकार कर सकता है और अनंत मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है।

गुरुदेव का जीवन स्वयं में साधना की एक सतत यात्रा है—जहाँ प्रत्येक क्षण संयम, प्रत्येक निर्णय त्याग और प्रत्येक श्वास आत्म-जागृति की दिशा में अग्रसर प्रतीत होता है। उनके जीवन में न केवल सिद्धांतों का वास है, बल्कि उन सिद्धांतों का सजीव आचरण भी है। अनंत जन्म-मरण की परंपरा से परे उठकर, आत्मा की शाश्वत सत्ता में स्थित रहने का जो मार्ग शास्त्रों में वर्णित है, वही मार्ग उनके जीवन में प्रत्यक्ष रूप से प्रतिबिंबित होता है। इस दृष्टि से उनका सम्पूर्ण जीवन ही 'अनंत से अनंत की यात्रा' का एक जीवंत उदाहरण बन जाता है। और इसी शाश्वत की प्राप्ति की दिशा में निरंतर अग्रसर रहने की प्रेरणा हमें अपने गुरुदेव के जीवन से मिलती है।

यदि 'अनंत से अनंत की यात्रा' को किसी जीवंत रूप में देखना हो, तो वह हमें उनके जीवन में सहज ही दृष्टिगोचर होती है। उनके जन्म दिवस, दीक्षा दिवस और आचार्य पद प्रतिष्ठा दिवस के इस पावन अवसर पर, यही भावना और भी प्रगाढ़ हो उठती है कि हम भी उनके चरणों में चलकर, उस अनंत की ओर अपने कदम बढ़ा सकें। आशा यही है कि हम भी इस अनंत से शाश्वत अनंत की यात्रा में सहभागी बन सकें।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए।

❖ इन्द्रियाँ अपने आप में अशुभ नहीं होतीं। किंतु जब उनके साथ मोह का योग हो जाता है तो ये कर्मबंधन का कारण बन जाती हैं।

— आचार्य श्री महाश्रमण

तेरापंथ निहाल है: त्रिवेणी पर्व पर गुरुवर को वंदन

● दिनेश मरोठी ●

वैशाख मास में त्रिवेणी संगम पर, तेरापंथ निहाल है।
जनमोत्सव, दीक्षा दिवस और पट्टोत्सव, यह बेला बेमिसाल है।
अहिंसा, शांति और सद्भावना के, जो बने हैं मूर्तमान।
युगप्रधान गुरु महाश्रमण चरण में, मेरा शत-शत प्रणाम॥

बारह की अल्पायु में, लिया आपने संयम को धार ।
चौबीसी में महाप्रज्ञ जी के, बने अंतरंग आधार॥
छत्तीसी की पावन वय में, मिला युवाचार्य का मान।
वर्ष अड़तालीस में बन आचार्य, दिया संघ को नव-विहान॥
षष्ठी-पूर्ति पर साठ-हजारी यात्रा, गुरु पादम्बुज है ख़ास ।
बारह के इन सोपानों पर, गढ़ा है अनुपम इतिहास।।

अप्राप्त को जो प्राप्त कराए, वह पावन 'योग' कहाता है।
प्राप्त गुणों की रक्षा करना, 'क्षेम' रूप बन जाता है॥
चंदेरी की पावन धरा पर, 'योगक्षेम' का उत्सव भारी।
आचार्य तुलसी के पश्चात् आपने, फिर दोहराई महिमा न्यारी॥
तेरापंथ के इतिहास में आया, यह दूसरा दिव्य अवसर है।
गुरुवर के कुशल-नेतृत्व में, सुरक्षित संघ का हर घर है॥

पैदल चल-चल कर गाँव-गाँव, जगाई है नई अलख।
नशामुक्ति और नैतिकता की, दी जन-मानस को परख॥
तुलसी और महाप्रज्ञ की, परंपरा के आप हैं प्राण।
मानवता के उत्थान हित, अर्पित आपका हर एक त्राण॥
तेरापंथ टाइम्स के पन्नों से, गूँजे यह जय-जयकार।
त्रिवेणी के इस महापर्व पर, गुरुवर को वंदन बारंबार॥

जीवन नैया के कर्णधार

● प्रदीप छाजेड़ ●

परम पूज्य , अनन्त आस्था के आलय ,जन - जन के जिनालय , सरलता विनम्रता के मूर्तिमान आदर्श , दिव्य दया के देवालय , उच्च कोटि का श्रमण , वैराग्य श्री , ऐश्वर्य आदि से विभूषुत , महाप्राण व्यक्तित्व , करुणा के हिमालय , जीवन नैया के कर्णधार ,तीर्थंकर के प्रतिनिधि , युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 53 वां दीक्षा दिवस (युवा दिवस) पर भावों से शत - शत वन्दन व इस अवसर पर मन के उदगार श्री चरणो में - आचार्य श्री महाश्रमण जी यानी विश्व के रंगमंच पर एक ऐसा विराट व्यक्तित्व है जिसके जीवन में तारतम्य ही नही साथ ही साथ जिन्हें उदय-अनुदय का अनुभव भी हैं । जिसने जीवन में सुख-दुःख को स्पर्श किया हैं । जो प्रकाश और अंधकार, सत् और असत्,मृत्यु और अमरत्व,पराक्रम और मंडता आदि सभी अवस्थाओं में से गुज़रनेवाले व्यक्तित्व है।

मानवता उत्थान के महान सन्देशवाहक भारतीय ऋषि परम्परा में आचार्य श्री भिक्षु की परम्परा के एक महान संत है - आचार्य श्री महाश्रमण जी । जिन्होंने अपनी अहिंसा की प्रलम्ब यात्रा कर वर्ण , जाति , सम्प्रदाय से मुक्त रहकर जन मानस को मैत्री , करुणा , सेवा , सदभावना और समन्वय का सन्देश दिया । कितने राज्यों व तीन देशों में 60 हजार (लगभग) किलोमीटर की पदयात्रा करना इतिहास का अत्यन्त दुर्लभ दस्तावेज बन गया है ।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 अप्रैल - 03 मई 2026

पृष्ठ 2 का शेष

ऋषभदेव थे धर्म....

साध्वी दीक्षा की मंगल घोषणा :

महोत्सव के दौरान आचार्यश्री ने मुमुक्षु कोमल की दीक्षा की घोषणा करते हुए फरमाया कि आगामी 20 सितंबर, 2026 को 'विकास महोत्सव' के अवसर पर उन्हें साध्वी दीक्षा प्रदान की जाएगी। इस घोषणा से संपूर्ण धर्मसंघ में हर्ष की लहर दौड़ गई।

साध्वी प्रमुखाश्री व मुख्य मुनिश्री का संबोधन :

कार्यक्रम में साध्वी प्रमुखा विश्रुत विभाजी ने तप को कर्मों को भस्म करने वाली ज्योति बताया।

मुख्य मुनिश्री महावीर कुमारजी ने भगवान ऋषभदेव के पारणे की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए कहा कि साधना में ममता का विसर्जन और समता का अर्जन ही कल्याणकारी है।

श्रद्धांजलि और सांस्कृतिक प्रस्तुति :

इससे पूर्व साध्वी वर्या श्री संबुद्धयशाजी, महिला मंडल लाडनूं और स्थानीय समाज ने मधुर गीतों के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम के अंत में आचार्यश्री ने दिवंगत मंत्री मुनिश्री सुमेरमलजी 'स्वामी' (लाडनूं) के प्रयाण दिवस पर उनकी आत्मा की ऊर्ध्वगति के लिए मंगल कामना की। व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रमोद बैद ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

तृष्णा का कोई...

गृहस्थ जीवनः गृहस्थों के लिए परिग्रह अनिवार्य हो सकता है, किंतु उन्हें भी भोगों का अल्पीकरण (कमी) कर संतोष धारण करने का निरंतर प्रयास करना चाहिए।

प्रेक्षाध्यान और अन्य आध्यात्मिक गतिविधियाँः

मंगल प्रवचन के पश्चात पूज्य प्रवर ने चारित्रात्माओं की जिज्ञासाओं का समाधान किया। साथ ही, प्रेक्षाध्यान शिविर के साधकों को 'उपसंपदा' प्रदान कर उन्हें आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ने का संकल्प दिलाया। कार्यक्रम में साध्वी सूर्ययशाजी ने अपने विचार रखे।

साध्वी निर्मलयशाजी और साध्वी गवेषणा श्री जी ने अपनी सहवर्ती साध्वियों के साथ सुमधुर गीतों का संगान किया, जिससे वातावरण भक्तिमय हो गया। अंत में आचार्यश्री ने सभी को मंगल प्रेरणा प्रदान कर संयम के मार्ग पर चलने का आह्वान किया।

पृष्ठ 36 का शेष

मनुष्य जन्म की...

द्वितीय चरण : धनार्जन (आजीविका) के लिए।

तृतीय चरण : धर्मार्जन (आध्यात्मिक उन्नति) के लिए।

पूज्य प्रवर ने विशेष रूप से फरमाया कि धर्म के कार्य को वृद्धावस्था के भरोसे नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि उस समय शरीर कठिन परिश्रम के योग्य नहीं रहता।

खमत-खामणा से महका सुधर्मा सभा परिसर : प्रवचन के उपरांत आध्यात्मिक सौहार्द का दृश्य देखने को मिला। आचार्यश्री की अनुज्ञा से साध्वी राजीमतीजी ने संतवृंद से 'खमत-खामणा' (क्षमा याचना) की। इसके उत्तर में संतवृंद की ओर से मुनि धर्मरुचिजी ने साध्वी वृंद के प्रति मंगलकामनाएं व्यक्त कीं।

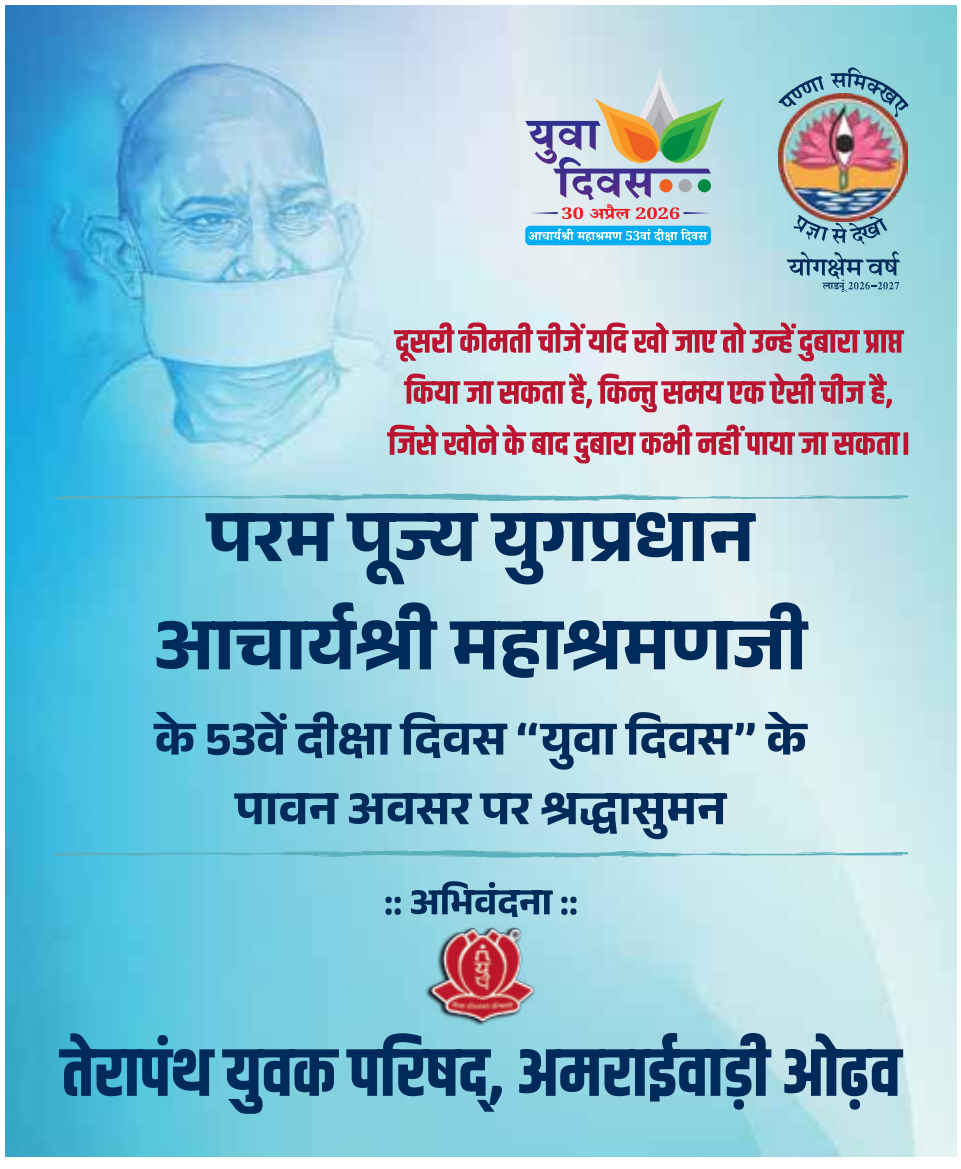

बोलती किताब

भगवान ने कहा

आध्यात्मिक सत्य और जीवन-दर्शन की प्रेरक वाणी

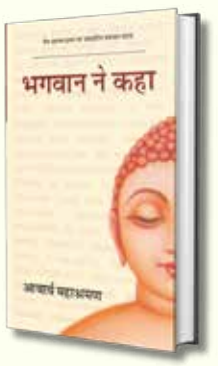

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की प्रेरणादायी वाणी से संकलित पुस्तक "भगवान ने कहा" जैन आध्यात्मिक परंपरा के मूल सिद्धांतों को सरल, स्पष्ट और प्रेरक रूप में प्रस्तुत करने वाली एक महत्त्वपूर्ण कृति है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक जैन आगम और तीर्थंकर भगवान की दिव्य वाणी में निहित जीवन-दर्शन को सहज भाषा में समझाने का प्रयास करती है। इसमें आध्यात्मिक चिंतन को व्यावहारिक जीवन से जोड़ते हुए ऐसे सूत्र प्रस्तुत किए गए हैं, जो मनुष्य को आत्मचिंतन, संयम और जागरूकता की ओर प्रेरित करते हैं।

मानव जीवन केवल बाहरी उपलब्धियों का मार्ग नहीं, बल्कि आत्मिक विकास की यात्रा भी है। जब मनुष्य अपने भीतर की चेतना को पहचानता है और जीवन के मूल्यों को समझता है, तभी वह सच्चे अर्थों में प्रगति की ओर बढ़ता है। आध्यात्मिक दृष्टि हमें यह सिखाती है कि जीवन में शांति, संतुलन और सद्भाव तभी संभव है, जब हमारे विचार, वचन और कर्म एक-दूसरे के साथ सामंजस्य में हों। जीवन में अनेक प्रकार के आकर्षण, संघर्ष और परिस्थितियाँ मनुष्य के मन को विचलित करती हैं। कभी मोह, कभी क्रोध, तो कभी अहंकार मनुष्य की सही सोच को धुंधला कर देते हैं। ऐसे समय में सही दृष्टि, विवेक और आत्म-जागरण का मार्ग अत्यंत आवश्यक हो जाता है। जब व्यक्ति अपने भीतर जागरूकता और आत्मसंयम को विकसित करता है, तब वह परिस्थितियों से घबराने के बजाय उन्हें समझने और संभालने की क्षमता प्राप्त करता है। यही आंतरिक जागरूकता मनुष्य को अपने विचारों को शुद्ध बनाने, अपने आचरण को संतुलित रखने और जीवन को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाने की प्रेरणा देती है।

आध्यात्मिक चिंतन का उद्देश्य केवल विचार देना नहीं, बल्कि जीवन को दिशा देना है। जब मनुष्य अपने जीवन में आत्मानुशासन, साधना और सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाता है, तब उसका व्यक्तित्व अधिक परिपक्व और शांत बनता है। यही जीवन-दृष्टि उसे बाहरी उलझनों से ऊपर उठाकर आंतरिक संतोष और आत्मिक आनंद की अनुभूति कराती है। ऐसी प्रेरणाएँ मनुष्य को अपने अस्तित्व के गहरे अर्थ को समझने और जीवन को सार्थक बनाने की दिशा में आगे बढ़ने का मार्ग दिखाती हैं।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

ज्ञानशाला : दायित्व-आवंटन समारोह आयोजित

सिकंदराबाद।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के पावन निर्देशन में श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिकंदराबाद के तत्वावधान में ज्ञानशाला के नव कार्य वर्ष का शुभारंभ हो चुका है। ज्ञानशाला प्रकोष्ठ, महासभा द्वारा आंचलिक संयोजकों के द्वि वर्षीय कार्यकाल की नियुक्तियों के साथ ही नव कार्य वर्ष की शुरुआत हो गई। तेलंगाना-आंध्रा के प्रभारी के रूप में आगामी कार्यकाल के लिए सरोज लोढ़ा को वर्ष 2026-28 के लिए आंचलिक संयोजक नियुक्त किया गया। आंचलिक सह संयोजक के रूप में यशोदा कोठारी का चयन किया गया। तेलंगाना के क्षेत्रीय संयोजक के रूप में संगीता गोलछा की पुनः नियुक्ति की गई। कौन बनेगा आंचलिक संयोजक इस बार -एक रोचक प्रस्तुति में वीनू नाहटा ने फास्टेस्ट फिंगर फर्स्ट राउंड से हॉट सीट पर पधारी सरोज लोढ़ा व यशोदा कोठारी से कुछ प्रश्नों के साथ केबीसी की छोटी सी एक झलक दिखलाई।

थोड़े भौतिक लाभ के लिए आत्मिक खजाना न लुटाएं : आचार्यश्री महाश्रमण

साधना और तपस्या को भौतिक कामनाओं की भेंट न चढ़ाएं

लाडनूं।
15 अप्रैल, 2026

> कौड़ियों के भाव न बेचें जन्मों की साधना
> -आचार्यश्री महाश्रमण

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता, शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी के पावन सान्निध्य में जैन विश्व भारती के 'योगक्षेम वर्ष' के कार्यक्रम पूरी दिव्यता के साथ गतिमान हैं। सुधर्मा सभा में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त मंगल महामंत्र के साथ हुआ। तत्पश्चात साध्वीवृंद ने सुमधुर स्वर में प्रज्ञागीत का संगान किया और आचार्यश्री ने उपस्थित जनमेदनी को ध्यान का प्रयोग करवाया।

'थोड़े के लिए - बहुत मत खोओ':

मुख्य विषय पर पावन पाथेय प्रदान करते हुए युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने फरमाया कि थोड़े से लाभ के लिए बहुत कुछ गँवा देना गहरी नासमझी है। उन्होंने जीवन में विवेक और चातुर्य की आवश्यकता पर बल देते हुए कहाः 'मनुष्य को वही कार्य करना चाहिए जिसमें केवल लाभ हो, या फिर लाभ अधिक और नुकसान कम हो। लेकिन जहाँ लाभ नाममात्र का हो और नुकसान बहुत बड़ा हो, वह कार्य बुद्धिमानी नहीं है।

साधना और भौतिक कामना का द्वंद्व :

आचार्यश्री ने साधना पथ का उदाहरण देते हुए समझाया कि यदि कोई साधक वर्षों की तपस्या और महाव्रतों के पालन के पश्चात, किसी भौतिक सुख (जैसे चक्रवर्ती या वासुदेव बनने की कामना) की इच्छा कर 'निदान' कर लेता है, तो वह अपनी अनमोल साधना को कौड़ियों के भाव बेच देता है। यह आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत बड़ा नुकसान है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र की सुरक्षाः प्रवचन के अंत में आचार्यप्रवर ने संदेश प्रदान किया कि आत्मा के कल्याण के लिए ज्ञान, दर्शन और चारित्र रूपी खजाना सुरक्षित रहना चाहिए। थोड़े से भौतिक सुखों के लोभ में आकर इस आत्मिक संपदा को लुटाना विचार की मूढ़ता है। अतः हर व्यक्ति को अपनी समझदारी और बुद्धिमत्ता को आध्यात्मिक उन्नति में लगाना चाहिए।

अणुव्रत पर विशेष उद्बोधन :

मुख्य प्रवचन के पश्चात मुख्य मुनिश्री महावीरकुमारजी ने अणुव्रत के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अणुव्रत की प्रासंगिकता बताते हुए उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया।

बिना आज्ञा तिनका भी न उठाना ही सच्चा अचौर्य महाव्रत है।

प्रामाणिकता ही अचौर्य महाव्रत की आत्मा : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
16 अप्रैल, 2026

> मर्यादा की डोर और अनुशासन का पथ, यही है तेरापंथ
> -आचार्यश्री महाश्रमण

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने अचौर्य महाव्रत की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि एक विद्वान साधु का जीवन पांच महाव्रतों—अहिंसा, सत्य, अस्तेय (अचौर्य), ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह के प्रति सजग रहना चाहिए। पूज्य प्रवर ने विशेष बल देते हुए फरमाया कि साधु के अवचेतन में यह भाव स्थिर होना चाहिए कि उसका हर आचार और संस्कार साधुता से ओत-प्रोत हो।

आचार्य भिक्षु का 300वां जन्म वर्ष :

एक पावन पुनरावृत्ति सुधर्मा सभा में पावन देशना प्रदान करते हुए आचार्यप्रवर ने फरमाया कि वर्तमान में तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य अनुशास्ता आचार्य भिक्षु का 300वां जन्म वर्ष 'भिक्षु चेतना वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि यह सौभाग्य की पुनरावृत्ति है, जो पूर्व में आचार्य तुलसी के समय भी हुई थी। आचार्य भिक्षु के तात्विक साहित्य का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि छः काय के जीवों को अभयदान देना ही वास्तविक धर्म है।

अचौर्य की कसौटी : आज्ञा और मर्यादा :

अनुशासन पर्व पर अमृत देशना फरमाते हुए युगप्रधान आचार्यश्री ने फरमाया कि साधु का चित्त प्रामाणिकता से भावित रहना चाहिए। उन्होंने अचौर्य महाव्रत को स्पष्ट करते हुए कहाः 'साधु की साधना इतनी प्रबल हो कि वह बिना पूछे किसी वस्तु को ग्रहण न करे। किसी के घर ठहरना हो या औषधि सेवा लेनी हो, हर कार्य आज्ञा और मर्यादा के अधीन होना चाहिए। अचौर्य की असली आत्मा उसकी प्रामाणिकता में ही बसती है।'

हाजरी वाचन और चारित्रिक निर्मलता की प्रेरणा :

चतुर्दशी के अवसर पर आचार्यश्री ने 'हाजरी' और 'मर्यादा पत्र' का वाचन किया। उन्होंने साधु-साध्वियों, समणियों को प्रेरित करते हुए कहा कि भीषण गर्मी को समता भाव से सहें। नंगे पांव चलने और खान-पान में जमींकंद के त्याग जैसे नियमों के प्रति जागरूकता ही निर्जरा का मार्ग प्रशस्त करती है। उन्होंने प्रतिक्रमण को पूर्ण सजगता के साथ करने का निर्देश दिया।

लेख पत्र का उच्चारण और मंगल कृपा :

गुरुदेव की आज्ञा से साध्वी पदमप्रभाजी ने लेख पत्र का उच्चावरण किया, जिस पर प्रसन्न होकर आचार्यश्री ने उन्हें सात कल्यायक बख्शीश स्वरूप प्रदान किए।

इसके पश्चात उपस्थित समस्त चारित्रात्माओं ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर सामूहिक रूप से लेख पत्र का उच्चारण किया और संयम पथ पर दृढ़ रहने का संकल्प दोहराया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
हे प्रभो! यह तेरापंथ
27 अप्रैल - 03 मई 2026

मनुष्य जन्म की 'मूल पूंजी' को पापों में न गंवाएं : आचार्यश्री महाश्रमण

जीवन के प्रथम भाग में विद्या, दूसरे में धन और तीसरे में धर्मार्जन है आवश्यक

लाडनूं।
17 अप्रैल, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के अखण्ड परिव्राजक आचार्यश्री महाश्रमणजी ने उत्तरज्झयणाणि आगम के माध्यम से जीवन की सार्थकता का बोध कराया। पूज्य प्रवर ने फरमाया कि मनुष्य जन्म एक ऐसी मूल पूंजी है, जिसे पाकर भी यदि व्यक्ति व्यसनों और कुसंगति में समय नष्ट करता है, तो वह अपनी पूंजी को पूरी तरह खो देता है। बुद्धिमत्ता इसी में है कि हम धर्म और तपस्या के माध्यम से इस जन्म को देवगति और मोक्ष की ओर ले जाएं।

आप किस श्रेणी में हैं? स्वयं चिंतन करें :

आचार्यश्री ने मनुष्य की तीन श्रेणियों का वर्णन करते हुए चतुर्विध धर्मसंघ को चिंतन की प्रेरणा दीः

पूंजी गंवाने वाला : जो पाप और व्यसनों में रहकर नरक या तिर्यंच गति को प्राप्त होता है।

स्थिर रहने वाला : जो न अधिक पाप करता है न धर्म, वह पुनः मनुष्य गति में आता है।

पूंजी बढ़ाने वालाः जो साधुत्व या श्रेष्ठ श्रावक जीवन अपनाकर धर्म की कमाई करता है और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है।

साधुत्व और सेवाः धर्म की असली कमाई :

साधु और समणी वृंद को संबोधित करते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि हमें जो संयमित जीवन मिला है, वह बहुत ऊँची भूमिका है। द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के अनुसार स्वाध्याय, तपस्या और वृद्ध-रोगी सेवा में तत्पर रहना ही असली साधना है। उन्होंने सरलता, क्षमा, आर्जव और मार्दव जैसे गुणों को जीवन में उतारने पर बल दिया।

गृहस्थों के लिए जीवन का चतुर्थांश सूत्र :

गृहस्थों को मार्गदर्शन देते हुए आचार्यश्री ने जीवन के तीन महत्वपूर्ण चरणों को रेखांकित कियाः

प्रथम 25 वर्ष : विद्यार्जन (ज्ञान की प्राप्ति) के लिए। (शेष पेज 34 पर)

> वृद्धावस्था के भरोसे न बैठें, अभी से करें धर्म की कमाई
> -आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमणजी योगक्षेम चित्रमय झलकियां

सम्पादकीय

वैराग्य की पूर्णता और युवा शक्ति का संकल्प

सरदारशहर से शुरू हुई, वैराग्य की वो पावन धारा,
तुलसी–महाप्रज्ञ के आशीष से, महका शासन सारा।
भिक्षु की पावन मर्यादा, जिसकी सांसों में बस्ती है,
ग्यारहवें गुरु की छत्रछाया में, सुरक्षित संघ की हस्ती है।

सादर जय जिनेंद्र,

हमारा मन उस महान यात्रा के प्रति कृतज्ञता से भर उठा है, जिसकी शुरुआत सरदारशहर की गलियों में एक नौ वर्षीय बालक के 'मंथन' से हुई थी। मुखपृष्ठ पर अंकित वह तस्वीर केवल एक ऐतिहासिक क्षण नहीं है, बल्कि वह उस महान 'महासूर्य' के उदय की पूर्व संध्या है, जिसने आज तेरापंथ धर्मसंघ को अपनी धवल रश्मियों से आलोकित कर रखा है।

बालक मोहन का वह चिंतन, जो संसार के आकर्षण और संयम की कठिन डगर के बीच उपजा था, हमें सिखाता है कि सत्य की खोज आयु की मोहताज नहीं होती। जब उन्होंने आचार्य कालूगणी का स्मरण किया, तो उन्हें वह मार्ग मिला जिसने आगे चलकर आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जैसे महान युग–प्रधानों के सानिध्य में एक वटवृक्ष का रूप ले लिया। आज ग्यारहवें अधिनायक के रूप में आचार्य श्री महाश्रमण जी उसी भिक्षु शासन की मर्यादा को नई ऊँचाइयाँ दे रहे हैं।

हम तेरापंथ की युवा शक्ति का आह्वान करते हैं। आचार्यश्री का दीक्षा दिवस, जिसे हम 'युवा दिवस' के रूप में मनाते हैं, हमें यह संदेश देता है कि युवा ऊर्जा जब संयम और गुरु–भक्ति से जुड़ती है, तो वह केवल व्यक्ति का नहीं, बल्कि पूरे समाज का उद्धार करती है। मुनि सुमेरमल जी स्वामी द्वारा प्रदत्त वह दीक्षा आज एक वैश्विक अहिंसा यात्रा का आधार बनी है।

आचार्य श्री महाश्रमण जी का दीक्षा दिवस महज एक तिथि नहीं है, यह 'युवा दिवस' के रूप में संकल्प की शक्ति का उत्सव है। इस महान यात्रा ने हमें सिखाया है कि यदि इरादे फौलादी हों, तो नौ वर्ष की आयु में लिया गया निर्णय भी युग–परिवर्तनकारी हो सकता है।

आज का युवा, जो अक्सर सूचनाओं के शोर में अपने पथ को लेकर भ्रमित रहता है, उसके लिए आचार्य प्रवर का जीवन एक 'प्रकाश स्तंभ' है। आचार्य श्री भिक्षु ने जिस अनुशासन और मर्यादा की नींव रखी थी, उसे आचार्य श्री अपनी अहिंसा यात्रा और धवल सेना के माध्यम से सात समंदर पार तक पहुँचा रहे हैं।

इस विशेषांक के माध्यम से हमारा उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि पाठकों और विशेषकर युवा शक्ति के भीतर उस 'मोहन' को जगाना है जो सत्य की खोज में है। आइए, इस युवा दिवस पर हम केवल उत्सव न मनाएँ, बल्कि अपने भीतर संयम, अनुशासन और मानवता के प्रति सेवा का एक बीज बोएँ।

कार्यकारी संपादक...

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।